VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

आर्थिक समीक्षा 2022-23

DELHI JAIPUR HYDERABAD BHOPAL GUWAHATI RANCHI LUCKNOW PUNE AHMEDABAD CHANDIGARH PRAYAGRAJ

WWW.VISIONIAS.IN 8468022022 , 9019066066

आर्थिक समीक्षा का सारांश
2022-23

विषय सूची

अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति: पूर्ण सुधार (State of the Economy: Recovery Complete)..... 5

अध्याय 2: भारत का मध्यावधि विकास परिदृश्य: आशापूर्ण दृष्टि और उम्मीद के साथ (India's Medium Term Growth Outlook: with Optimism and Hope)..... 15

अध्याय 3: राजकोषीय विकास: राजस्व सुधार (Fiscal Developments: Revenue Relish) 25

अध्याय 4: मौद्रिक प्रबंधन और वित्तीय मध्यस्थता: एक अच्छा वर्ष (Monetary Management And Financial Intermediation: A Good Year) 35

अध्याय 5: कीमतें और मुद्रास्फीति: नाजुक परिस्थितियों पर कामयाबी (Prices and Inflation: Successful Tight-Rope Walking)..... 43

अध्याय 6: सामाजिक अवसंरचना और रोजगार: व्यापक व्यवस्था (Social Infrastructure and Employment: Big Tent)..... 49

अध्याय 7: जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण: भविष्य का सामना करने की तैयारी (Climate Change and Environment: Preparing to Face the Future) 62

अध्याय 8: कृषि एवं खाद्य प्रबंधन: खाद्य सुरक्षा से पोषण सुरक्षा तक (Agriculture and Food Management: From Food Security to Nutritional Security)..... 71

अध्याय 9: उद्योग: स्थायी विकास (Industry: Steady Recovery)..... 79

अध्याय 10: सेवाएं: शक्ति का स्रोत (Services: Source Of Strength)..... 91

अध्याय 11: वैदेशिक क्षेत्र: सतर्क और आशावान (External Sector: Watchful and Hopeful) 98

अध्याय 12: भौतिक और डिजिटल आधारभूत संरचना: संभावित विकास को प्रोत्साहन (Physical and Digital Infrastructure: Lifting Potential Growth) 106

नोट
प्रिय अभ्यर्थियों, आर्थिक सर्वेक्षण को बेहतर तरीके से समझना जरूरी है। अतः आर्थिक सर्वेक्षण को अधिक व्यापक और आसान तरीके से समझने के लक्ष्य के साथ इस डॉक्यूमेंट में निम्नलिखित नए खंड शामिल किए गए हैं:

VISION IAS

	आर्थिक सर्वेक्षण को समझें: यह खंड, आर्थिक सर्वेक्षण क्या है और इसके महत्व का अवलोकन प्रदान करता है। यह आर्थिक सर्वेक्षण की आगे के विश्लेषणों के लिए मजबूत आधार प्रदान करता है।
	शब्दावली को जानें: यह खंड भाषा और कंटेंट को समझने में मदद करने के लिए आर्थिक सर्वेक्षण में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दावलियों और अवधारणाओं को स्पष्ट करता है।
	बजट में क्या कहा गया है?: यह खंड आर्थिक सर्वेक्षण और केंद्रीय बजट के बीच संबंधों का विश्लेषण तथा व्याख्या करता है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि कैसे यह सर्वेक्षण बजट के लिए व्यापक आर्थिक संदर्भ प्रदान करता है।
	क्विज़ और मुख्य परीक्षा के प्रश्न: प्रत्येक अध्याय को बेहतर तरीके से समझने और उसके महत्वपूर्ण बिंदुओं को याद रखने के लिए, अध्यायों के अंत में एक क्विज़ (MCQ) और मुख्य परीक्षा के प्रश्न जोड़े गए हैं। MCQ के उत्तर डॉक्यूमेंट के अंत में दिए गए हैं।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

₹ आर्थिक सर्वेक्षण को समझें

आर्थिक सर्वेक्षण क्या है?

यह **भारत के विकास पथ का व्यापक विश्लेषण** प्रस्तुत करता है। इसमें हमारे राष्ट्र के प्रति वैश्विक आशावाद को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें अवसंरचना पर ध्यान देने के साथ ही कृषि एवं उद्योग जैसे क्षेत्रकों में विकास और भविष्योन्मुखी क्षेत्रकों पर भी बल दिया गया है

इसे कौन तैयार करता है?

वित्त मंत्रालय MINISTRY OF FINANCE

- वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग **(DEA)** के **आर्थिक प्रभाग (Economic Division)** द्वारा,
- यह **मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) के मार्गदर्शन में** तैयार किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण बजट से कैसे संबंधित है?

प्रस्तुति और तैयारी

- यह **बजट प्रस्तुत किए जाने के एक दिन पहले** जारी किया जाता है।
- यह देश में वार्षिक आर्थिक विकास का सारांश प्रस्तुत करता है और अर्थव्यवस्था की लघु एवं मध्यम अवधि की संभावनाओं को रेखांकित करता है।
- आगामी वर्ष के बजट से पहले इसे संसद में पेश किया जाता है।

बजट के लिए नीतिगत परिप्रेक्ष्य

- **वित्त मंत्रालय के एक प्रमुख दस्तावेज** के रूप में, आर्थिक सर्वेक्षण **अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए विस्तृत सांख्यिकीय डेटा** प्रदान करता है।
- यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आधिकारिक मार्गदर्शिका है और आम तौर पर यह केंद्रीय बजट के लिए नीतिगत परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

आर्थिक परिदृश्य

- आर्थिक सर्वेक्षण देश की आर्थिक प्रवृत्तियों को उजागर करता है। ये प्रवृत्तियां संसाधनों को जुटाने के प्रयासों और बजट में उनके आवंटन में वृद्धि को प्रेरित करती हैं।
- यह सर्वेक्षण **कृषि और औद्योगिक उत्पादन, बुनियादी ढांचे, रोजगार, वित्त की आपूर्ति, व्यापार, विदेशी मुद्रा भंडार और अन्य प्रासंगिक आर्थिक कारकों के रुझानों का विश्लेषण** करता है। ये सभी कारक बजट को प्रभावित करते हैं।

आर्थिक सर्वेक्षण 2021–22 का केंद्र बिंदु	VS	आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23 का केंद्र बिंदु
अत्यधिक अनिश्चितता की स्थिति में नीति निर्माण की कला और विज्ञान।		**भारतीय अर्थव्यवस्था का लचीलापन, इसके विकास स्तंभ और परिवर्तनकारी सुधारों से कमतर विकास–परिणाम।**
इसमें नीति निर्माण के लिए एक वैकल्पिक तरीका प्रदान किया गया, जिसमें **पारंपरिक रैखिक दृष्टिकोण (Waterfall approach) से आगे बढ़ त्वरित दृष्टिकोण (Agile approach)** को अपनाया गया था।		यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि अर्थव्यवस्था में **अस्थायी आघातों के कारण सरकार द्वारा किए गए परिवर्तनकारी सुधारों के बावजूद अपर्याप्त प्रतिफल** प्राप्त हुए हैं।
पारंपरिक रैखिक दृष्टिकोण में मुद्दे का **एक अग्रिम विश्लेषण, विस्तृत योजना–निर्माण और अंत में सूक्ष्मता से कार्यान्वयन** शामिल है।		हालांकि, वर्तमान दशक में, **मध्यम अवधि के मजबूत विकास स्तंभों की उपस्थिति** आशावाद और उम्मीद प्रदान करती है।
त्वरित दृष्टिकोण **फीडबैक लूप, वास्तविक परिणामों की रियल टाइम निगरानी, लचीली प्रतिक्रियाओं, सेफ़्टी–नेट बफ़र्स** पर आधारित है।		महामारी के इन वैश्विक आघातों और 2022 में **कमोडिटी की कीमतों में बढ़ोतरी के प्रभावों के कम होने के बाद, भारतीय अर्थव्यवस्था आने वाले दशक में तेजी से बढ़ने के लिए तैयार** है।

आर्थिक समीक्षा का सारांश

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

आपको इसे क्यों पढ़ना चाहिए?

यह **देश के आर्थिक कल्याण का एक समग्र परिप्रेक्ष्य** प्रदान करता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह **नागरिकों को अर्थव्यवस्था की स्थिति से परिचित कराता है** और उन्हें सरकार के **प्रमुख आर्थिक निर्णयों के बारे में सूचित** करता है। यह **भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रकों, उनके अंतर–संबंधों और संवृद्धि के चालकों का एक संक्षिप्त विवरण** देता है। इस तरह, यह अर्थव्यवस्था के सिंहावलोकन के साथ–साथ सामयिक और क्षेत्रीय विश्लेषण प्रदान करता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति का चित्रात्मक रूपण

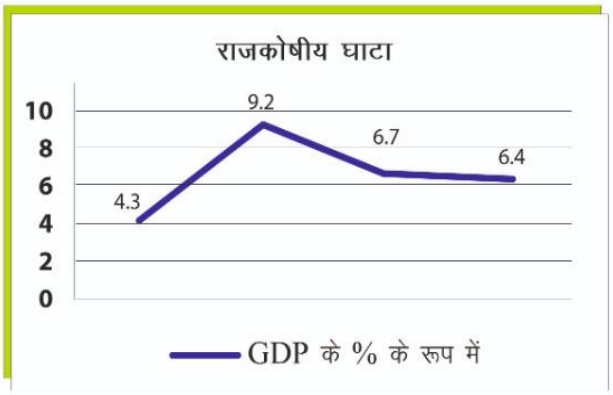

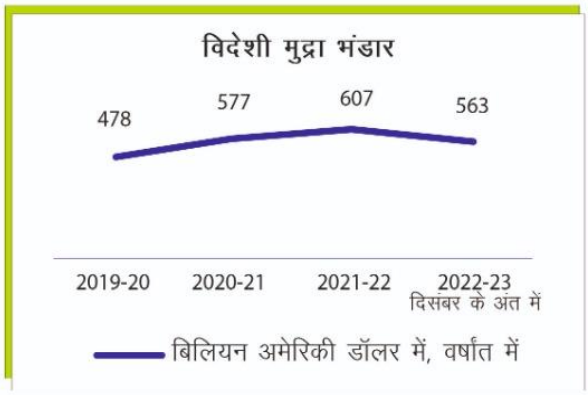

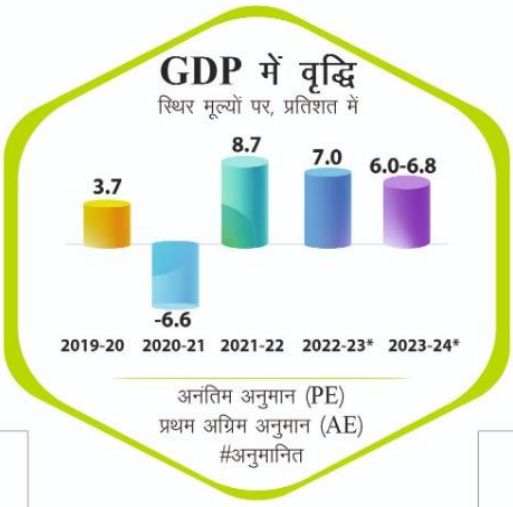

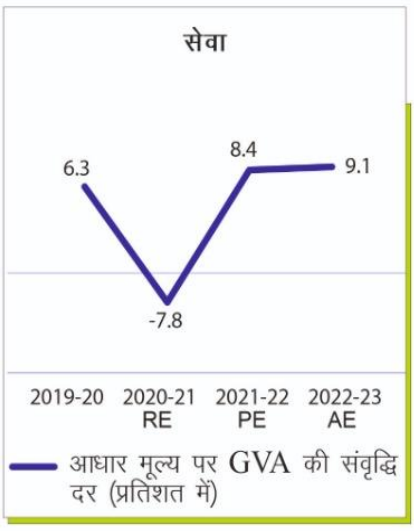

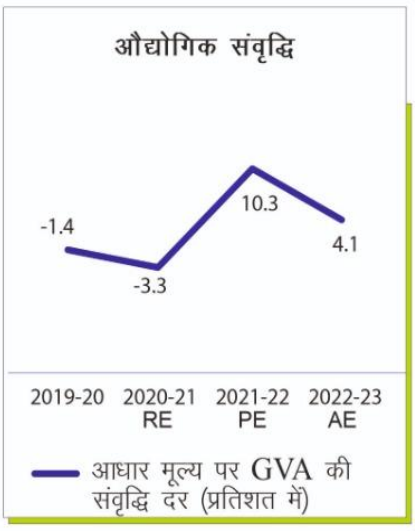

अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति: पूर्ण सुधार (State of the Economy: Recovery Complete)

परिचय

इस सहस्राब्दी के तीसरे दशक में **वैश्विक आर्थिक आघातों** ने विभिन्न आर्थिक चुनौतियां प्रस्तुत की हैं। ये चुनौतियां हैं- **मुद्रास्फीति का दबाव, अधिकांश मुद्राओं का मूल्यह्रास, चालू खाता घाटे का बढ़ना आदि।** ये चुनौतियां **वैश्विक संवृद्धि को धीमा** कर रही हैं। साथ ही ये चुनौतियां एक वित्तीय संक्रमण (Financial contagion) को जन्म दे सकती हैं जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से शुरू होकर पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले सकता है।

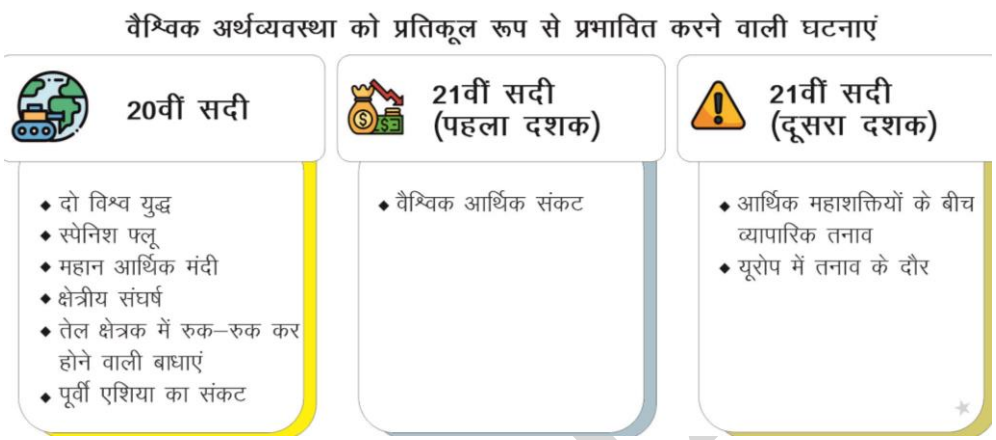

हालांकि, भारतीय अर्थव्यवस्था महामारी के दौर से जूझने के बाद आगे बढ़ती दिख रही है और वित्त वर्ष 2023 में भी **संवृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ने** के लिए तैयार है। वर्तमान में भारत के सामने मुद्रास्फीति, रुपये की कीमत में गिरावट और चालू खाता घाटे में वृद्धि आदि को नियंत्रित करने की भी चुनौती है। इन सबके बावजूद, दुनिया भर की एजेंसियों ने **वित्त वर्ष-23 में भारत को सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था** बताया है। साथ ही, ऐसा अनुमान है कि इस वित्त वर्ष में भारत की **संवृद्धि दर 6.5-7.0 प्रतिशत** रहेगी। ये आशावादी पूर्वानुमान भारतीय अर्थव्यवस्था के लचीलेपन के कारण दिखाई दे रहे हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था कुछ विशेष प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही है:

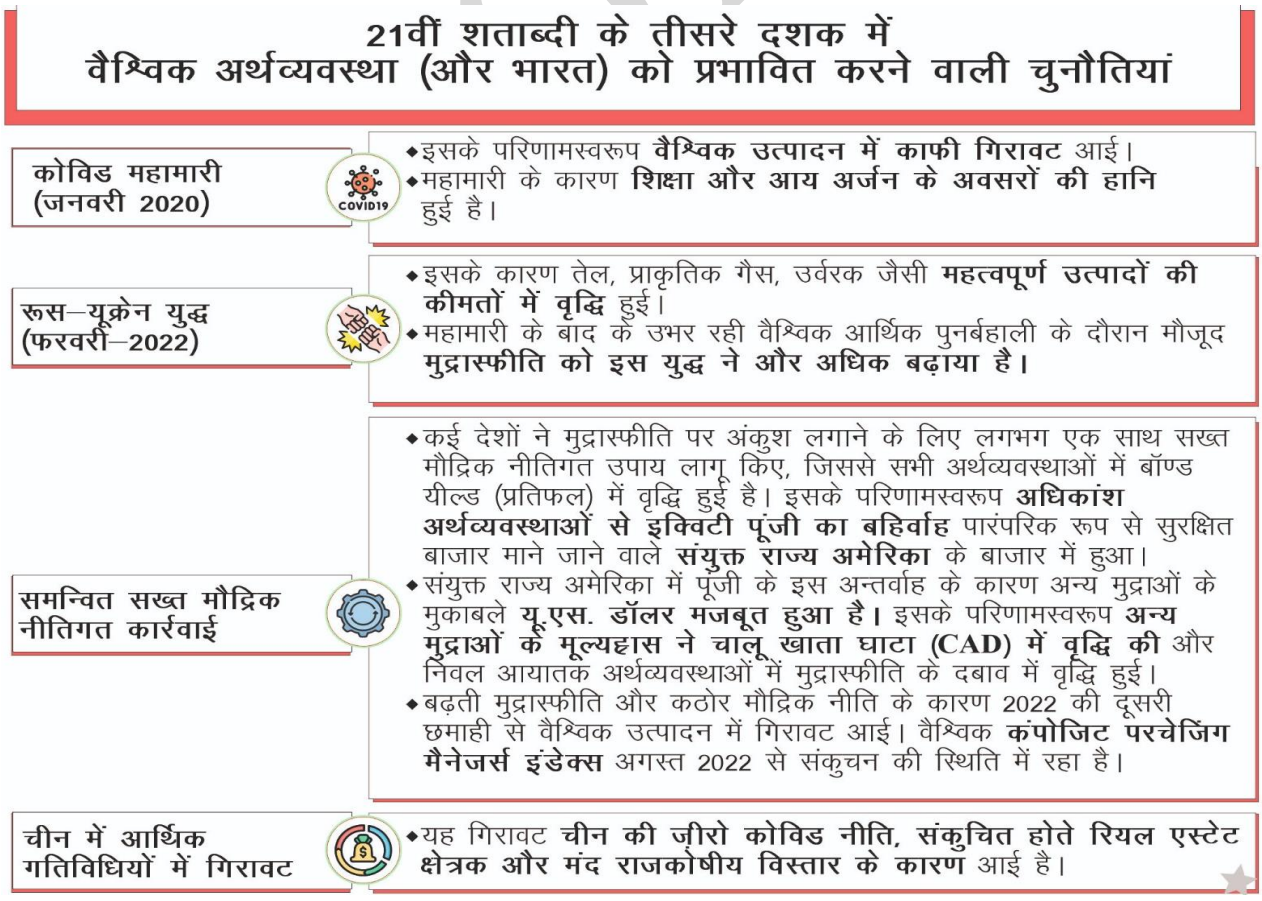

- **भावी मौद्रिक नीतियों में सख्ती, निजी और सरकारी ऋण संरचनाओं को प्रभावित** कर सकती है, जिससे वित्तीय संक्रमण का खतरा उत्पन्न हो सकता है।
    - वर्ष 2008 के वित्तीय संकट के बाद से **अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में गैर-वित्तीय ऋण बढ़े हैं।**
    - हालांकि, इस अवधि के दौरान **भारत के ऋण-भार में कमी** आई है। यह देश के **बैंकिंग क्षेत्र की बैलेंस शीट्स के बेहतर होने और कॉर्पोरेट क्षेत्र के ऋण बकायों में कमी लाने के प्रयासों के कारण** हुआ है।
- हालांकि, मुद्रास्फीति का दबाव कम हो रहा है लेकिन **वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में गिरावट का जोखिम** प्रभावी है।

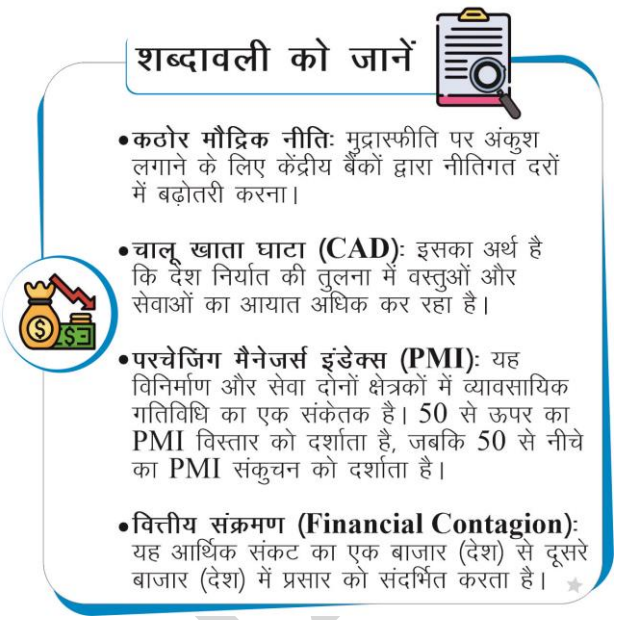

भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक आर्थिक (Macroeconomic) और संवृद्धि संबंधी चुनौतियां:

- **महामारी:** कोविड-महामारी के कारण वित्त वर्ष-21 में भारत की GDP में संकुचन हुआ था। हालांकि, ओमीक्रॉन वेरिएंट के प्रभावी होने के बावजूद भी वित्त वर्ष-22 में अर्थव्यवस्था में सुधार होना शुरू हो गया था।
    - कोविड की तीसरी लहर ने भारत की आर्थिक गतिविधियों को उतना प्रभावित नहीं किया, जितना पिछली लहरों ने किया था। स्थानीयकृत लॉकडाउन, तीव्र टीकाकरण कवरेज, हल्के लक्षणों और वायरस से जल्दी ठीक होने आदि के कारण आर्थिक नुकसान को कम करने में मदद मिली थी।
    - इसके परिणामस्वरूप, **वित्त वर्ष-22 का आउटपुट वित्त वर्ष-20 के पूर्व-महामारी स्तर से आगे निकल** गया। यह **भारतीय अर्थव्यवस्था की पूर्ण रिकवरी** और वित्त वर्ष-2023 के लिए बेहतर संवृद्धि की संभावनाओं को दर्शाता है।

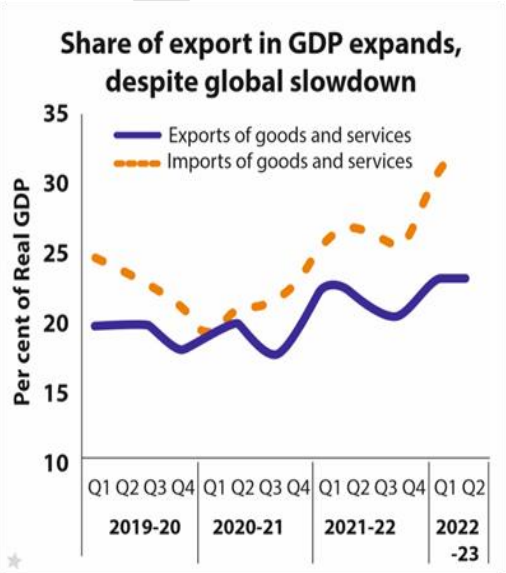

- **यूरोप में संघर्ष:** इससे **खुदरा मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई है और यह जनवरी 2022 से 10 महीनों के लिए RBI की लक्ष्य सीमा 6 प्रतिशत से ऊपर** रही है।
    - अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अलावा, **अत्यधिक गर्मी और बेमौसम बारिश जैसी स्थानीय मौसम की प्रतिकूल स्थितियों ने भी खाद्य कीमतों को उच्च-स्तर** पर बनाए रखा है।
    - सरकार ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए **उत्पाद और सीमा शुल्क में कटौती की तथा निर्यात को प्रतिबंधित** किया। साथ ही, RBI ने भी **रेपो दरों में वृद्धि की** और अतिरिक्त नकदी को वापस ले लिया।
- **मुद्रा का मूल्यह्रास:** हालांकि, रुपया दुनिया भर में बेहतर प्रदर्शन करने वाली मुद्राओं में से एक रहा है, लेकिन **अमेरिकी डॉलर की कीमत बढ़ने के कारण इसका मामूली मूल्यह्रास** हुआ है। इससे **चालू खाता घाटे (CAD) में वृद्धि हुई है** और घरेलू मुद्रास्फीति का दबाव भी बढ़ा है।
    - **वैश्विक जिंसों की उच्च कीमतों तथा भारत की संवृद्धि की गति** से CAD और बढ़ा है।
    - वित्त वर्ष-23 के लिए, भारत के पास CAD को कम करने और भारतीय रुपये में अस्थिरता का प्रबंधन करने के लिए विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करने हेतु **पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार है।**
- **मंद आर्थिक संवृद्धि:** 2021 का वर्ष अर्थव्यवस्थाओं के लिए महामारी से उबरने का समय था। इस दौरान विश्व व्यापार में वृद्धि हुई, जिसका भारत भी लाभार्थी रहा था।
    - **आक्रामक और समकालिकपूर्ण तरीके से मौद्रिक सख्ती लागू करने के कारण** वैश्विक आर्थिक संवृद्धि मंद होने लगी थी।

- वैश्विक संवृद्धि की धीमी गति, भू-राजनीतिक संघर्ष, मुद्रास्फीति का सतत दबाव तथा कमजोर मांग के कारण वित्त वर्ष-23 एवं वित्त वर्ष-24 में **वैश्विक व्यापार के और अधिक दबावग्रस्त होने की संभावना है।**

भारत का आर्थिक लचीलापन और संवृद्धि के संचालक

- **आर्थिक लचीलापन:** कई एजेंसियों ने वित्त वर्ष-23 के लिए अपने पूर्वानुमान में संशोधन कर भारतीय अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर के कम रहने की संभावना व्यक्त की है। इसके लिए उत्तरदायी कारण निम्नलिखित हैं।
  - RBI द्वारा **सख्त मौद्रिक नीति लागू करना,**
  - **CAD में बढ़ोतरी होना, और**
  - **निर्यात में स्थिर वृद्धि** होना।

उपर्युक्त सभी **कारण यूरोप में भू-राजनीतिक संघर्ष के परिणाम** हैं।

शब्दावली को जानें

- **आधार प्रभाव (Base Effect):** संवृद्धि और मुद्रास्फीति जैसे डेटा पॉइंट्स की गणना हमेशा एक आधार (वर्ष या माह) के संदर्भ में की जाती है। दो डेटा पॉइंट्स के मध्य तुलना हेतु अलग संदर्भ आधार चुनने के बाद परिणामों में देखे जाने वाले प्रभाव को आधार प्रभाव कहते हैं।

- राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन (NSO) के अग्रिम अनुमानों सहित भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए जारी किए गए पूर्वानुमान 6.5-7% की सीमा में हैं। यह पूर्वानुमान लगभग सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं से अधिक हैं।
  - **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** का भी यह अनुमान है कि **भारत 2022 में तेजी से बढ़ रही शीर्ष दो महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में से एक** होगा।
  - आधार प्रभाव (Base Effect) के लाभ को शामिल किए बिना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए ऐसे अनुमान **भारत के अंतर्निहित आर्थिक लचीलेपन तथा अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के संचालकों की पुनर्प्राप्ति, पुनर्नवीनीकरण और पुनः सक्रिय करने की इसकी क्षमता** को दर्शाते हैं।
- **घरेलू प्रोत्साहन:** भारत का आर्थिक लचीलापन बाह्य प्रोत्साहन (निर्यात वृद्धि) की बजाय **संवृद्धि के लिए घरेलू प्रोत्साहन (घरेलू उपभोग)** के माध्यम से प्रकट होता है।
  - प्रारंभ में, **विनिर्माण और निवेश गतिविधियों ने निर्यात में वृद्धि के कारण गति प्राप्त की थी।** हालांकि, जब तक निर्यात वृद्धि में कमी आई, **तब तक घरेलू उपभोग में वृद्धि,** भारत की अर्थव्यवस्था की संवृद्धि को आगे ले जाने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम हो गई थी।
  - वित्त वर्ष 2023 की दूसरी तिमाही में **सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में निजी उपभोग 58.4% रहा।** यह 2013-14 के बाद के सभी वर्षों की दूसरी तिमाही में सबसे अधिक है। यह **व्यापार, होटल और परिवहन जैसी संपर्क गहन सेवाओं की बहाली** का परिणाम था।
- **टीकाकरण कवरेज:** भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण कवरेज के कारण, संपर्क आधारित सेवा प्रदाताओं ने जल्द ही लाभप्रद व्यवसाय का अनुभव किया और उपभोक्ताओं के पक्ष में माहौल को बनाए रखने में योगदान दिया।
  - इसलिए, सार्वभौमिक टीकाकरण कवरेज ने न केवल जीवन बचाया बल्कि अर्थव्यवस्था की बहाली और विकास में भी योगदान दिया।

शब्दावली को जानें

- **पेंट—अप डिमांड:** यह उस स्थिति को संदर्भित करता है, जहां किसी सेवा या उत्पाद की मांग असामान्य रूप से मजबूत होती है। यह आम तौर खर्च में कटौती या मंदी की अवधि के बाद आम जनता की ओर से पुनः खर्च में वृद्धि करने की प्रवृत्ति है।

- **दबी हुई मांग:** महामारी के कारण मांग में गिरावट दर्ज की गई थी। इसमें पुनः उभार के कारण घरेलू खपत में भी उछाल देखा गया।
  - यह व्यक्तिगत ऋणों में तीव्र वृद्धि और बेहतर माहौल से स्पष्ट है। यह आवासन बाजार (Housing Market) में भी परिलक्षित होता है जैसा कि आवास ऋण की मांग में वृद्धि, नए आवासों की संख्या में गिरावट आदि में देखा गया है।
- **पूंजीगत व्यय संबंधी घटनाक्रम:** केंद्र सरकार और उसके सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों द्वारा पूंजीगत बजट (कैपेक्स) में वृद्धि के कारण वित्त वर्ष 23 में विनिर्माण-गतिविधियों में काफी वृद्धि हुई है।
  - राज्यों के पास एक बड़ा पूंजीगत बजट उपलब्ध है, जो पूंजीगत कार्यों के लिए केंद्र की अनुदान सहायता और 50 वर्षों में चुकाने योग्य ब्याज मुक्त ऋण द्वारा समर्थित है।

VISION IAS

- **पूंजीगत व्यय पर जोर**: केंद्र सरकार ने पिछले दो बजटों में **पूंजीगत व्यय पर जोर दिया था।** यह कदम रणनीतिक उपायों का हिस्सा था। इसका उद्देश्य गैर-रणनीतिक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों से छुटकारा पाना (विनिवेश) और सार्वजनिक क्षेत्र की संपत्तियों को निष्क्रिय करके एक आर्थिक परिदृश्य में निजी निवेश में क्राउडिंग-इन प्रभाव लागू करना था। **पूंजीगत व्यय पर जोर** (कैपेक्स थ्रस्ट) को निम्नलिखित द्वारा समर्थन प्रदान किया गया था:

  - वित्त वर्ष 23 में पूंजीगत बजट में वृद्धि और इसके व्यय की उच्च दर।
  - प्रत्यक्ष कर संग्रह और जी.एस.टी. संग्रह में वृद्धि, बजटीय राजकोषीय घाटे के भीतर पूंजीगत बजट का पूर्ण व्यय सुनिश्चित करना।
  - वित्त वर्ष 22 की चौथी तिमाही से निजी क्षेत्र के निवेश में तेजी।
- **मजबूत कॉर्पोरेट बैलेंस शीट:** हालांकि कंपनियों के निवेश/ विनिर्माण गतिविधियों में सुधार के लिए निर्यात मांग में वृद्धि, उपभोग में वृद्धि और सार्वजनिक पूंजीगत व्यय उत्तरदायी रहे, लेकिन कंपनियों की मजबूत बैलेंस शीट ने भी प्रमुख भूमिका निभाई है।

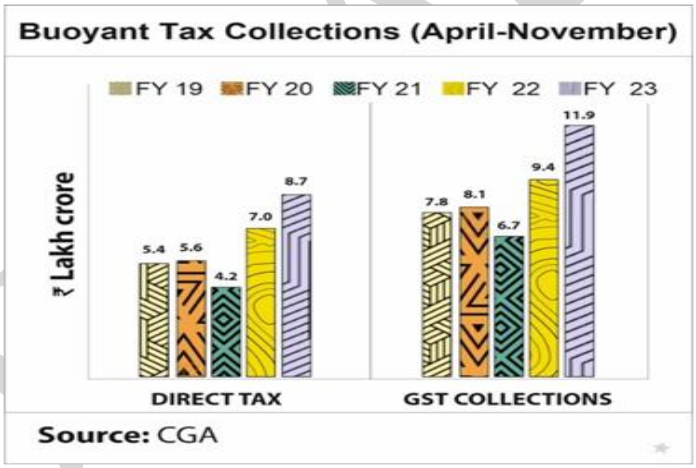

  - बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट (BIS) के आंकड़ों के अनुसार, भारतीय गैर-वित्तीय निजी क्षेत्र के ऋण और गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट ऋण में सकल घरेलू उत्पाद की हिस्सेदारी के रूप में लगभग 30 प्रतिशत अंकों की गिरावट आई है।
  - ऋण में इस तरह की गिरावट ने ब्याज लागत में वृद्धि को सीमित कर दिया। इसने लॉकडाउन के दौरान ओवरहेड्स पर संभावित बचत के साथ-साथ उच्च लाभ द्वारा कॉर्पोरेट बैलेंस शीट की हालिया मजबूती में योगदान दिया।
  - एक्सिस बैंक बिजनेस एंड इकनॉमिक रिसर्च के अनुसार, बिजली, इस्पात, रसायन, ऑटो और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रों में भारी निवेश किया गया। इससे वित्त वर्ष 23 की पहली छमाही में कॉर्पोरेट क्षेत्र द्वारा किया जाने वाला पूंजीगत व्यय बढ़कर ₹3.3 लाख करोड़ हो गया है।
- **बैंकिंग क्षेत्र की क्षमता:** भारत में बैंकिंग क्षेत्र ने ऋण की बढ़ी हुई मांग को पूरा किया है।

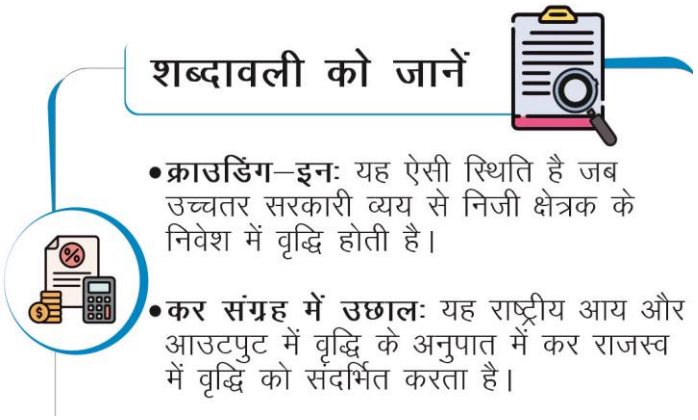

  - वित्त वर्ष 22 की चौथी तिमाही से वर्ष-दर-वर्ष ऋण वृद्धि दोहरे अंकों में पहुंच गई है। यह अधिकांश क्षेत्रों में बढ़ रही है।
  - जनवरी-नवंबर 2022 के दौरान MSME क्षेत्र में ऋण वृद्धि 30.5% से अधिक रही। यह केंद्र सरकार की विस्तारित इमरजेंसी क्रेडिट लिंक्ड गारंटी स्कीम (ECLGS) के समर्थन से संभव हुआ।
  - बैंकिंग क्षेत्र द्वारा ऋण की आपूर्ति में वृद्धि उनके बेहतर वित्तीय स्थिति के कारण संभव हुई है। यह भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (IBBI) द्वारा त्वरित समाधान के लिए एन.पी.ए. की फास्ट-ट्रैकिंग और बजटीय सहायता द्वारा PSB के पूंजीकरण का परिणाम है।

- कॉर्पोरेट बॉण्ड पर बढ़ते प्रतिलाभ और बाहरी वाणिज्यिक उधार (ECB) की उच्च ब्याज दर/ हेजिंग लागत ने वित्त वर्ष 23 में ऋण वित्तपोषण के लिए इन साधनों को कम आकर्षक बना दिया है। इस दौरान बैंकों की वित्तीय क्षमता ने उन्हें ऋण का आकर्षक स्रोत बना दिया है।

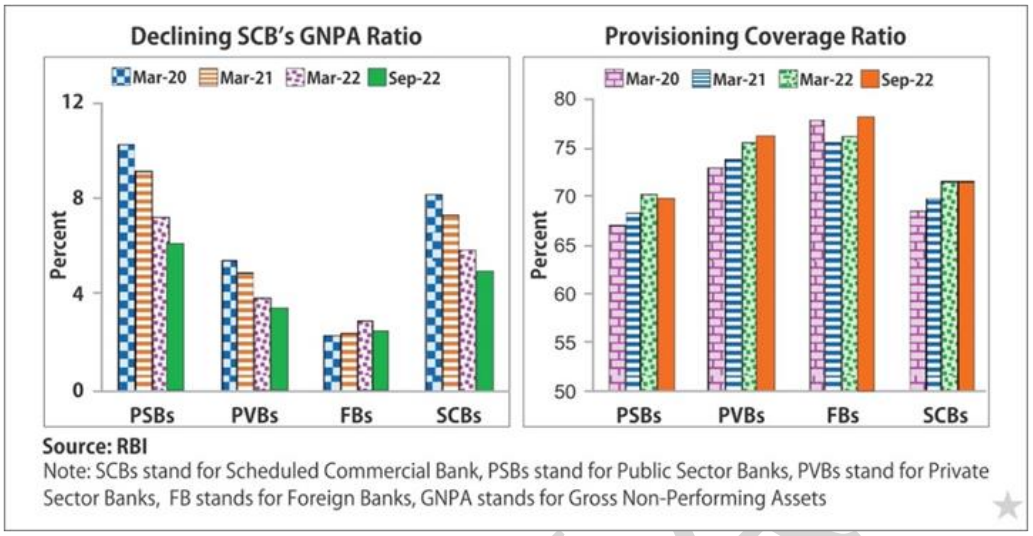

Source: RBI
Note: SCBs stand for Scheduled Commercial Bank, PSBs stand for Public Sector Banks, PVBs stand for Private Sector Banks, FB stands for Foreign Banks, GNPA stands for Gross Non-Performing Assets

- **मुद्रास्फीति:** RBI ने वित्त वर्ष 23 में हेडलाइन मुद्रास्फीति 6.8% (6% के लक्ष्य सीमा से अधिक) पर होने का अनुमान लगाया है, लेकिन यह निजी खपत को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है। साथ ही, यह अनुमान इतना भी कम नहीं है कि निवेश करने के उत्साह को कमजोर कर सके।
  - मध्यम रूप से उच्च मुद्रास्फीति ने भारत में मुद्रास्फीति संबंधी प्रत्याशाओं में स्थिरता सुनिश्चित की है। इस स्थिरता ने कीमतों के कारण मांग और संवृद्धि में आने वाली कमी को रोका है।
  - मुद्रास्फीति में गिरावट के साथ, **घरेलू ऋण की ब्याज दर में भी गिरावट आने की संभावना** है। इससे कॉरपोरेट्स और खुदरा उधारकर्ताओं द्वारा ऋण की मांग में और वृद्धि होगी।

शब्दावली को जानें
- **बाह्य वाणिज्यिक उधारी (ECB):** यह अनिवासी उधारदाताओं से प्राप्त वाणिज्यिक ऋणों को संदर्भित करता है।

भारत की समावेशी संवृद्धि

- **संवृद्धि तब समावेशी होती है जब यह रोजगार पैदा करती है।**
  - आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) में रोजगार के स्तर में वृद्धि दिखाई देती है। इसके अनुसार 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों के लिए **शहरी बेरोजगारी दर वित्त वर्ष 2023 की दूसरी तिमाही में एक साल पहले के 9.8% से घटकर 7.2%** हो गई।
  - **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में भी सुधार** हुआ है, जो महामारी जनित मंदी से अर्थव्यवस्था के उबरने का संकेत देता है।
  - निर्यात में बढ़ोतरी, कम हुई मांग के मजबूती से उभरने और तेजी से किए गए पूंजीगत व्यय के कारण रोजगार सृजन में वृद्धि हुई है।

शब्दावली को जानें
- **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR):** इसे जनसंख्या में श्रम बल में शामिल व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसमें **कार्यरत या काम की तलाश में या काम के लिए उपलब्ध व्यक्ति** शामिल होते हैं।

  - निर्यात में वृद्धि स्थिर है और दबी हुई मांग के उभरने की अवधि भी सीमित है। ऐसे में, **वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुधार होने तक रोजगार सृजन के लिए पूंजीगत व्यय में वृद्धि** आवश्यक है।
- वित्त वर्ष 21 में घोषित की गई इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम (ECLGS) ने महामारी से उपजे वित्तीय संकट से MSMEs को बचाया।
  - CIBIL रिपोर्ट के अनुसार ECLGS का लाभ उठाने वाले 83% उधारकर्ता सूक्ष्म उद्यम थे।

- छोटे व्यवसायों के वित्तीय लचीलेपन और MSMEs हेतु सरकारी पहलों की प्रभावशीलता को MSMEs द्वारा भुगतान किए गए GST में वृद्धि के रूप में देखा जा सकता है। MSMEs के GST संग्रह ने वित्त वर्ष 20 के पूर्व-महामारी स्तर को पार कर लिया है।

- मनरेगा के अंतर्गत किसी भी अन्य श्रेणी की तुलना में **"व्यक्तिगत भूमि पर कार्य" श्रेणी (वित्त वर्ष 22 में 60% हिस्सा) में अधिक संपत्ति का सृजन** दर्ज किया गया है।
  - यह इंगित करता है कि दैनिक मजदूरी रोजगार पैदा करने के अलावा, **मनरेगा व्यक्तिगत परिवारों के लिए उनकी आय के स्रोतों में विविधता लाने और उनकी पूरक आय बढ़ाने के लिए संपत्ति भी सृजित कर रहा** है।

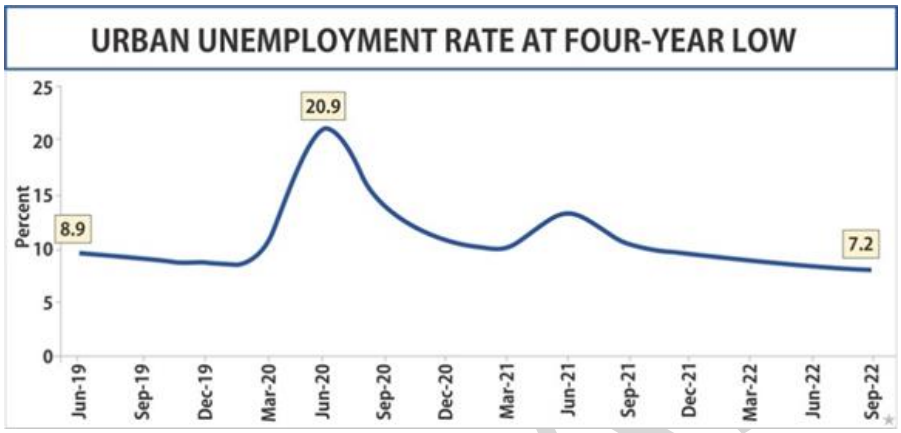

- पीएम-किसान और पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना जैसी योजनाओं ने देश में गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
  - संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की जुलाई 2022 की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में हाल ही के मुद्रास्फीति के चरण के दौरान बेहतर तरीके से लक्षित समर्थन के कारण गरीबी का कम प्रभाव पड़ेगा।
- भारत में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) वित्त वर्ष 2016 से वित्त वर्ष 2020 तक ग्रामीण कल्याण के बेहतर संकेतक दर्शाता है, जिसमें लिंग, प्रजनन दर, घरेलू सुविधाओं और महिला सशक्तीकरण जैसे पहलुओं को शामिल किया गया है।
  - सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के मामले में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह बाजार विनिमय दरों में 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। **FY23 में भारतीय अर्थव्यवस्था ने वह सब कुछ लगभग "पुनर्प्राप्त" कर लिया है, जो उसने खो दिया था, "नवीनीकृत" किया है, जो रुका हुआ था और "पुनः सक्रिय" किया है, जो महामारी के दौरान और यूरोप में संघर्ष के बाद से धीमा हो गया था।**

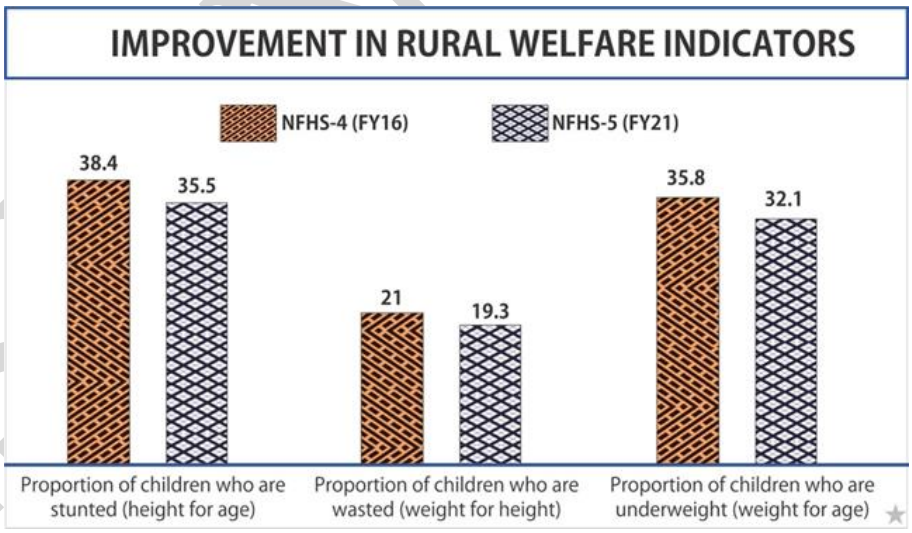

आउटलुक: 2023-24

- भारत महामारी से तेजी से उबरा है और आगामी वर्ष में मजबूत घरेलू मांग और पूंजी निवेश में तेजी से विकास को समर्थन मिलेगा।
  - इस सहस्राब्दी के दूसरे दशक के दौरान वित्तीय प्रणाली में तनाव देखा गया। इसका कारण पहले दशक में अत्यधिक ऋण देना रहा है। यह लगातार बढ़ते NPA, कम ऋण वृद्धि और पूंजी निर्माण की घटती विकास दर से स्पष्ट है।
  - हालांकि, वर्तमान में, निजी क्षेत्र के नए पूंजी निर्माण चक्र के संकेत दिखाई दे रहे हैं। साथ ही, निजी क्षेत्र द्वारा निवेश में एहतियात बरतने की प्रवृत्ति की भरपाई के लिए सरकार ने पूंजीगत व्यय को काफी हद तक बढ़ा दिया। वित्त वर्ष 2016 से वित्त वर्ष 2023 तक पिछले 7 वर्षों में बजटीय पूंजीगत व्यय 2.7 गुना बढ़ा है।
  - GST तथा भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (IBBI) की शुरूआत जैसे संरचनात्मक सुधारों ने **अर्थव्यवस्था की दक्षता और पारदर्शिता** को बढ़ाया है। साथ ही, इसने **वित्तीय अनुशासन और बेहतर अनुपालन** सुनिश्चित किया है।

- भारत का दृष्टिकोण सकारात्मक बना हुआ है लेकिन अगले वर्ष की वैश्विक आर्थिक संभावनाओं को नकारात्मक जोखिम वाली चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
  - IMF के विश्व आर्थिक परिदृश्य, अक्टूबर 2022 के अनुसार, ऐसा अनुमान है कि **उच्च मुद्रास्फीति, मौद्रिक सख्ती, आपूर्ति श्रृंखलाओं में तनाव और भू-राजनीतिक संघर्ष से बढ़ी अनिश्चितता** के कारण वैश्विक संवृद्धि 2022 में 3.2% से धीमी होकर 2023 में 2.7% हो जाएगी।

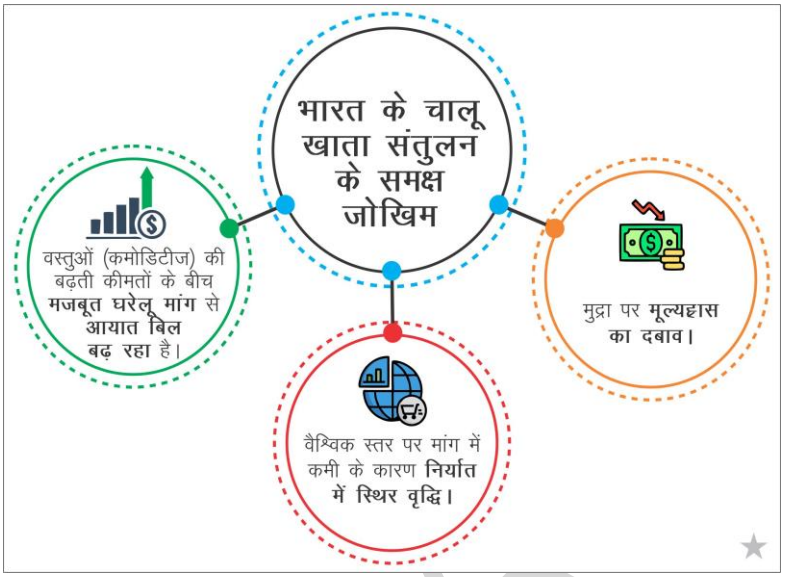

- मुद्रास्फीति के कारण जारी **मौद्रिक सख्ती का उपाय, आर्थिक संभावनाओं के लिए एक और जोखिम पैदा करता है**। इसके कारण ऋण की लागत अधिक समय तक उच्च स्तर पर बनी रह सकती है। वित्त वर्ष 24 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में अल्प वृद्धि देखी जा सकती है।
- मंद वैश्विक संवृद्धि **भारत को दो लाभ** प्रदान करती है- **तेल की कम कीमतें** और **चालू खाता घाटे (CAD) की बेहतर स्थिति**।
- यह सर्वेक्षण वित्त वर्ष 24 में वास्तविक रूप से 6.5% की बेसलाइन जीडीपी वृद्धि का अनुमान लगाता है। वैश्विक स्तर पर आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम की दिशा के आधार पर, वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि संभवतः 6.0% से 6.8% की सीमा में होगी।

भारत की संवृद्धि परिदृश्य के लिए सकारात्मक पहलू

आपूर्ति श्रृंखला का लगातार बेहतर होना

चीन में कोविड–19 संक्रमण के हालिया बढ़ते मामलों का शेष दुनिया के स्वास्थ्य और आर्थिक क्षेत्रक पर सीमित प्रभाव रहा। इसके चलते आपूर्ति श्रृंखलाएं सामान्य रही हैं।

मुद्रास्फीति का नगण्य प्रभाव

चीन की अर्थव्यवस्था के फिर से खुलने से मुद्रास्फीति संबंधी प्रभाव न तो अधिक रहा और न ही स्थायी।

भारत में पूंजी प्रवाह की वापसी

प्रमुख विकसित देशों में मंदी की प्रवृत्ति देखी जा रही है। इसलिए ये देश कठोर मौद्रिक (Monetary Tightening) नीतियों को बढ़ावा दे रहे हैं। इस दौरान भारत में घरेलू स्तर पर 6 प्रतिशत से कम मुद्रास्फीति के चलते पूंजी अंतर्वाह में वृद्धि एक सकारात्मक पक्ष है।

निजी क्षेत्रक का निवेश

निवेशकों के सकारात्मक रुझान को बढ़ावा मिला है, जिससे निजी क्षेत्रक के निवेश में वृद्धि हुई है।

अध्याय - एक नज़र में

- वर्ष 2020 से तीन वैश्विक आघातों- **कोविड-19 महामारी, रूस-यूक्रेन संघर्ष और विश्व भर में मुद्रास्फीति में वृद्धि** ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- बढ़ती मुद्रास्फीति और जवाबी मौद्रिक सख्ती के कारण वैश्विक उत्पादन में मंदी आई है और वित्तीय सुधारों के लिए जोखिम उत्पन्न हुए हैं।
- महामारी ने वित्त वर्ष 21 में भारत की GDP को संकुचित कर दिया, लेकिन वित्त वर्ष 22 में यह संकुचन की स्थिति से पूरी तरह से उबर गई। यह वित्त वर्ष 23 के लिए उच्च संवृद्धि की संभावनाओं का संकेत है।
- भारतीय रुपये ने अन्य मुद्राओं की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है लेकिन इसके मामूली मूल्यह्रास ने चालू खाता घाटा बढ़ा दिया है। हालांकि, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार CAD को वित्तपोषित करने के लिए पर्याप्त है।
- 6.5-7% की सीमा में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए पूर्वानुमान भारत के अंतर्निहित आर्थिक लचीलेपन को दर्शाता है।
    - निर्यात मांग में वृद्धि, खपत में वृद्धि, सार्वजनिक पूंजीगत खर्च और कंपनियों की मजबूत बैलेंस शीट के कारण उनकी निवेश/विनिर्माण गतिविधियों में सुधार हुआ है।
- RBI ने वित्त वर्ष 23 में हेडलाइन मुद्रास्फीति 6.8% होने का अनुमान लगाया है, लेकिन यह निजी खपत को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है। साथ ही, यह अनुमान इतना भी कम नहीं है कि निवेश करने के उत्साह को कमजोर कर सके।
- रोजगार के स्तर में वृद्धि, श्रम बल की भागीदारी दर में सुधार, गरीबी और संकट को कम करने वाली योजनाओं तथा ग्रामीण कल्याण के संकेतकों में सुधार आदि में भारत की समावेशी वृद्धि दिखाई दे रही है।
- मंद वैश्विक विकास की स्थिति भारत को दो लाभ प्रदान करती है - **तेल की कम कीमतें** और **चालू खाता घाटा (CAD) की बेहतर स्थिति**।
- भारत की तीव्र संवृद्धि के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं का सामान्यीकरण, मुद्रास्फीति की अल्प अवधि, भारत में पूंजी प्रवाह की वापसी और निजी क्षेत्र का निवेश शामिल हैं।
- वैश्विक स्तर पर आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम की दिशा के आधार पर, वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि संभवतः 6.0-6.8% की सीमा में होगी।

बजट में क्या कहा गया है?

- पूंजी निवेश आउटले को बढ़ाकर **10 लाख करोड़ रुपये** किया जा रहा है, जो GDP का 3.3% होगा।
- बजट में एक नए **इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस सचिवालय** की स्थापना की घोषणा से बुनियादी ढांचे में निजी निवेश के अवसरों में वृद्धि होगी।
- बजट में MSMEs के लिए **2 लाख करोड़ रुपये तक जमानत मुक्त ऋण गारंटी की सुविधा** की घोषणा की गई है जिससे ऋण की लागत में 1% की कमी आएगी।
- बजट में कई योजनाओं के तहत **समावेशी विकास को हासिल करन पर फोकस** किया गया है। ये योजनाएं हैं– **पी.एम. किसान, PMSBY, PMJJY, पी.एम. जन धन बैंक खाते, उज्ज्वला, स्वच्छ भारत मिशन आदि।**

अध्याय 1

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. निम्नलिखित में से कौन-सा/से विश्व में देशों द्वारा समकालिक मौद्रिक सख्ती का/के संभावित परिणाम है/हैं?
   1. चालू खाता घाटे का बढ़ना
   2. बॉण्ड यील्ड में गिरावट
   3. विदेशी निवेश का बहिर्वाह

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   a) केवल 1 और 2
   b) केवल 2
   c) केवल 1 और 3
   d) 1, 2 और 3

2. निम्नलिखित में से कौन-से उपाय किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं?
   1. RBI द्वारा रेपो दरों में वृद्धि
   2. उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क में कमी
   3. आवश्यक उत्पादों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाना

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   a) केवल 1 और 2
   b) केवल 2 और 3
   c) केवल 1 और 3
   d) 1, 2 और 3

3. भारत के व्यापार के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. वैश्विक स्लोडाउन के बावजूद पिछले तीन वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में निर्यात का हिस्सा बढ़ा है।
   2. वित्त वर्ष 2023 के लिए, भारत के पास अपने चालू खाता घाटे को पूरा करने हेतु पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार नहीं है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   a) केवल 1
   b) केवल 2
   c) 1 और 2 दोनों
   d) न तो 1, न ही 2

4. पेंट-अप डिमांड के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. पेंट-अप डिमांड मंदी के कारण बाजार में मांग के निम्न स्तर को संदर्भित करती है।
   2. व्यक्तिगत ऋणों की वृद्धि में तेजी अर्थव्यवस्था में पेंट-अप डिमांड का एक अच्छा संकेतक हो सकती है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   a) केवल 1
   b) केवल 2
   c) 1 और 2 दोनों
   d) न तो 1, न ही 2

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

5. वित्त वर्ष 2023 के दौरान बैंकिंग क्षेत्रक द्वारा ऋण आपूर्ति में वृद्धि के लिए निम्नलिखित में से कौन-से कारण हो सकते हैं?
   1. कॉरपोरेट बॉण्डस पर बढ़ता प्रतिफल
   2. बाह्य वाणिज्यिक उधार पर उच्च ब्याज लागत
   3. विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. जिस प्रकार वैश्विक अर्थव्यवस्था अनूठे संकटों से जूझ रही है, भारतीय अर्थव्यवस्था भी अपनी विकास चुनौतियों से घिरी हुई है। चर्चा कीजिए।

Q2. वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और चुनौतियों के बीच, भारतीय अर्थव्यवस्था ने अत्यधिक लचीलापन दर्शाया है। टिप्पणी कीजिए।

अध्याय 2: भारत का मध्यावधि विकास परिदृश्य: आशापूर्ण दृष्टि और उम्मीद के साथ (India's Medium Term Growth Outlook: with Optimism and Hope)

परिचय

- भारतीय अर्थव्यवस्था में **पिछले आठ वर्षों में महत्वपूर्ण संरचनात्मक सुधार हुए हैं।** इनका उद्देश्य प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ जीवन यापन और कारोबार संबंधी सुगमता को बढ़ावा देना रहा है। इस प्रकार के सुधार **विकास की तेज गति में परिवर्तित नहीं हो सके हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि** घरेलू वित्तीय एवं कॉरपोरेट क्षेत्र की ओवरलिवरेज्ड (यानी पुनर्भगतान की क्षमता से अधिक लिया गया ऋण) बैलेंस शीट को दुरुस्त करने के उपायों तथा **एक बार आने वाले आघातों (One-Off Shocks) ने इनकी गति को बाधित किया है।**
- इस अध्याय में **पिछले 3 दशकों के भारत के उत्पाद और पूंजी बाजार सुधारों के इतिहास एवं पिछले आठ वर्षों में किए गए ऐतिहासिक सुधारों पर संक्षेप में चर्चा की गई है।** इसके बाद इसमें 8 वर्षों के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों के साथ ही भारत के लिए मध्यम अवधि के विकास मैग्नेट पर भी विस्तार से चर्चा की गई है।

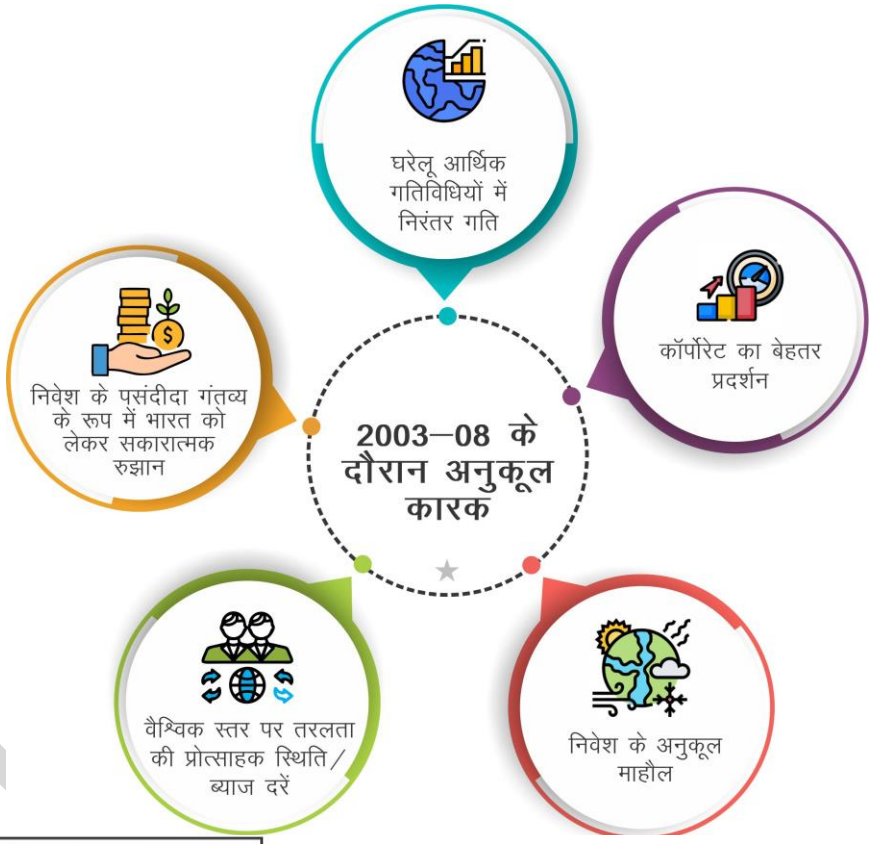

प्रमुख सुधार

1991 के आर्थिक सुधार

- **व्यापार और निवेश का उदारीकरण** किया गया।
- लगभग सभी मध्यवर्ती इनपुट्स और पूंजीगत वस्तुओं के लिए **आयात लाइसेंसिंग को समाप्त किया** गया।
- कंपनियों के लिए भारतीय बाजार में **प्रवेश करने संबंधी नियमों को सरल** बनाया गया।
- कई क्षेत्रकों में सरकारी या सार्वजनिक क्षेत्रक के एकाधिकार को समाप्त करके निजी **क्षेत्रक के प्रवेश को प्रोत्साहन दिया गया।**
- **51% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के लिए स्वचालित अनुमोदन की नीति** शुरू की गई।
- **विनिमय दर को लचीला बनाया** गया तथा प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए आवश्यकता के अनुसार मूल्यह्रास की अनुमति भी दी गई।
- **चालू खाते को पूरी तरह से परिवर्तनीय** बनाया गया।
- **पूंजी खाते को आंशिक रूप से परिवर्तनीय** बनाया गया।

1998 से 2002 की अवधि में किए गए आर्थिक सुधार

- पूंजी अंतर्वाह के मुख्य स्रोत के रूप में **FDI को प्रोत्साहित** किया गया जिससे ऋण के बिना वृद्धि को बढ़ावा मिला।
- **नई दूरसंचार नीति–1999** के तहत दूरसंचार क्षेत्रक को निजी क्षेत्रक के लिए खोल दिया गया। साथ ही, भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) को विनियामक के रूप में स्थापित किया गया।
- दूरसंचार सुधारों के कारण **भारत के सूचना प्रौद्योगिकी (IT) क्षेत्रक में उछाल** आया।
- **विनिवेश और निजीकरण** पर नीति निर्माण के लिए एक समर्पित मंत्रालय का गठन किया गया।
- **स्वर्णिम चतुर्भुज:** स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी अवसंरचना परियोजना शुरू की गई।
- उच्च संयुक्त सकल राजकोषीय घाटे को कम करने के लिए **राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम** पारित किया गया।
- बैंकिंग प्रणाली में सुधार किए गए, जैसे– ब्याज दरों के संबंध में विनियमन (इसका अर्थ है कि अब बचत बैंक खातों पर ब्याज दर का निर्धारण RBI के नियंत्रण में नहीं रहा) में ढील दी गई और **सरफेसी (SARFAESI) अधिनियम, 2002** लागू किया गया।

उत्पाद और पूंजी बाजार सुधार

- **सुधारों की शुरुआत:** 1991 के सुधार भारतीय अर्थव्यवस्था में भुगतान संतुलन (BoP) संकट की प्रतिक्रिया के रूप में किए गए थे (इन्फोग्राफिक देखें)।
  - **सुधारों के कारण वास्तविक विकास दर** 1980 के दशक के दौरान 5.5% के औसत

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

से बढ़कर वित्त वर्ष 1993 से वित्त **वर्ष 2000 तक 6.3% हो गई थी।**

- **सकल घरेलू उत्पाद में कुल वस्तु और सेवा व्यापार** 1990 के 17.2% से बढ़कर **2000 में 30.6% हो गया था।**

- **एक नए सिरे से प्रोत्साहन के साथ सुधारों में निरंतरता:** सुधारों को 1990 के दशक में भी जारी रखा गया और दशक के अंत में उन्हें एक नई गति मिली (इन्फोग्राफिक देखें)।

- **एक बार आने वाले आघातों (One-Off Shocks) के कारण 1998-2002 के दौरान किए गए सुधार निष्प्रभावी हो गए:** निम्नलिखित आघातों के कारण इस अवधि के दौरान सुधारों का प्रभाव तत्काल महसूस नहीं किया गया:
  - भारत के परमाणु परीक्षण के बाद **अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए प्रतिबंध।**
  - 2000 और 2002 के बीच **लगातार दो बार सूखे की स्थिति।**
  - **टेक बूम के अंत और 9/11** हमलों के कारण **वैश्विक अनिश्चितताएं।**

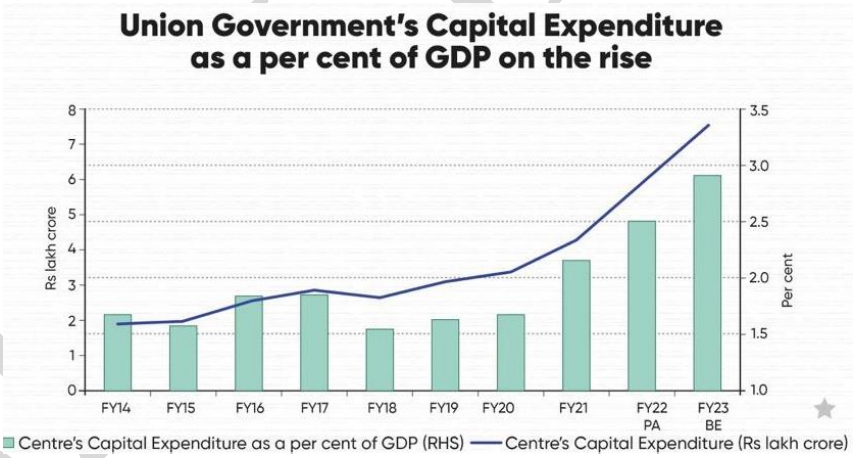

- **2003-08 के दौरान हुए वैश्विक तेजी (Global Boom) में भारत की भागीदारी:** 1998-2002 की अवधि के सुधारों के प्रभाव 2003-08 की अवधि में महसूस किए गए थे। गौरतलब है कि 2003-08 की अवधि में **भारतीय अर्थव्यवस्था औसतन 8% से अधिक की दर से वृद्धि की (जबकि उस दौरान वैश्विक संवृद्धि की दर 4.8% ही थी)।**
  - यह वृद्धि **मजबूत पूंजी प्रवाह** द्वारा समर्थित थी। यह प्रवाह दर्शाता है कि उस समय घरेलू और बाहरी कारक इस प्रवाह के लिए अनुकूल थे।

नए भारत के लिए सुधार-सबका साथ सबका विकास

- **2014 के बाद के सुधार: 2014 से पहले किए गए सुधार मुख्य रूप से उत्पाद और पूंजी बाजार क्षेत्र की मांग को पूरा करते थे।** इन्हें 2014 के बाद भी जारी रखा गया।
  - हालांकि, 2014 के बाद के सुधारों में **जीवन यापन और ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस** एवं **आर्थिक दक्षता में सुधार** पर जोर दिया गया।
  - सुधारों के पीछे निम्नलिखित **व्यापक सिद्धांत थे-**

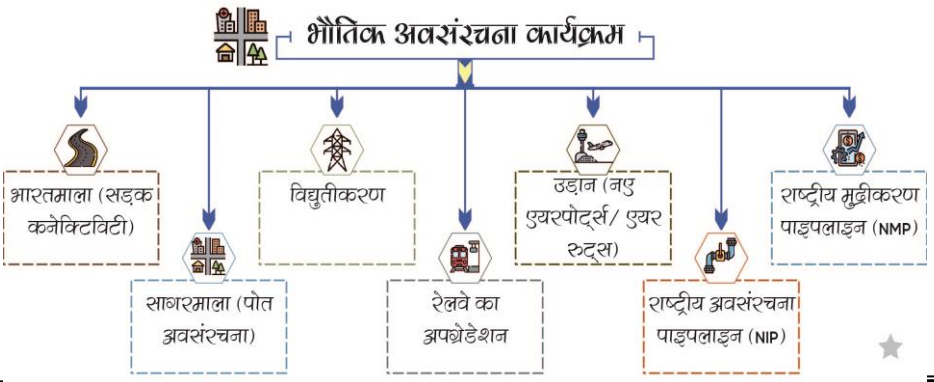

- सार्वजनिक वस्तुओं का निर्माण करना,
- विश्वास आधारित शासन को अपनाना,
- विकास के लिए निजी क्षेत्र के साथ सह-साझेदारी करना, और
- कृषि उत्पादकता में सुधार करना इत्यादि (इन्फोग्राफिक देखें)।
    - यह नए दृष्टिकोण **'सबका साथ, सबका विकास'** पर जोर देता है, जहां प्रत्येक हितधारक विकास में भागीदारी करता है और एक भागीदार के ही रूप में विकास से प्राप्त लाभ साझा करता है।

- **सार्वजनिक वस्तुओं का निर्माण:** भारत में आधारभूत संरचना पर गहन नीति निर्माण 2000 के दशक में शुरू हुआ। यह स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के शुभारंभ के साथ शुरू हुआ था।
    - **पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा बुनियादी ढांचे के परिव्यय** (पूंजीगत व्यय) में एक बड़ी छलांग दिखाई दी है। इससे व्यापक स्तर पर निजी निवेश के लिए एक प्लेटफार्म तैयार हुआ है।
    - **मजबूत फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज** के साथ, भौतिक अवसंरचना (इन्फोग्राफिक देखें) मध्यम अवधि में अर्थव्यवस्था की उत्पादकता को बढ़ाएगी।

शब्दावली को जानें

- **पब्लिक गुड या सार्वजनिक सुविधाएं:** ये सुविधाएं बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध होती हैं। इनका उपयोग किसी भी नागरिक द्वारा बार-बार किया जा सकता है। इससे अन्य नागरिकों को दी जाने वाली सेवाएं प्रभावित नहीं होती हैं। अतः नागरिक आपसी प्रतिस्पर्धा के बिना इस तरह की सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं।
- **फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज:** ऐसे उत्पाद को फॉरवर्ड लिंकेज कहा जाता है जिसका उपयोग करके अन्य उत्पाद निर्मित, उत्पादित या बनाए जा सकते हैं। किसी उत्पाद के उत्पादन में अन्य उत्पादों या कच्चे माल के योगदान को बैकवर्ड लिंकेज कहा जाता है।
- **वित्तीय समावेशन:** इसका अर्थ है कि व्यक्तियों और व्यवसायों के पास उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले उपयोगी तथा वहनीय वित्तीय उत्पादों एवं सेवाओं तक पहुंच है। ये उत्पाद व्यक्तियों और व्यवसायों को एक जवाबदेह और संधारणीय तरीके से प्रदान किए जाते हैं।

सार्वजनिक डिजिटल अवसंरचना (PDI) का विकास

सार्वजनिक डिजिटल अवसंरचना (PDI)	परिणाम
JAM (जन-धन, आधार और मोबाइल) ट्रिनिटी	**वित्तीय समावेशन:** राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के अनुसार, बैंक खाताधारकों की संख्या 2015-16 के 53% से बढ़कर वर्ष 2019-21 में 78% हो गई।
डिजिटल पब्लिक गुड्स या डिजिटल सार्वजनिक सुविधाएं • डिजिटल सत्यापन (e-KYC) • डिजिटल सिग्नेचर • डिजिटल रिपोजिटरीज (डिजिलॉकर) • डिजिटल भुगतान (UPI) • डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क (ONDC) • अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क	• **अधिक वित्तीय समावेशन और ऋण की सुगम रूप से उपलब्धता।** • उच्च खपत और निवेश में वृद्धि से उच्चतर आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा मिला। • **ई-कॉमर्स बाजार की उपलब्धता** के लिए अवसरों का सृजन। • **छोटे व्यवसायों के लिए ऋण की उपलब्धता** में वृद्धि। • **मध्यम अवधि में मजबूत आर्थिक संवृद्धि।**
डिजिटल वित्तीय अवसंरचना • डिजिटलीकृत GST प्रणाली {वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क (GSTN) और ई-वे बिल} • डिजिटल पहचान (आधार, ईश्रम पोर्टल, स्वनिधि, उद्यम पोर्टल) • यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI)	• GSTN और ई-वे बिल के जरिए **व्यापारिक लेन-देन का औपचारीकरण हुआ।** → **2017 से 2022 के मध्य** GST **करदाताओं** की संख्या बढ़कर लगभग दोगुनी हो गई है। • अर्थव्यवस्था और कार्यबल का **व्यापक औपचारीकरण हुआ।** • **डिजिटल पहचानों ने निम्नलिखित अनौपचारिक समूहों को औपचारिक आर्थिक दायरे के अंतर्गत लाने में मदद की है:** → जैसे- स्वनिधि के माध्यम से स्ट्रीट वेंडर्स; उद्यम पोर्टल के माध्यम से MSMEs; ई श्रम के माध्यम से असंगठित श्रमिक इत्यादि। • डिजिटल पहचान ने **इन समूहों की औपचारिक ऋण तक पहुंच को सुगम तथा सरल बनाया है।** → पी.एम. स्वनिधि योजना के तहत **32.7 लाख से अधिक स्ट्रीट वेंडर्स** ने ऋण के रूप में 10,000 रुपये का लाभ उठाया है। • UPI के माध्यम से छोटी से छोटी राशि के लेन-देन **का औपचारीकरण हुआ है।**
सरलीकृत गवर्नेंस के लिए एकीकृत डिजिटल इंटरफेस • व्यापार अनुमोदन के लिए राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली। • ऋण-संबंधी केंद्र सरकार की योजना के लिए **जनसमर्थ पोर्टल।** • केंद्र और राज्य सरकार की सेवाओं तक पहुंच के लिए **उमंग ऐप।** • कई मंत्रालयों को एकीकृत करने वाली भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) आधारित प्लेटफॉर्म पी.एम. गतिशक्ति।	• मौजूदा प्रणालियों के एकीकरण से **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में सुधार हो रहा है।** • पी.एम. गतिशक्ति के तहत मल्टीमॉडल इंफ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी परियोजनाओं की एकीकृत प्लानिंग और समन्वित कार्यान्वयन के कारण **लॉजिस्टिक्स की लागत में कमी आई है।**

- **विश्वास-आधारित शासन:** सरकार और नागरिकों/ व्यवसायों के बीच विश्वास का निर्माण बेहतर निवेशक भावना, व्यापार करने में आसानी और अधिक प्रभावी प्रशासन के माध्यम से **दक्षता संबंधी लाभ** प्रदान करता है।
  - **उच्च कर उछाल:** करों को युक्तिसंगत बनाने के बावजूद, **अर्थव्यवस्था में उच्च कर उछाल की सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई दे रही है।**
    - **औसत मासिक सकल GST संग्रह** वित्त वर्ष 2018 में 0.90 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष **2023 में 1.49 लाख करोड़ रुपये हो गया है।**
    - **उच्च राजस्व उछाल के लिए प्रमुख कारक प्रौद्योगिकी समर्थित कर सुधार हैं,** जैसे- फेसलेस असेसमेंट सिस्टम, एकीकृत डिजिटल कर प्रणाली और CBDT तथा CBIC के बीच डेटा साझाकरण आदि।

शब्दावली को जानें

- **तुलन पत्र (बैलेंस शीट):** यह किसी कंपनी के वित्तीय विवरण को संदर्भित करता है, जिसमें उस कंपनी की परिसंपत्तियों, देयताओं और उसके वित्त पोषण से जुड़ी जानकारी शामिल होती है।
- **ऋण GDP अनुपात अंतराल (ऋण अंतराल):** इसे ऋण - GDP अनुपात के बीच के अंतर और इसके दीर्घावधिक रुझान के रूप में परिभाषित किया जाता है।

विश्वास निर्माण हेतु पहलें

IBC और RERA के माध्यम से विनियामकीय ढांचे का सरलीकरण

इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC)

- यह व्यवसायों की स्वाभाविक विफलता की स्थिति में एक **सम्मानजनक निकासी तंत्र** प्रदान करता है।
- यह बेहतर संसाधन आवंटन के लिए **दबावग्रस्त परिसंपत्तियों के रूप में फंसे ऋण को मुक्त करने में सक्षम** बनाता है।
- **यह वित्तीय प्रणाली में विश्वास** पैदा करने और कई नए निवेशकों को आकर्षित करने में मदद करता है।

रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम (RERA)

- यह विनियामकों के साथ रियल एस्टेट ब्रोकर्स और एजेंटों के **पंजीकरण को संभव** बनाता है।
- **यह तीव्र विवाद निपटान** के लिए प्रणाली प्रदान करता है।
- यह समय पर मंजूरी के लिए **सिंगल विंडो क्लीयरेंस की व्यवस्था प्रदान करता है।**

मामूली आर्थिक अपराधों को अपराध के दायरे से बाहर करना

घरेलू और वैश्विक निवेशकों के लिए **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को प्रोत्साहित करना।**

बिना न्यायालय का सहारा लिए चूक (Default) के **1,400 से अधिक मामलों का निपटान किया गया।**

प्रक्रियाओं को सरल बनाना

25,000 से अधिक अनावश्यक अनुपालन संबंधी आवश्यकताओं को समाप्त किया गया।

1,400 से अधिक पुराने कानूनों को समाप्त किया गया।

एंजेल टैक्स को समाप्त किया गया।

भारत में स्थित संपत्तियों के अपतटीय अप्रत्यक्ष हस्तांतरण (Offshore indirect transfer) पर **पूर्वव्यापी कराधान को हटाया गया है।**

कर नीति में सुधार

एकीकृत GST

कॉर्पोरेट कर की दरों को कम किया गया।

सॉवरेन वेल्थ फंड्स और पेंशन फंड्स को टैक्स के दायरे से बाहर किया गया।

डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स को समाप्त किया गया।

- **विकास में सह-भागीदार के रूप में निजी क्षेत्र को बढ़ावा देना:**
  - **विनिवेश नीति:** वित्त वर्ष 2015 से वित्त वर्ष 2023 के दौरान, विनिवेश से 4.07 लाख करोड़ रुपये आय के रूप में प्राप्त हुए हैं।
    - निजीकरण ने श्रम उत्पादकता और 1990-2015 के दौरान विनिवेशित **सार्वजनिक उपक्रमों की समग्र दक्षता में सुधार किया है।**
    - **आत्मनिर्भर भारत के लिए नई सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम नीति** का उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में सरकार की उपस्थिति को केवल कुछ रणनीतिक क्षेत्रों तक सीमित करना है।

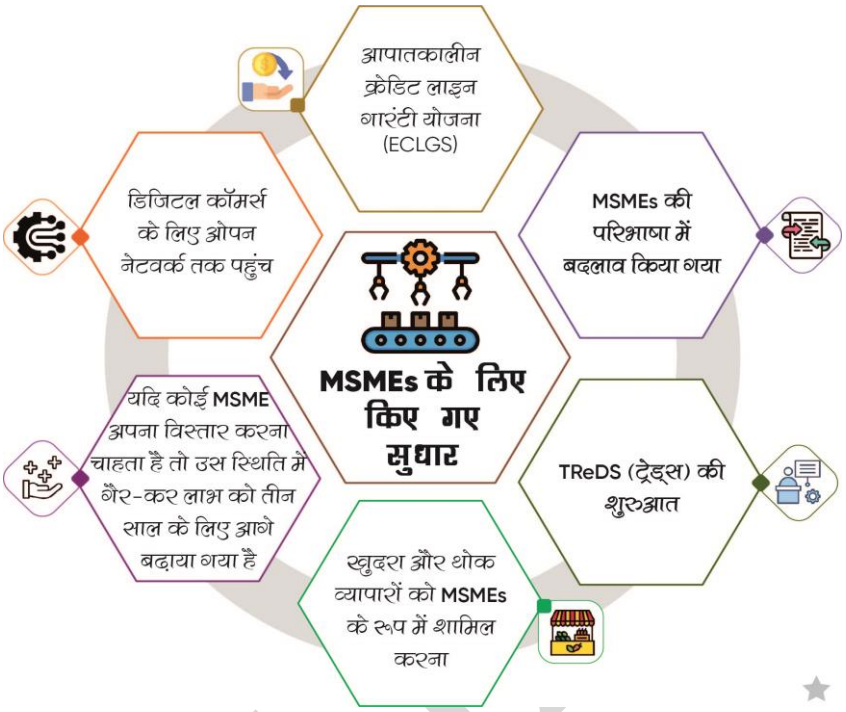

  - **विनिर्माण क्षमताएं: आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया कार्यक्रम** जैसी पहलें।
    - विनिर्माण उद्योग में वैश्विक चैंपियंस बनाने के लिए **क्षेत्र-विशिष्ट उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना शुरू की गई है।**
    - 1960-1990 में दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे पूर्वी एशियाई देशों का अनुभव यह दर्शाता है कि विदेशी प्रतिस्पर्धा के बीच **घरेलू औद्योगीकरण का समर्थन करने के लिए सरकारी नीति आवश्यक होती** है।
  - **विदेशी निवेश को बढ़ावा:** आत्मनिर्भर भारत के तहत विदेशी निवेश को घरेलू उत्पादन के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। **अधिकांश क्षेत्रक अब 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के लिए खुले हैं।**
    - भारत का सकल FDI वित्त वर्ष 2005-14 के दौरान GDP के औसत 2.2% से बढ़कर वित्त वर्ष 2015-22 में 2.6% हो गया है।
  - **बुनियादी ढांचे को सक्षम करना:** लॉजिस्टिक्स की लागत को कम करने के लिए राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (NLP) 2022 शुरू की गई है।
    - **रक्षा, खनन और अंतरिक्ष जैसे रणनीतिक क्षेत्रकों को** निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोल दिया गया है।
    - **निवेश प्रोत्साहन और व्यापार अनुपालन में आसानी** के परिणामस्वरूप मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप्स की संख्या 2016 के

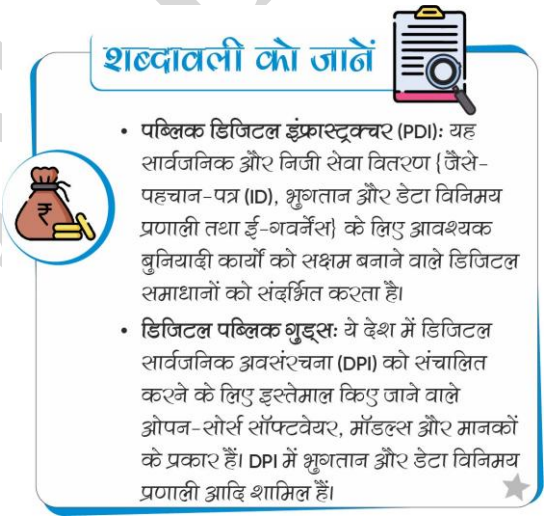

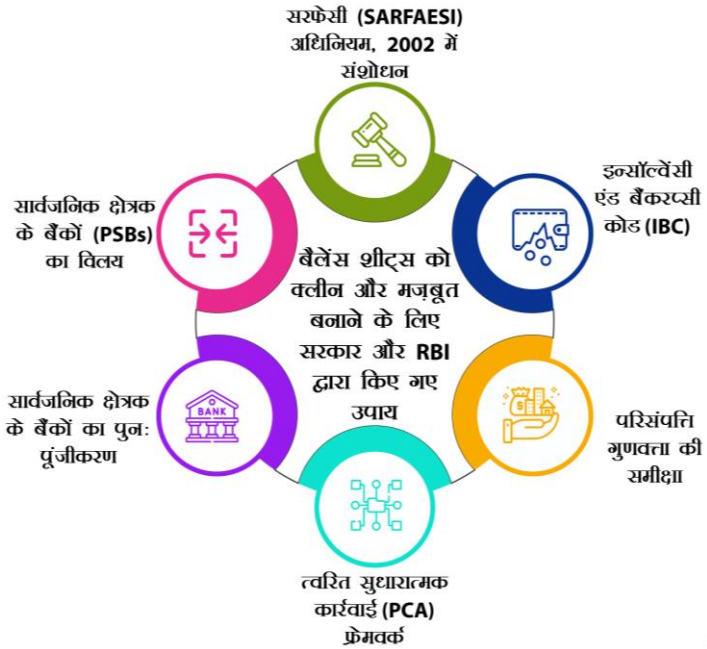

452 से बढ़कर 2022 में 84,012 हो गई है।

- **कृषि उत्पादकता में वृद्धि: अच्छे मानसून के वर्षों और सरकार द्वारा किए गए सुधारों** के कारण पिछले छः वर्षों के दौरान भारत में **कृषि क्षेत्रक 4.6% की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा है।**
  - **मृदा स्वास्थ्य कार्ड, सूक्ष्म सिंचाई कोष और जैविक एवं प्राकृतिक कृषि** जैसी नीतियों ने किसानों को संसाधनों के इष्टतम उपयोग तथा खेती की लागत को कम करने में मदद की है।
  - **किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) और राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM)** के एक्सटेंशन प्लेटफॉर्म के प्रचार ने किसानों के संसाधनों में वृद्धि की है। इसने किसानों को अच्छा लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाया है।
  - **कृषि अवसंरचना निधि (AIF)** ने विभिन्न कृषि अवसंरचनाओं के निर्माण का समर्थन किया है।
  - **किसान रेल** विशेष रूप से खराब होने वाली कृषि बागवानी वस्तुओं की आवाजाही की आवश्यकता को पूरा करती है।

1998–2002 और 2014–2022 की अवधियों के बीच तुलना

1998-2002	2014-2022
अर्थव्यवस्था को पहुंचे आघात	
1998 में किया गया परमाणु परीक्षण और उसके बाद थोपे गए आर्थिक प्रतिबंध	बैंकिंग, गैर-बैंकिंग और गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट क्षेत्रक की **बैलेंस शीट्स पर दबाव**
बैंकिंग और कॉर्पोरेट क्षेत्रक के ऋण स्तर को कम करना और बैलेंस शीट में सुधार करना	अभूतपूर्व महामारी के आघात के बाद मुद्रास्फीति की स्थिति तथा वैश्विक वस्तु मूल्य वृद्धि के आघात के बाद वित्तीय उपायों में सख्ती करना
लगातार दो सूखे पड़ना	
टेक्नॉलॉजी बस्ट: अमेरिका में मंदी और 9/11 की आतंकवादी घटना	
अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक सुधार	
ब्याज दर के विनियमन में ढील	विशिष्ट पहचान
निजीकरण	वित्तीय समावेशन
बैंकों के लिए परिसंपत्ति की पुनर्प्राप्ति	**GST** जनित औचारीकरण
अवसंरचना (स्वर्णिम चतुर्भुज)	इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड
FRBM अधिनियम	निजीकरण
	कर दरों का युक्तिकरण और कर प्रशासन में सुधार
	कुछ अपराधों को अपराध की श्रेणी से बाहर करना
	वैक्सीन उपलब्धता
	व्यय प्रबंधन संबंधी सुधार
	आत्मनिर्भर भारत
	पब्लिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर
संवृद्धि का प्रतिफल	
शुरूआती झटकों से **संवृद्धि दर पर नकारात्मक असर** पड़ा।	**वित्तीय क्षेत्रक का बैलेंस शीट मजबूत हुआ; कॉर्पोरेट क्षेत्रक के ऋण में लगभग 30 प्रतिशत बिंदु की कमी आई** (गैर-वित्तीय निजी क्षेत्रक में ऋण-GDP अनुपात)
शुरूआती झटकों के प्रभाव कम हो जाने के बाद, **संरचनात्मक सुधारों के चलते 2003 के बाद संवृद्धि को बढ़ावा मिला।**	वैश्विक झटकों से निपटने के क्रम में **समष्टि आर्थिक स्थिरता (Macroeconomic stability) पर ध्यान दिया गया।**

  - **क्लस्टर विकास कार्यक्रम (CDP)** ने बागवानी क्लस्टरों के लिए एकीकृत और बाजार आधारित विकास को बढ़ावा दिया है।
  - किसानों को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में **स्टार्ट-अप परिवेश बनाने के लिए भी सहायता** प्रदान की जा रही है।

2014 के बाद आर्थिक और संरचनात्मक सुधारों की ओर वापसी

- **2014-22 के दौरान अर्थव्यवस्था के समक्ष आघात:** पिछले 8 वर्षों के दौरान अर्थव्यवस्था में किए गए व्यापक सुधार निम्नलिखित आर्थिक आघातों के कारण भारत की संवृद्धि को गति नहीं दे सके हैं:
  - **बैलेंस शीट में तनाव:** पिछले वर्षों में क्रेडिट बूम के कारण बैलेंस शीट पर तनाव बढ़ा है।
    - **2013 के राजकोषीय और बाहरी दोहरे घाटे के संकट** ने वैश्विक पूंजी प्रवाह और ब्रिक्स के बारे में आशावादी दृष्टिकोण के कारण घरेलू ऋण तथा निवेश में उछाल की अस्थिरता को प्रकट किया है।
    - बैंकों की बैलेंस शीट के तनाव के कारण, इस सहस्राब्दी के दूसरे दशक की अधिकांश अवधि तक **GDP अनुपात में अंतर ऋणात्मक रहा**। यह अंतर 2017 में 25% तक पहुंच गया।
    - बैंकों की बैलेंस शीट पर दबाव के कारण **बैंकों की गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPAs) में वृद्धि** हुई है।

- सितंबर 2018 में इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस एंड लीजिंग सर्विसेज (IL&FS) की विफलता और अन्य गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं पर इसके प्रभावों के कारण 2019 के अंत में **बैंक ऋण वृद्धि घटकर एकल अंक में आ गई थी।**
  - कम ऋण वृद्धि के परिणामस्वरूप **कम पूंजी निर्माण** हुआ है, जिससे आर्थिक संवृद्धि प्रभावित हुई है।
- **2020 में महामारी ने** आर्थिक विकास पर सुधारों के प्रभाव को और विलंबित कर दिया है।

2023 से 2030 के दशक में ग्रोथ मैग्नेट

एक बार आने वाले आघातों से उबरने के बाद भारत अपनी पूर्ण क्षमता से वृद्धि के लिए तैयार है।

- **वित्तीय और कॉर्पोरेट क्षेत्र की स्वस्थ बैलेंस शीट:** पिछले कुछ वर्षों में विकसित मजबूत वित्तीय प्रणाली कुशल ऋण प्रावधान, उच्च निवेश एवं खपत सुनिश्चित करेगी।
- **डिजिटलीकरण सुधार:** परिणामी औपचारिकता, उच्च वित्तीय समावेशन और अधिक आर्थिक अवसर आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण चालक होंगे।
- **भू-राजनीतिक स्थिति का विकास:** वैश्विक स्तर पर नीतिगत अनिश्चितता बहुराष्ट्रीय कंपनियों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में विविधता लाने के लिए प्रेरित कर रही है। ऐसे परिदृश्य में भारत खुद को एक विश्वसनीय गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करके लाभान्वित हो सकता है।
  - भारत के पास यह अवसर है कि वह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में विविधीकरण **लाभ उठा सकता है।** चीफ इकनॉमिस्ट्स आउटलुक, 2023 (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम) ने भी इस बात पर प्रकाश डाला है।
- **नकारात्मक आघातों के ख़त्म होने के बाद सुधारों के प्रभाव दिखाई देंगे।** ऋण चक्र की पुनर्बहाली **भारतीय निजी क्षेत्रक के पूंजीगत व्यय चक्र** को फिर से जीवंत करेगी। यह व्यय चक्र अकेले ही भारत को वास्तविक रूप से **प्रति वर्ष कम-से-कम 6% की दर** से बढ़ने में सक्षम बना सकता है।
  - इसके अलावा, **सार्वजनिक डिजिटल अवसंरचना से उत्पन्न उच्च आर्थिक दक्षता भी संभाव्य GDP वृद्धि में 30-50 आधार अंक जोड़ेगी।**

अध्याय - एक नज़र में

- **भारतीय अर्थव्यवस्था में भुगतान संतुलन संकट की प्रतिक्रिया में 1991 में विभिन्न आर्थिक सुधार किए गए।** इसके परिणामस्वरूप वास्तविक विकास में वृद्धि हुई।
- सुधार 1990 के दशक में जारी रहे और **1998-2002 की अवधि के दौरान इसे आगे बढ़ाया गया।** हालांकि, इस तरह के सुधारों के प्रभाव को संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों और वैश्विक अनिश्चितताओं जैसे एक बार आने वाले आघातों के कारण तुरंत महसूस नहीं किया जा सका।
- **1998-2002 के सुधारों के प्रभाव 2003-08 की वैश्विक उछाल अवधि के दौरान महसूस किए गए थे।** इस अवधि में भारत की संवृद्धि अनुकूल घरेलू और बाहरी कारकों द्वारा समर्थित थी।
- 2014 के बाद के सुधारों ने **व्यापक सिद्धांत 'सबका साथ, सबका विकास'** के दृष्टिकोण के साथ जीवन-यापन और ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस

पर ध्यान केंद्रित किया।

- सार्वजनिक वस्तुओं के निर्माण के लिए किए गए प्रयासों को **भौतिक और डिजिटल अवसंरचना दोनों में देखा जा सकता है।**
- हितधारक भागीदारी के माध्यम से **विश्वास आधारित शासन** के परिणामस्वरूप उच्च कर उछाल, बेहतर निवेशक भावना, व्यापार करने में आसानी और प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित हुआ है।
- भारत में कृषि क्षेत्रक पिछले छ: वर्षों के दौरान 4.6% की औसत वार्षिक दर से बढ़ा है। इसका कारण बेहतर मानसून एवं सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में किए गए सुधार हैं।
- अर्थव्यवस्था को 2014-22 की अवधि के दौरान **बैलेंस शीट में तनाव, सीमित बैंक ऋण वृद्धि** और **महामारी** का सामना करना पड़ा है। इन आघातों के कारण प्रमुख संरचनात्मक और शासन सुधारों का प्रभाव सीमित रहा है।
- संरचनात्मक सुधार और एक बार आने वाले आघातों के बाद किए गए सुधारों के प्रभाव पर विचार करने पर **2014-22 की अवधि को 1998-2002 की अवधि के अनुरूप माना जाता है।**
- **2023-2030 की अवधि में निम्नलिखित को ग्रोथ मैग्नेट** माना जाता है-
  - वित्तीय और कॉर्पोरेट क्षेत्र की स्वस्थ बैलेंस शीट,
  - डिजिटलीकरण सुधार,
  - वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का विविधीकरण और
  - सरकार का सुधार एजेंडा।

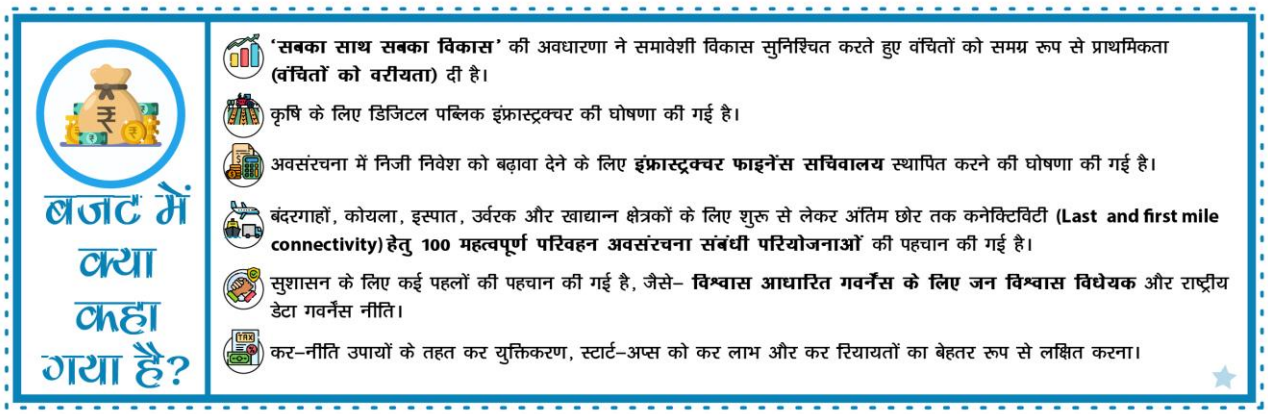

अध्याय 2

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. **1991 के आर्थिक सुधारों के एक भाग के रूप में निम्नलिखित में से कौन-से सुधार किए गए थे?**
   1. बाजार द्वारा निर्धारित विनिमय दरों की ओर संक्रमण
   2. आयात लाइसेंसिंग को हटाना
   3. सभी क्षेत्रकों में सार्वजनिक क्षेत्रक के एकाधिकार को समाप्त करना
   4. पूर्ण परिवर्तनीय पूंजी खाता

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   a) केवल 1 और 4
   b) केवल 2 और 3
   c) केवल 1 और 2
   d) केवल 3 और 4

2. **सार्वजनिक वस्तुओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**
   1. सार्वजनिक वस्तुएं ऐसी वस्तुएं हैं, जो गैर-अपवर्जित और गैर-प्रतिस्पर्धी होती हैं।
   2. पूंजीगत व्यय से सार्वजनिक वस्तुओं का निर्माण होगा।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   a) केवल 1
   b) केवल 2
   c) 1 और 2 दोनों
   d) न तो 1, न ही 2

3. **भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किसे डिजिटल सार्वजनिक वस्तु माना जाता है?**
   1. डिजिटल हस्ताक्षर
   2. डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क (ONDC)
   3. डिजिलॉकर
   4. एकीकृत भुगतान इंटरफेस

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   a) केवल 1 और 2
   b) केवल 1 और 3
   c) केवल 3 और 4
   d) 1, 2, 3 और 4

4. **निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा 'क्रेडिट टू जीडीपी रेशियो गैप' का सर्वश्रेष्ठ वर्णन करता है?**
   a) यह किसी देश के ऋण का उसके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से अनुपात है।
   b) यह उस राशि को दर्शाता है, जिससे वास्तविक जीडीपी संभावित पूर्ण-रोजगार जीडीपी से अधिक होती है।
   c) यह जीडीपी के प्रतिशत के रूप में सरकार के कुल व्यय और राजस्व का अंतर है।
   d) यह क्रेडिट-टू-जीडीपी अनुपात और इसकी दीर्घकालिक प्रवृत्ति के बीच का अंतर है।

5. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**
   1. पिछले 5 वर्षों में, भारतीय अर्थव्यवस्था में घटता 'कर उछाल' देखा गया है।
   2. पिछले सात वर्षों के दौरान भारत के सकल FDI में औसतन 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1, न ही 2

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, पिछले दशक में किए गए ऐतिहासिक सुधारों की चर्चा कीजिए और इस अवधि के दौरान सामने आए आघातों का सविस्तार वर्णन कीजिए।

Q2. पिछले दशक में सुधारों में अग्रणी रही डिजिटल तकनीकों ने भारत की आर्थिक संवृद्धि को गति देने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया था। चर्चा कीजिए।

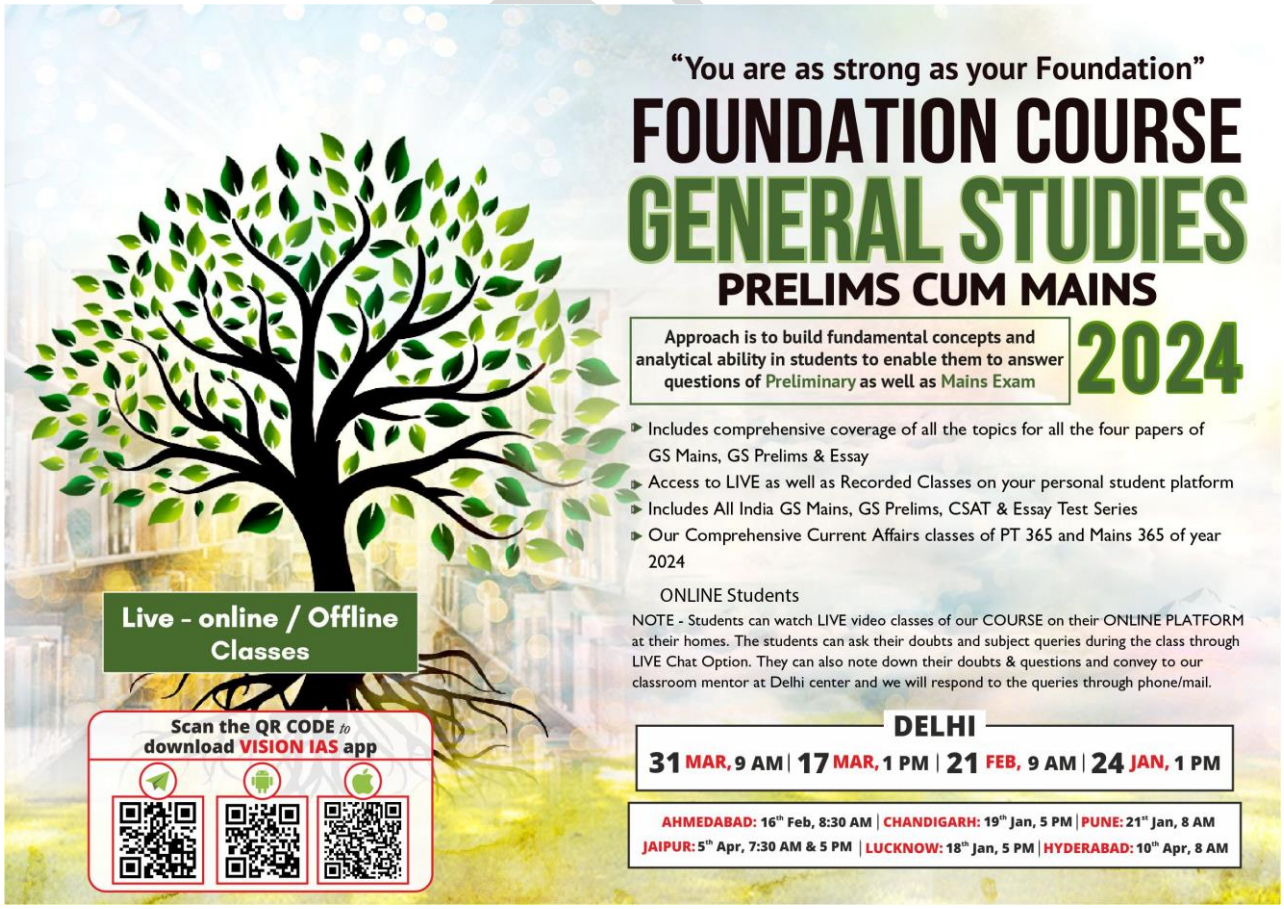

अध्याय 3: राजकोषीय विकास: राजस्व सुधार (Fiscal Developments: Revenue Relish)

परिचय

निरंतर वैश्विक अनिश्चितताओं के मद्देनजर **राजकोषीय नीति का महत्व और राजकोषीय स्थान (Fiscal Space) की उपलब्धता** सर्वोपरि हो गई है। हालिया महामारी के दौरान राजकोषीय नीति, **वैश्विक स्तर पर एक वृहद अर्थव्यवस्था के संतुलन** के साधन के रूप में सामने आई है। साथ ही, इसने कमजोर लोगों को भी एक तरह का सेफ्टी नेट प्रदान किया है। इसके अलावा, राजकोषीय नीति ने मांग को बढ़ावा देने के साथ-साथ आपूर्ति पक्ष की बाधाओं को दूर करने एवं अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का कार्य किया है।

Trends in Union Government Deficits over the years- On the way to fiscal consolidation

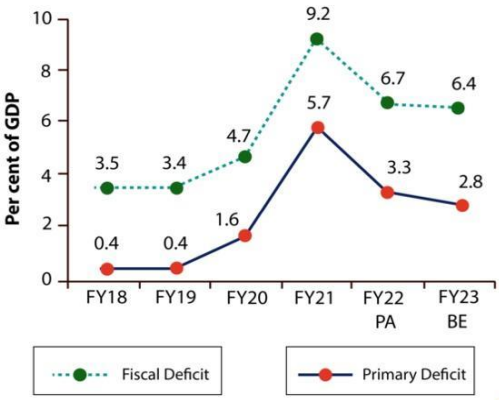

वैश्विक जोखिमों और अनिश्चितताओं के बीच राजकोषीय नीति संबंधी रणनीति तैयार करना कठिन था। एक बड़ी दुविधा तो यह थी कि जारी संकट का प्रबंधन करने के लिए राजकोषीय सहयोग को बनाए रखना चाहिए या मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने तथा खोए हुए राजकोषीय स्थान (Fiscal Space) को पुनः प्राप्त करने के लिए अर्थव्यवस्था से राजकोषीय प्रोत्साहन को वापस ले लेना चाहिए। वास्तव में इन दो विपरीत उपायों के मध्य एक **संतुलित मार्ग निकालना कठिन था**। हालांकि, इस पृष्ठभूमि में भी **भारत सरकार** ने महामारी के लिए एक **व्यवस्थित राजकोषीय प्रतिक्रिया को अपनाया** है। यह अध्याय सरकार की उसी राजकोषीय रणनीति पर चर्चा करता है।

केंद्र सरकार के वित्त की स्थिति में परिवर्तन

- **राजकोषीय स्थिति: व्यवस्थित राजकोषीय प्रतिक्रिया** ने वर्तमान अनिश्चितताओं के बीच **सार्वजनिक वित्त को स्थिर बनाए रखने में सहायता की है।**
  - महामारी के दौरान, वित्त वर्ष 2021 में राजकोषीय घाटा GDP के 9.2% से घटकर वित्त वर्ष 2022 में GDP के 6.7% पर आ गया है। यह परिवर्तन सरकार के राजकोषीय ग्लाइड पथ के अनुरूप है।

शब्दावली को जानें

- **फिस्कल ग्लाइड पाथ (Fiscal Glide Path):** यह निर्धारित किए गए राजकोषीय लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में सरकार द्वारा अपनाया जाने वाला एक रोडमैप है। इसके तहत राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार राजकोषीय समेकन रोडमैप का अनुसरण करती है।
- **राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit):** यह उधार को छोड़कर सरकार के कुल व्यय और कुल प्राप्तियों के बीच का अंतर है।
  - **सकल राजकोषीय घाटा** = कुल व्यय – (राजस्व प्राप्तियां +गैर–ऋण पूंजीगत प्राप्तियां)
- **गैर–ऋण प्राप्तियां (Non Debt Receipt):** इनमें राजस्व प्राप्तियां (कर और गैर–कर) और गैर–ऋण पूंजीगत प्राप्तियों से संबंधित विवरण शामिल होता है। यदि व्यय संबंधी आवश्यकता को पूरा करने के लिए गैर–ऋण प्राप्तियां कम पड़ जाती हैं तो ऐसी स्थिति में उस कमी को सरकार ऋण (जिसे राजकोषीय घाटा कहा जाता है) लेकर पूरा करती है।
- **कर उछाल (Tax buoyancy):** समय के साथ कर नीति में उचित सुधार से राष्ट्रीय आय के साथ–साथ कर संग्रह में आए उछाल को कर–उछाल कहा जाता है। इसका आंकलन देश की सकल उत्पाद या निवल आय के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। जब संग्रहित कर राशि में हुई प्रतिशत वृद्धि, देश के सकल उत्पादन या राष्ट्रीय आय में हुई प्रतिशत वृद्धि से अधिक होती है तब इस वृद्धि को कर–उछाल माना जाता है।

- **सरकार वित्त वर्ष 2023 के लिए 6.4% के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में लगी हुई है:** सरकार राजकोषीय घाटे के बजटीय लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में लगी हुई है। यह सरकार की राजकोषीय प्रतिक्रिया के कारण ही संभव हुआ है, जिसमें **खाद्य और उर्वरक सब्सिडी पर अतिरिक्त खर्च एवं विशिष्ट शुल्क कटौती** शामिल हैं।
- **विवेकपूर्ण बजट धारणाएं:** आर्थिक गतिविधियों में सुधार, वर्ष के दौरान राजस्व में आए उछाल और बजट में मैक्रोइकॉनमिक वैरिएबल्स के संदर्भ में पारंपरिक धारणाओं के कारण केंद्र के राजकोषीय प्रदर्शन में लचीलापन आया है।
  - **बजट वित्त वर्ष 2023 में विवेकपूर्ण धारणाओं ने** वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान **सरकार को एक बफर प्रदान किया।**

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **केंद्र सरकार की गैर-ऋण प्राप्तियों का प्रदर्शन:**
  - **निरंतर राजस्व वृद्धि:** महामारी से प्रभावित वित्त वर्ष 2021 के दौरान गिरावट के बाद, राजस्व प्राप्तियों ने वित्त वर्ष 2022 PA में मजबूत वृद्धि दर्ज की है।
    - **सकल कर राजस्व (Gross Tax Revenue: GTR)** ने अप्रैल से नवंबर 2022 तक 15.5% की **वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि** दर्ज की है।

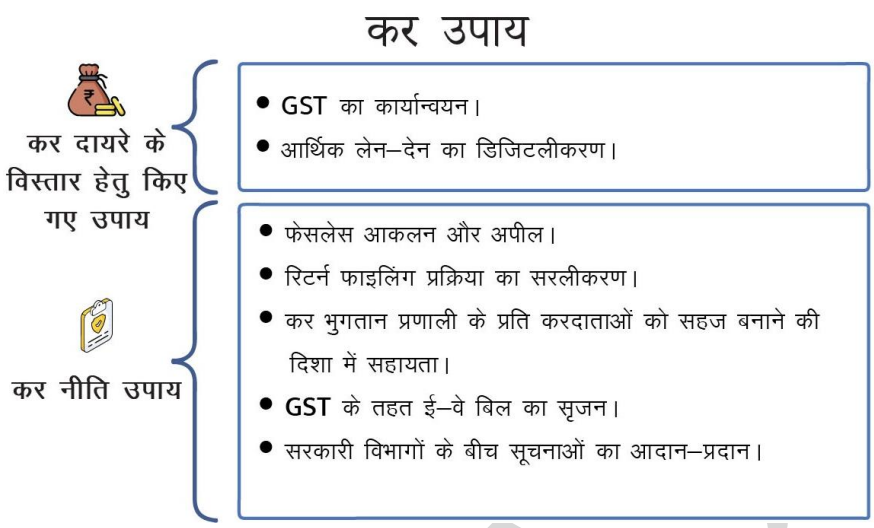

    - राज्यों को आवंटन के बाद केंद्र के **शुद्ध कर राजस्व (Net Tax Revenue: NTR)** में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 7.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
  - **सरकारी प्रयास:** कर आधार के विस्तार और कर अनुपालन बढ़ाने की दिशा में हुए सरकारी प्रयासों के कारण, सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि की तुलना में राजस्व में अधिक तीव्र गति से वृद्धि हुई है।
  - **प्रत्यक्ष कर:** कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत आयकर वृद्धि के कारण, प्रत्यक्ष कर ने अप्रैल से नवंबर 2022 तक **26% की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि** दर्ज की है। गौरतलब है कि मोटे तौर पर GTR का आधा हिस्सा प्रत्यक्ष कर से प्राप्त होता है।

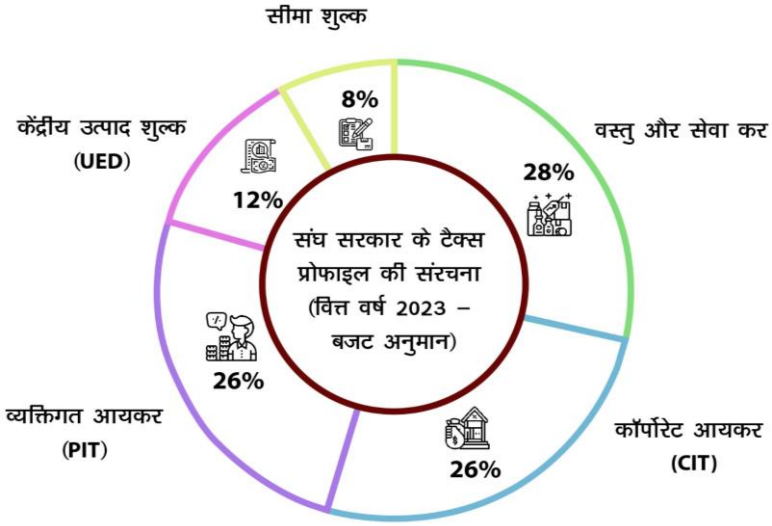

  - **सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क, फ्लेक्सी-राजकोषीय नीति उपकरण के रूप में कार्य करते हैं:**
    - महामारी के कारण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर के संग्रह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। ऐसे में **सरकार ने राजस्व संग्रह बढ़ाने के लिए पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क को बढ़ा दिया था।**
    - इसके बाद, अन्य करों की वसूली में सुधार हुआ और मुद्रास्फीति के दबाव में वृद्धि हुई। ऐसी स्थिति में **सरकार ने** उपभोक्ताओं पर तेल की बढ़ती कीमतों के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए **उत्पाद शुल्क को घटा दिया** था।
    - बजट अनुमान के अनुरूप, अप्रैल से नवंबर 2022 तक वर्ष-दर-वर्ष आधार पर **उत्पाद शुल्क संग्रह में 20.9% की गिरावट आई है।**

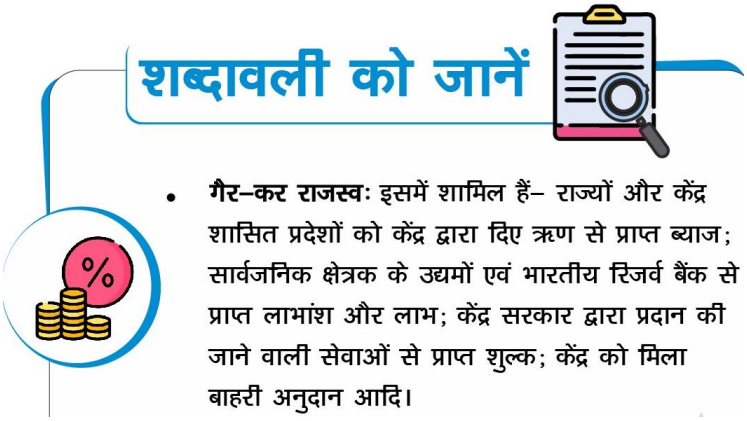

    - मुद्रास्फीति के दबाव के कारण कई वस्तुओं पर आरोपित सीमा शुल्क को कम किया गया था। हालांकि, **उच्च आयात के कारण** अप्रैल से नवंबर 2022 की अवधि में **सीमा शुल्क संग्रह में 12.4% की वृद्धि हुई है।**

- **वस्तु और सेवा कर (GST) का महत्वपूर्ण राजस्व स्रोत के रूप में स्थिर होना:** अप्रैल से दिसंबर 2022 तक केंद्र और राज्य सरकारों का सकल GST संग्रह 13.40 लाख करोड़ रुपये था। इस प्रकार 24.8% की वार्षिक वृद्धि हुई है।
  - **GST संग्रह में सुधार** हुआ है जिसका श्रेय निम्नलिखित **प्रणालीगत परिवर्तनों** को दिया जा सकता है:
    - GST चोरी करने वालों और **फर्जी बिलों के खिलाफ** राष्ट्रव्यापी अभियान, तथा
    - असंगत कर संरचना को सही करने के लिए किए गए तर्कसंगत उपाय।
  - **इसके अलावा GST का दायरा दोगुना हो गया है।** इसमें GST कर दाताओं की संख्या 2017 में लगभग 70 लाख से बढ़कर 2022 में 1.4 करोड़ से अधिक हो गई है।
- **गैर-कर राजस्व लक्ष्यों की प्राप्ति की राह पर केंद्र:** नवंबर 2022 तक बजट राशि का 73.5% एकत्र किया जा चुका है।
- **विनिवेश के लिए प्रतिबद्ध लेकिन बाहरी कारकों पर निर्भर:** वित्त वर्ष 2015-2023 के दौरान, सरकार ने **आंशिक हिस्सेदारी बिक्री और रणनीतिक विनिवेश लेन-देन के माध्यम से आय के रूप में लगभग 4.07 लाख करोड़ रुपये की राशि प्राप्त की है।**

  - महामारी जनित वैश्विक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक संघर्ष के बावजूद, **सरकार ने निम्नलिखित उपायों के माध्यम से** निजीकरण और रणनीतिक विनिवेश के प्रति पुनः अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है।
  - **नई सार्वजनिक क्षेत्रक उद्यम नीति का क्रियान्वयन और**
  - **परिसंपत्ति मुद्रीकरण रणनीति** का क्रियान्वयन

- **केंद्र सरकार के व्यय का प्रदर्शन:**
  - **व्यावहारिक व्यय नीति:** सरकार ने पहले कमजोर लोगों के लिए बुनियादी सेफ्टी नेट (सुरक्षा जाल) सुनिश्चित किया और फिर उत्पादक घरेलू पूंजीगत व्यय में बदलाव करके क्रमिक तरीके से व्यय को बढ़ाने का प्रयास किया है।
    - संकट के दौरान अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए, **प्रति-चक्रीय राजकोषीय नीति उपायों** पर बल दिया गया था। **महामारी संकट** ने अतिरिक्त व्यय की आवश्यकता को अनिवार्य कर दिया गया था।
    - **केंद्र द्वारा पूंजीगत व्यय (कैपेक्स)** में **GDP के 1.7%** (वित्त वर्ष 2009 से वित्त वर्ष 2020) के दीर्घकालिक औसत से वित्त वर्ष 2022 PA **में GDP के 2.5%** के स्तर तक लगातार वृद्धि हुई है। **वित्त वर्ष 2023 में इसे GDP के 2.9% तक बढ़ाने का का लक्ष्य रखा गया है।**

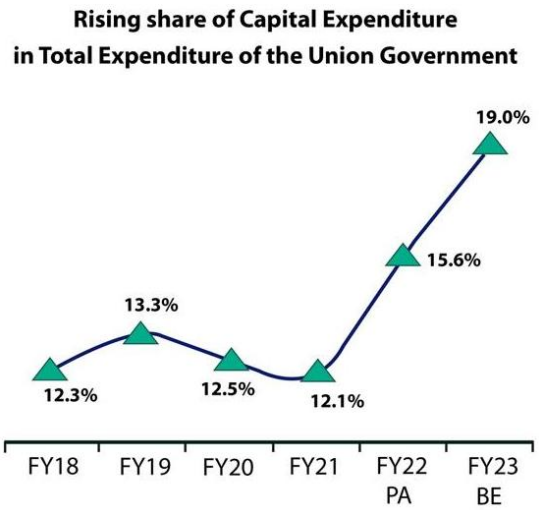

  - **पूंजीगत व्यय आधारित वृद्धि:** केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2023 के लिए **7.5 लाख करोड़ रुपये के पूंजीगत व्यय** का बजट रखा था। इसमें से अप्रैल-नवंबर 2022 की अवधि तक **59.6% से अधिक खर्च** किया जा चुका है।
    - केंद्र ने राज्यों के पूंजीगत व्यय को बढ़ावा देने के लिए कई प्रोत्साहनों की घोषणा की है। इन प्रोत्साहनों के तहत राज्यों को **दीर्घकालिक ब्याज मुक्त ऋण** दिया जाएगा और साथ ही **पूंजीगत व्यय से संबद्ध अतिरिक्त ऋण भी प्रदान किया जाएगा।**

VISION IAS

- **राजस्व व्यय संबंधी आवश्यकताएं:** केंद्र के राजस्व व्यय के महत्वपूर्ण घटकों में ब्याज भुगतान, प्रमुख सब्सिडी, सरकारी कर्मचारियों के वेतन, पेंशन, रक्षा राजस्व व्यय और राज्यों को वित्त का हस्तांतरण शामिल हैं। साथ ही, यह व्यय सीमित लचीलेपन की भी अनुमति देता है।
  - **व्यय को फिर से प्राथमिकता देना और सब्सिडी को तर्कसंगत बनाने जैसे उपाय** कुल मांग को प्रोत्साहित करने एवं पुनर्वितरण अनिवार्यताओं को पूरा करने के लिए जरूरी साधन हैं।
  - केंद्र सरकार के राजस्व व्यय को वित्त वर्ष 2021 में GDP के **15.6% से घटाकर** वित्त वर्ष 2022 PA में GDP के 13.5% तक लाया गया था। यह संकुचन **सब्सिडी व्यय को कम करने** के कारण हुआ था। गौरतलब है कि वित्त वर्ष 2021 में सब्सिडी व्यय GDP के 3.6% से घटकर वित्त वर्ष 2022 PA में GDP के 1.9% के स्तर तक आ गया था।

  - भू-राजनीतिक संघर्ष के अचानक उत्पन्न होने के कारण **उच्च खाद्य और उर्वरक सब्सिडी की आवश्यकता** उत्पन्न हुई है। इससे अप्रैल-नवंबर 2022 तक बजटीय व्यय का **लगभग 94.7%** सब्सिडी पर **उपयोग** हुआ।
  - पूर्व-महामारी वर्ष के दौरान ब्याज भुगतान में गैर-ऋण प्राप्तियों और राजस्व व्यय का स्थिर अनुपात था। हालांकि, **महामारी फैलने के बाद,** उच्च सरकारी उधारी के कारण **प्राप्तियों के अनुपात के रूप में ब्याज भुगतान में वृद्धि** हुई।
  - **मध्यम अवधि में,** राजस्व में उछाल, आक्रामक परिसंपत्ति मुद्रीकरण, दक्षता लाभ और निजीकरण सार्वजनिक ऋण का भुगतान करने में मदद करेंगे। इससे **ब्याज भुगतान में कमी आएगी।**
- लचीली आर्थिक संवृद्धि, निरंतर राजस्व उछाल और मध्यम अवधि में सावधानीपूर्वक किए गए व्यय प्रबंधन के साथ, केंद्र सरकार का कदम मध्यम अवधि के राजकोषीय नीति वक्तव्य द्वारा उल्लिखित **राजकोषीय पथ के अनुरूप सही दिशा में** होगा।

विगत वर्षों के दौरान केंद्रीय बजट में किए गए प्रमुख सुधार

बजट में बेहतर वित्तीय पारदर्शिता और वास्तविक राजस्व अनुमान	❖ केंद्र सरकार की **अतिरिक्त–बजटीय उधारी** वित्त वर्ष 2019–20 में 1.48 लाख करोड़ रुपये और वित्त वर्ष 2020–21 में 1.21 लाख करोड़ रुपये थी, जो **घटकर वित्त वर्ष 2021–22 (संशोधित अनुमान) में 750 करोड़** रुपये हो गई है। ❖ बजट में वित्त वर्ष 2022–23 के लिए कोई अतिरिक्त बजटीय संसाधनों का अनुमान नहीं लगाया गया है। ❖ बजट 2022 में राजस्व अनुमान यथार्थवादी मान्यताओं पर आधारित थे। इससे अनिश्चित वैश्विक माहौल में सरकार को एक बफर प्राप्त हुआ है।
योजना–गैर–योजना वर्गीकरण की समाप्ति	❖ वित्त वर्ष 2017–18 के बजट में **सरकारी व्यय के योजनागत और गैर–योजनागत वर्गीकरण को बंद कर दिया गया।** ❖ इस सुधार ने बजट में **संसाधनों के प्रभावी नियोजन और आवंटन को सक्षम किया है।**
मुख्य बजट के साथ रेल बजट का विलय	❖ **वित्त वर्ष 2017–18 से रेल बजट को केंद्रीय बजट में मिला दिया गया है।** इससे सरकार की वित्तीय स्थिति की समग्र तस्वीर प्रस्तुत होती है। ❖ इसमें हाई–वे, रेलवे और अंतर्देशीय जलमार्गों के बीच **मल्टीमॉडल परिवहन योजना** की सुविधा की परिकल्पना की गई थी, जिसे बाद के वर्षों में **'गतिशक्ति'** के माध्यम से मजबूत किया गया है। ❖ इसने रेलवे और केंद्र सरकार दोनों के लिए संसाधनों की दक्षता बढ़ाने में मदद की है। ❖ इस विलय ने **रेलवे को सरकार को लाभांश का भुगतान करने से छूट प्रदान की है।** ❖ **राजस्वः यह संसाधनों के बेहतर आवंटन के लिए वित्त मंत्रालय को वर्ष के मध्य में समीक्षा के लिए अधिक गुंजाइश** रखने की अनुमति देता है।
बजट प्रस्तुत करने की तारीख को 1 फरवरी करना	❖ बजट प्रस्तुत करने की तारीख को वित्त वर्ष 2017–18 से 1 फरवरी कर दिया गया है। ❖ इसने बजट चक्र को जल्द पूरा करने का मार्ग प्रशस्त किया और मंत्रालयों को वित्तीय वर्ष की शुरुआत से योजनाओं की बेहतर योजना एवं निष्पादन सुनिश्चित करने में सक्षम बनाया है।

राज्य सरकार के वित्त का अवलोकन

- **राज्य के वित्त का प्रदर्शन:** वित्त वर्ष 2021 में महामारी से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने के बाद राज्य सरकारों ने वित्त वर्ष 2022 में अपने वित्त में सुधार किया है।
  - राज्यों के **संयुक्त सकल राजकोषीय घाटे (Gross Fiscal Deficit: GFD)** को वित्त वर्ष 2021 में GDP के 4.1% से वित्त वर्ष 2022 में 2.8% के स्तर तक लाया गया था।
  - वित्त वर्ष 2023 में **राज्यों के लिए समेकित GFD-GDP अनुपात को बजट में 3.4%** के स्तर पर रखा गया है।
  - राज्यों के पास पिछले तीन वर्षों के दौरान **अप्रयुक्त उधार संबंधी सीमाएं** थी। राज्य सरकारों की संसाधनों की कमी को देखते हुए, **केंद्र ने** वित्त वर्ष 2021 में **राज्यों के लिए निवल उधार सीमा (Net Borrowing Ceilings: NBC) को** GSDP के 5%, वित्त वर्ष 2022 में GSDP के 4% और वित्त वर्ष 2023 में GSDP के 3.5% तक **बढ़ा दिया है।**
  - वित्त वर्ष 2022 के PA में **राज्यों के पूंजीगत परिव्यय में 31.7% की वृद्धि** हुई है।

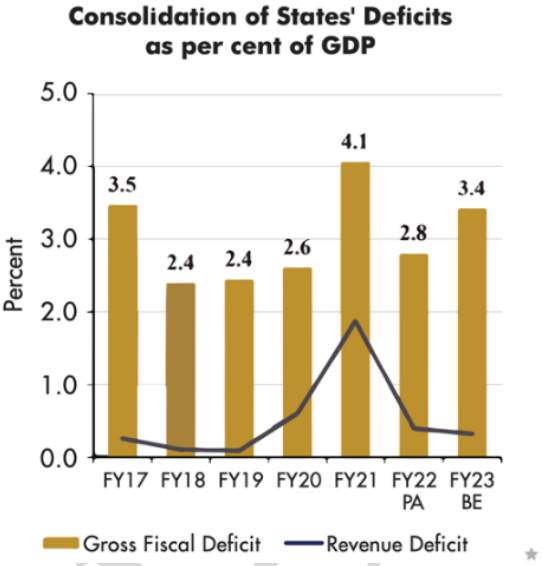

  - इसके लिए मजबूत **राजस्व उछाल और राज्यों को अग्रिम भुगतान**, GST मुआवजा भुगतान व ब्याज मुक्त ऋण के संदर्भ में **केंद्र द्वारा प्रदत्त समर्थन जैसे कारक जिम्मेदार हैं।**
- **सहकारी राजकोषीय संघवाद एक सुलक्षित राजकोषीय नीति को संचालित करता है।**
  - **केंद्र से राज्यों को हस्तांतरण:** इनमें राज्यों को हस्तांतरित केंद्रीय करों में राज्यों का हिस्सा, वित्त आयोग अनुदान, केंद्र प्रायोजित योजनाएं (Centrally Sponsored Schemes: CSS) और अन्य हस्तांतरण शामिल हैं।
    - वित्त वर्ष 2019 और वित्त वर्ष 2023 के बजट अनुमान के बीच **राज्यों को कुल हस्तांतरण में वृद्धि** हुई है।
    - **वित्त आयोग ने संविधान के अनुच्छेद 275 के तहत** राजस्व घाटा अनुदान, स्थानीय निकायों को अनुदान, स्वास्थ्य क्षेत्र के अनुदान और आपदा प्रबंधन अनुदान के संबंध में वित्त वर्ष 2023 के लिए 1.92 लाख करोड़ रुपये की राशि आवंटित करने की **सिफारिश की थी।**
  - **संकट के दौरान GST मुआवजे के भुगतान का समर्थन: सरकार ने** वित्त वर्ष 2021 और वित्त वर्ष 2022 के दौरान **अतिरिक्त 2.69 लाख करोड़ रुपये उधार** लिए थे। इसे राज्यों हेतु निर्धारित GST मुआवजे में होने वाली कमी को पूरा करने के उद्देश्य से राज्यों को देने के लिए लिया गया था।
    - राज्यों को **सेस (उपकर) भुगतान से प्राप्त राशि और कर हस्तांतरण की किश्तें दी गई** ताकि उन्हें तत्काल रूप से निधियां प्राप्त हो सकें।

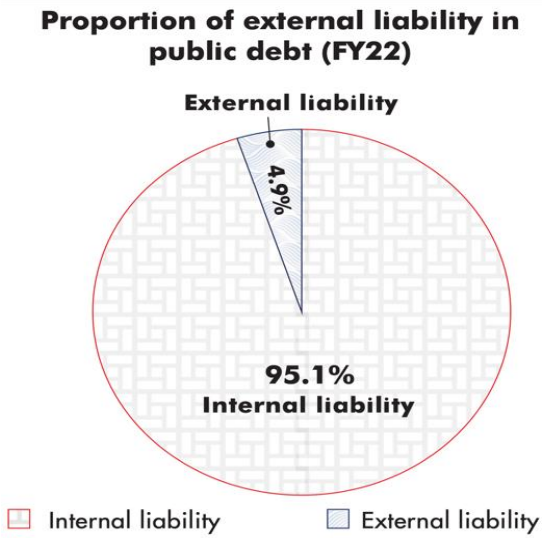

  - **राज्यों के लिए उधार लेने की बढ़ी हुई सीमा और सुधारों के लिए प्रोत्साहन:** महामारी के प्रकोप के बाद से, केंद्र ने राज्य सरकारों की **शुद्ध उधार सीमा को राजकोषीय उत्तरदायित्व विधान (Fiscal Responsibility Legislation: FRL) सीमा से ऊपर रखा** है।
    - इसे वित्त वर्ष 2021 में GSDP का 5%, वित्त वर्ष 2022 में GSDP का 4% और वित्त वर्ष 2023 में GSDP का 3.5% तय किया गया था।
    - इस अतिरिक्त उधार का एक हिस्सा **सुधारों से जुड़ा हुआ था** जो राज्यों को ऐसे सुधारों को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करता था। नतीजतन, वित्त वर्ष 2021 में 17 राज्यों ने वन नेशन वन राशन कार्ड प्रणाली लागू की है। 20 राज्यों ने ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस (Ease of Doing Business) संबंधी सुधारों को पूरा किया है।

VISION IAS

- निवल उधारी सीमा के अलावा, पंद्रहवें वित्त आयोग ने राज्यों को **निष्पादन (विद्युत क्षेत्रक में) आधारित अतिरिक्त उधार देने** की सिफारिश की थी। आयोग ने इस संदर्भ में, **सकल राज्य घरेलू उत्पाद (Gross State Domestic Product: GSDP) के 0.50% के अतिरिक्त उधार की अनुशंसा की थी।** आयोग द्वारा वित्त वर्ष 2022 से 2024-25 तक प्रत्येक वर्ष के लिए इसकी सिफारिश की गई है।
- **राज्यों के पूंजीगत व्यय के लिए केंद्र का समर्थन:** केंद्र सरकार ने पिछले तीन वर्षों के लिए 'पूंजी निवेश हेतु राज्यों को विशेष सहायता की योजना' के तहत **राज्य सरकारों को 50 वर्षों का ब्याज मुक्त ऋण** प्रदान किया है।
  - वित्त वर्ष 2023 के दौरान, इस योजना के तहत आवंटन बढ़ाकर 1.05 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है। इसमें **विशिष्ट सुधारों/ पहलों से जुड़े बिना शर्त घटक** और छोटे **घटक** शामिल हैं।

सरकार का ऋण प्रोफाइल

- 2020 में अभूतपूर्व राजकोषीय विस्तार के कारण, सरकारी देनदारियां दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण चिंता के रूप में उभरी हैं।
  - IMF का अनुमान है कि 2022 में **वैश्विक सरकारी ऋण GDP का 91% होगा**, जो पूर्व-महामारी के स्तर से लगभग 7.5 प्रतिशत अंक ऊपर है।
  - बजट की कठोर बाध्यताओं, चुनौतीपूर्ण वैश्विक वित्तीय स्थितियों, बढ़ती ब्याज दरों और मंद संवृद्धि के डर के कारण **संप्रभु ऋणों की संधारणीयता चिंता का विषय** बन चुकी है।
- ऐसी वैश्विक पृष्ठभूमि में, **भारत में केंद्र सरकार की कुल देनदारियों** में महामारी के दौरान वर्ष 2021 में **तेज वृद्धि हुई। गौरतलब है** कि पिछले एक दशक में ये देनदारियां **GDP के प्रतिशत के रूप में अपेक्षाकृत स्थिर थीं।**
  - यह उछाल **महामारी के चलते सरकार द्वारा लिए गए अत्यधिक उधार** के कारण है। यह उधारी दबावग्रस्त राजस्व और GDP में तेज संकुचन के बीच अतिरिक्त व्यय संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए थी।
  - केंद्र सरकार की **कुल देनदारियां** वित्त वर्ष 2021 में GDP के 59.2% से घटकर वित्त वर्ष 2022 (P) में **56.7%** हो गईं।
- **भारत का सार्वजनिक ऋण प्रोफाइल अपेक्षाकृत स्थिर है। कमज़ोर मुद्रा और ब्याज दर संबंधी जोखिम** इसकी विशेषताएं हैं।
  - मार्च 2021 के अंत में केंद्र सरकार की कुल निवल देनदारियों में से **95.1% घरेलू मुद्रा** में थीं। वहीं संप्रभु विदेशी ऋण 4.9% था, जिसका अर्थ होता है- **कम मुद्रा जोखिम।**
  - **संप्रभु विदेशी ऋण पूरी तरह से आधिकारिक स्रोतों से है,** जो इसे अंतर्राष्ट्रीय पूंजी बाजारों में अस्थिरता से बचाता है।
  - भारत में सार्वजनिक ऋण मुख्य रूप से **निश्चित ब्याज दरों पर अनुबंधित** है। मार्च 2021 के अंत में इस ऋण में फ्लोटिंग आंतरिक ऋण GDP का केवल 1.7% था। इसलिए, ऋण पोर्टफोलियो ब्याज दर की अस्थिरता से अछूता है। यह **ब्याज भुगतान को स्थिरता** भी प्रदान करता है।
  - पिछले कुछ वर्षों में, पांच वर्ष से कम समय में परिपक्व होने वाली दिनांकित प्रतिभूतियों के अनुपात में गिरावट आई है, जबकि **दीर्घकालिक प्रतिभूतियों में वृद्धि की प्रवृत्ति देखने को मिली है।**
- **केंद्र सरकार के वित्त को समेकित करना:** यह समग्र रूप से सरकारी क्षेत्र की राजकोषीय स्थिति का अवलोकन देता है।
  - महामारी के कारण केंद्र और राज्यों द्वारा लिए गए अतिरिक्त उधारों के कारण **वित्त वर्ष 2021 के दौरान GDP के अनुपात के रूप में सामान्य सरकारी देनदारियों में तेजी से वृद्धि** हुई। हालांकि, यह अनुपात वित्त वर्ष 2022 (RE) में अपने शीर्ष की तुलना में कम है।
  - GDP के प्रतिशत के रूप में **सामान्य सरकारी घाटा भी** वित्त वर्ष 2021 में **अपने चरम** के बाद अभी तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में है।
- **संवृद्धि और ब्याज दर में सकारात्मक अंतर सरकारी ऋण को संधारणीय बनाए रखता है:**
  - **GDP और सामान्य सरकारी ऋण का अनुपात** मार्च 2020 के अंत में 75.7% से बढ़कर वित्त वर्ष 2021 के अंत में 89.6% था। साथ ही, ऐसा भी अनुमान था कि यह मार्च 2022 के अंत तक **GDP के 84.5% तक पहुंच जाएगा।**
  - पूंजीगत व्यय आधारित वृद्धि पर जोर देने से भारत **वृद्धि-ब्याज दर अंतर को सकारात्मक रखने में सक्षम होगा।** इसके परिणामस्वरूप ऋण का स्तर स्थिर बना रहता है।

VISION IAS

- **पिछले 15 वर्षों के दौरान लचीली आर्थिक संवृद्धि से विकास और ब्याज दर का अंतर सकारात्मक रहा है।** इसके परिणामस्वरूप सकल घरेलू उत्पाद-सामान्य सरकारी ऋण का अनुपात संधारणीय स्तर पर है।
  - यह संधारणीयता इस बात से भी साबित होती है कि अन्य देशों की तुलना में 2005 से 2021 तक GDP के मुकाबले भारत के **सामान्य सरकारी ऋण अनुपात में केवल मामूली वृद्धि** ही हुई है।

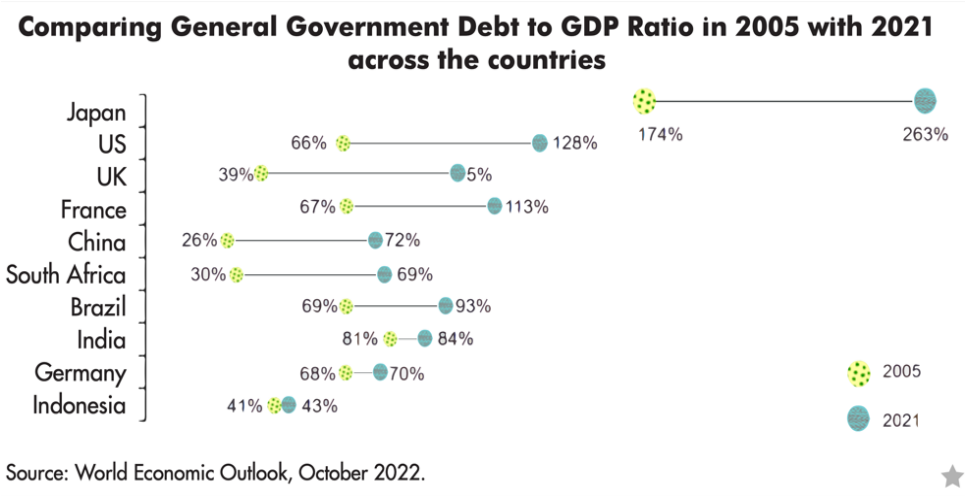

निष्कर्ष

- सरकार ने संकट को एक अवसर के रूप में इस्तेमाल किया और पिछले कुछ वर्षों में **नीतिगत सुधार** किए।
  - **इन सभी उपायों से अर्थव्यवस्था का अधिक औपचारीकरण हुआ है और अनुपालन में वृद्धि हुई है।** साथ ही, लोगों की आय में बढ़ोतरी हुई है तथा **राजकोषीय प्रबंधन के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को विश्वसनीयता प्राप्त हुई है।**
- **भारत के ऋण और घाटे के अनुपात में निम्नलिखित के कारण वृद्धि हुई** है।
  - **आर्थिक गतिविधियों में महामारी-जनित रुकावट** की वजह से आवश्यक उच्च व्यय, और
  - नॉमिनल GDP **में संकुचन या धीमी वृद्धि** (यह संकुचन वित्तीय प्रणाली के तनाव के कारण था।)
- वैश्विक अनिश्चितताओं और जोखिमों के बीच, **राजकोषीय ग्लाइड पथ नीतिगत कार्रवाई के लिए अधिक महत्वपूर्ण राजकोषीय स्थान सुनिश्चित करेगा।**
  - जैसे-जैसे सरकारें अपनी राजकोषीय स्थितियों को संधारणीय बनाती हैं और उस रास्ते पर टिकी रहती हैं, उनकी ब्याज दरों में निहित जोखिम प्रीमियम कम हो जाता है। इस प्रकार **समाज के सभी वर्गों के लिए पूंजी की लागत कम हो जाती है।**
  - **उभरती अर्थव्यवस्थाओं** के लिए राजकोषीय घाटे का **प्रोत्साहन प्रभाव** (जोखिम-प्रीमियम को कम करके) उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में **अधिक** हो सकता है।
- **केंद्र को एक मजबूत सरकार के रूप में अपनी छवि को सुनिश्चित करने हेतु सुधारों** और उच्च पूंजीगत व्यय के लिए राज्यों को प्रोत्साहित करना जारी रखना चाहिए। पूंजीगत व्यय आधारित संवृद्धि रणनीति से मध्यम अवधि में संधारणीय ऋण का स्तर सुनिश्चित होगा।

अध्याय - एक नज़र में

- **वैश्विक अनिश्चितताओं की पृष्ठभूमि में,** जब राजकोषीय नीति सर्वोपरि हो गई, तो भारत सरकार ने **महामारी के लिए एक आवश्यकतानुरूप समायोजित (Calibrated) राजकोषीय प्रतिक्रिया को अपनाया।**
- कैलिब्रेटेड राजकोषीय नीति के कारण, सरकार वित्त वर्ष 2023 के लिए सकल घरेलू उत्पाद के 6.4% के **राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर है।**
- कर आधार के विस्तार और कर अनुपालन बढ़ाने की दिशा में सरकार के प्रयासों के कारण वित्त वर्ष 2022 में सरकार की **राजस्व प्राप्तियों में वर्ष-दर-वर्ष मजबूत वृद्धि दर्ज की गई।**
- **प्रत्यक्ष करों में वृद्धि** कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत आयकर में वृद्धि का परिणाम थी।
- **सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क ने फ्लेक्सी-राजकोषीय नीति साधन** के रूप में काम किया। इसने न केवल जरूरत पड़ने पर सरकारी राजस्व में वृद्धि की, बल्कि तेल की कीमतों में वृद्धि के प्रभाव को भी कम किया।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **वस्तु और सेवा कर (GST) महत्वपूर्ण राजस्व स्रोत के रूप में स्थिर हो गया।** अप्रैल से दिसंबर 2022 तक केंद्र और राज्य सरकारों का सकल GST संग्रह **13.40 लाख करोड़ रुपये** तक पहुंच गया।
- **महामारी की अतिरिक्त व्यय आवश्यकताओं और सरकार द्वारा पूंजीगत व्यय पर जोर देने के कारण** केंद्र सरकार का **कुल व्यय बढ़ गया है।**
- वित्त वर्ष 2021 में महामारी से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने के बाद **राज्य सरकारों ने** वित्त वर्ष 2022 में **अपने वित्त में सुधार किया।**
- वित्त वर्ष 2019 और वित्त वर्ष 2023 के बीच **केंद्र से राज्यों को कुल हस्तांतरण में वृद्धि** हुई है।
- महामारी के फैलने के बाद से, केंद्र ने राज्य सरकारों की निवल उधार सीमा को **राजकोषीय उत्तरदायित्व विधान (FRL) सीमा से ऊपर** रखा है। इस अतिरिक्त उधारी का एक हिस्सा **सुधारों से जुड़ा था।**
- **केंद्र सरकार की कुल देनदारियों** में महामारी के दौरान वर्ष 2021 में **तेज वृद्धि देखी गई।** ये पिछले दशक में **GDP के प्रतिशत के रूप में अपेक्षाकृत स्थिर** थीं।
- भारत का सार्वजनिक ऋण प्रोफाइल **अपेक्षाकृत स्थिर** है और इसमें **मुद्रा तथा ब्याज दर जोखिम कम** हैं। देश की **95.1% देनदारियों को घरेलू मुद्रा में दर्शाया गया था।**
- पूंजीगत व्यय आधारित संवृद्धि पर जोर देने से भारत **संवृद्धि-ब्याज दर अंतर को सकारात्मक रखने में सक्षम** होगा। इससे ऋण के स्तर को स्थिर बनाए रखा जा सकेगा।

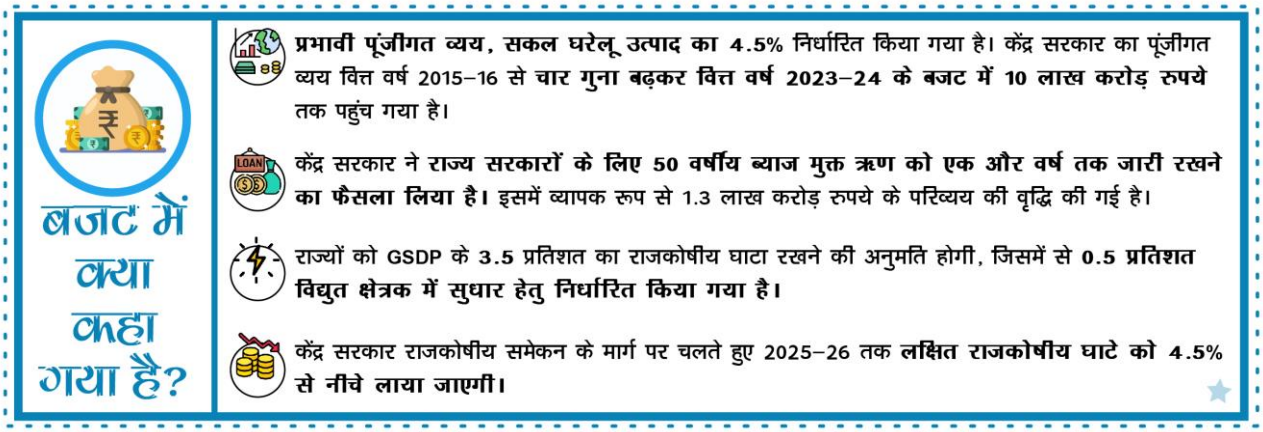

अध्याय 3

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. केंद्र सरकार की राजकोषीय स्थिति में हालिया प्रवृत्तियों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. पिछले दो वर्षों के दौरान सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा बढ़ा है।
   2. वित्त वर्ष 2022 में, भारत का प्राथमिक घाटा राजकोषीय घाटे को पार कर गया था।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   a) केवल 1
   b) केवल 2
   c) 1 और 2 दोनों
   d) न तो 1, न ही 2

2. वित्त वर्ष 2023 के लिए निम्नलिखित को केंद्र सरकार के टैक्स प्रोफाइल में उनके हिस्से के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
   1. वस्तु एवं सेवा कर
   2. संघीय उत्पाद शुल्क
   3. कॉर्पोरेट आयकर
   4. सीमा शुल्क

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   a) 3-1-2-4
   b) 1-3-4-2
   c) 1-3-2-4
   d) 4-2-3-1

3. वित्त वर्ष 2022 में केंद्र सरकार के ऋण प्रोफाइल के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. केंद्र सरकार की कुल देनदारियां जीडीपी के 70% से अधिक हो गई हैं।
   2. बाह्य देनदारियां सार्वजनिक ऋण के 10 प्रतिशत से अधिक हैं।
   3. भारत में सार्वजनिक ऋण मुख्य रूप से अस्थायी ब्याज दरों पर अनुबंधित है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   a) केवल 1
   b) केवल 2 और 3
   c) केवल 3
   d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. निम्नलिखित में से किसके कारण सरकार की गैर-ऋण प्राप्तियों में वृद्धि हो सकती है?
   1. कर आधार का विस्तार
   2. ईंधन पर उत्पाद शुल्क में कमी
   3. कॉरपोरेट कर की दरों में बढ़ोतरी

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   a) केवल 1 और 2
   b) केवल 2 और 3
   c) केवल 1 और 3
   d) 1, 2 और 3

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

5. वस्तु एवं सेवा कर (GST) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. केंद्र और राज्य सरकारों के सकल GST संग्रह में पिछले वर्ष के मुकाबले 15 फीसदी की कमी आई है।
2. GST संग्रह में सुधार के लिए व्युत्क्रमित शुल्क ढांचे को पेश किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1, न ही 2

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. राजकोषीय स्थिरता और बेहतर संसाधन दक्षता प्राप्त करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा किए गए नीतिगत उपायों पर चर्चा कीजिए।

Q2. 'राजकोषीय संघवाद पर अधिक बल' न केवल राज्य के वित्त को मजबूत करने की क्षमता रखता है, बल्कि यह राष्ट्र के समग्र विकास में भी योगदान देता है। भारत के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

अध्याय 4: मौद्रिक प्रबंधन और वित्तीय मध्यस्थता: एक अच्छा वर्ष (Monetary Management And Financial Intermediation: A Good Year)

परिचय

चार दशकों के बाद वर्ष 2022 में विश्व की अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में उच्च मुद्रास्फीति के दौर की वापसी हुई। इसके कारण प्रमुख केंद्रीय बैंकों, जैसे- फेडरल रिजर्व, यूरोपीय सेंट्रल बैंक (European Central Bank: ECB) और बैंक ऑफ इंग्लैंड को अपनी दरों में ऐतिहासिक वृद्धि करनी पड़ी।

वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप, RBI ने भी अपनी मौद्रिक नीति में सख्ती के चक्र की शुरुआत की। इससे बाजार में अधिशेष तरलता में कमी आई। वहीं दूसरी ओर, सरकारी प्रतिभूति (G-sec) बाजार, ऋण वितरण, बीमा और पेंशन जैसे क्षेत्रकों ने अन्य वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अच्छा प्रदर्शन किया है।

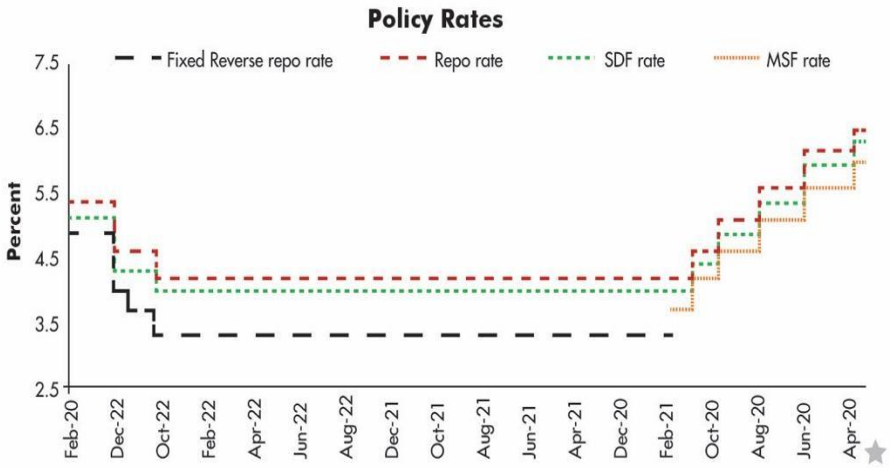

मौद्रिक विकास

- **कमोडिटी की कीमतें:** महामारी के बाद आपूर्ति श्रृंखला के सामान्यीकरण से **मुद्रास्फीति के दबाव** और यूरोप में रूस एवं यूक्रेन के बीच संघर्ष **के कारण कमोडिटीज़ की कीमतों में वृद्धि हुई।**
- **मौद्रिक नीति समिति (Monetary Policy Committee: MPC) ने निम्नलिखित के माध्यम से मौद्रिक नीति में सख्ती का चक्र शुरू किया-**
  - **स्थायी जमा सुविधा (Standing Deposit Facility: SDF) की शुरुआत** की गई है। इसने तरलता समायोजन सुविधा (Liquidity Adjustment Facility: LAF) कॉरिडोर के नए फ्लोर रेट (ऋण लेने वाले से लिया जाने वाला न्यूनतम ब्याज) के रूप में रिवर्स रेपो रेट की जगह ले ली है।
  - नीतिगत रेपो रेट, SDF, MSF और बैंक दर में **225 आधार अंकों (Bps) की संचयी वृद्धि को लागू किया गया।**
- **मुद्रा आपूर्ति: रिजर्व मनी (M0) और ब्रॉड मनी (M3) दोनों में** क्रमशः 10.3% तथा 8.7% की **वृद्धि हुई है**, जबकि **मनी मल्टीप्लायर में** औसतन वृद्धि 5.1% पर **स्थिर रही है।**

शब्दावली को जानें

- **मौद्रिक नीति समिति** (Monetary Policy Committee): यह अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति संबंधी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत रेपो दर को निर्धारित करती है। इसमें छह सदस्य शामिल होते हैं। इस समिति को एक वर्ष में कम–से–कम चार बार बैठक आयोजित करना अनिवार्य है। इस समिति की बैठक के लिए कोरम के रूप में चार सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक होती है।
- **मनी मल्टीप्लायर:** मनी–मल्टीप्लायर बताता है कि कैसे मौद्रिक आधार में वृद्धि से मुद्रा की आपूर्ति कई गुना बढ़ जाती है। इसे **ब्रॉड मनी (M3) और रिजर्व मनी (M0) के अनुपात अर्थात् M3/M0 के रूप में परिभाषित किया जाता है।**

तरलता संबंधी स्थिति

- **तरलता में कमी: कोविड-19 के बाद अधिशेष** तरलता की स्थिति थी। सख्त मौद्रिक नीति अपनाने के बाद यह तरलता कम **हुई है।**
- **WACR और रेपो रेट के बीच घटता अंतराल: अधिशेष तरलता की क्रमिक निकासी औसतन भारित औसत कॉल दर (Weighted Average Call Rate: WACR)** को **नीतिगत रेपो दर के समीप लाती है। गौरतलब है कि WACR मौद्रिक नीति का परिचालन लक्ष्य होता है।**

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

रेपो दर	स्थायी जमा सुविधा (SDF) दर	सीमांत स्थायी सुविधा (Marginal Standing Facility: MSF) दर
• यह वह दर है जिस पर **RBI वाणिज्यिक बैंकों को उनकी अल्पकालिक** तरलता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए **धन उधार देता है।** • इसमें पुनर्खरीद समझौते के साथ RBI को **संपार्श्विक के रूप में बैंक की प्रतिभूतियां दी जाती हैं।**	• यह तरलता संबंधी एक साधन है जो **बैंकों को अतिरिक्त तरलता को RBI के पास रखने का विकल्प देता है।** • SDF में संपार्श्विक की कोई आवश्यकता नहीं होती है।	• यह वह दर है **जिस पर RBI अनुसूचित बैंकों को एक रात के लिए धन उधार देता है।** • इसमें **संपार्श्विक के रूप में सरकारी प्रतिभूतियां प्रदान करना शामिल है।**

मौद्रिक नीति का संचरण

वित्त वर्ष 2023 के दौरान बैंकों की उधारी और जमा दरों में वृद्धि हुई, जो नीतिगत रेपो दर में बदलाव के अनुरूप थी।

सरकारी प्रतिभूति बाजार में विकास

- **यील्ड में बढ़ोतरी:** 2020 और 2021 में ठहराव के बाद **2022 में 10 वर्ष के सरकारी बॉण्ड पर यील्ड बढ़ी।**

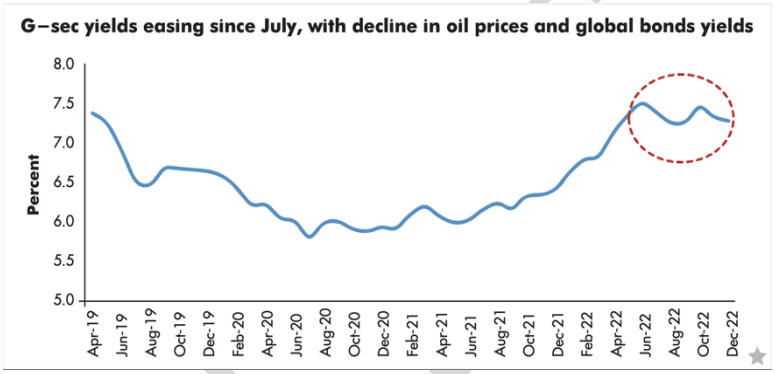

- **बॉण्ड बाजार में उतार-चढ़ाव स्थिर:** वर्ष की पहली छमाही में घरेलू बॉण्ड बाज़ार में अधिक उतार-चढ़ाव देखा गया था। इसके निम्नलिखित कारण थे-
  - कच्चे तेल की कीमतें
  - केंद्रीय बैंकों की ऊंची ब्याज दरें (Hawkish stance), और
  - रुपये पर बढ़ता दबाव इत्यादि।
- **वर्ष की दूसरी छमाही के दौरान स्थितियां स्थिर हुईं और अस्थिरता में कमी आई।**

शब्दावली को जानें

- **सरकारी प्रतिभूतियां (G-Sec):** सरकारी प्रतिभूतियां, केंद्र सरकार या राज्य सरकारों द्वारा जारी किए गए व्यापार योग्य लिखत या ट्रेडेबल इंस्ट्रूमेंट होती हैं।
- **ट्रेज़री बिल (T-Bills):** ये भारत सरकार द्वारा जारी अल्पकालिक सरकारी प्रतिभूतियां हैं। इन्हें वर्तमान में तीन अवधियों अर्थात् 91 दिन, 182 दिन और 364 दिन के लिए जारी किया जाता है।
- **राज्य विकास ऋण (SDL):** ये राज्य सरकार द्वारा जारी दिनांकित सरकारी (Dated Government) प्रतिभूतियां होती हैं।

बैंकिंग क्षेत्रक

- पिछले कुछ वर्षों में सभी प्रमुख क्षेत्रकों में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (Scheduled Commercial Banks: SCBs) की **परिसंपत्तियों की गुणवत्ता में लगातार वृद्धि हुई है।**
- **सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (Gross Non-Performing Assets: GNPA) का अनुपात** 2020 के 8.2% से **घटकर** 2022 में 5.0% हो गया। यह पिछले सात वर्षों का सबसे निचला स्तर है। आगे भी इसी प्रवृत्ति के जारी रहने की संभावना है। साथ ही, GNAP के अनुपात में और भी गिरावट का अनुमान है।
- **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का पूंजी पर्याप्तता अनुपात (Capital Adequacy Ratio: CAR) परिसंपत्ति गुणवत्ता** समीक्षा अवधि के बाद क्रमिक रूप से **बढ़ रहा** है। यह SCBs के लिए न्यूनतम पूंजी आवश्यकता से काफी अधिक बना हुआ है।

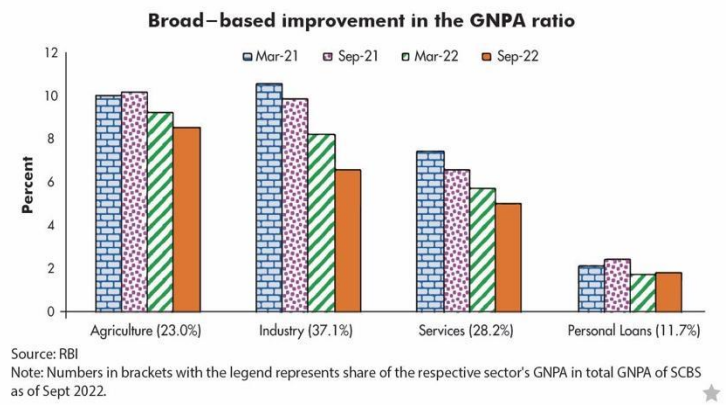

Source: RBI
Note: Numbers in brackets with the legend represents share of the respective sector's GNPA in total GNPA of SCBS as of Sept 2022.

- **क्रेडिट ग्रोथ में सुधार हो रहा है-**
  - होम लोन की बढ़ती मांग के कारण **खुदरा ऋण में वृद्धि** हो रही है।
  - अप्रैल 2022 के बाद से बैंकों द्वारा **गैर-खाद्य ऋण** दोहरे अंकों में बढ़ रहा है।
  - **कृषि और संबद्ध गतिविधियों के लिए ऋण** में भी तेजी आई है।
  - **कॉर्पोरेट्स:**
    - **प्राथमिक इक्विटी बाजारों** से एकत्रित फंड्स में **गिरावट** आई, और
    - अपने नियमित संचालन और क्षमता विस्तार के वित्तपोषण के लिए **बैंक ऋण पर निर्भरता बढ़ी।**

Non–Food Bank credit growth in double digit since April 2022

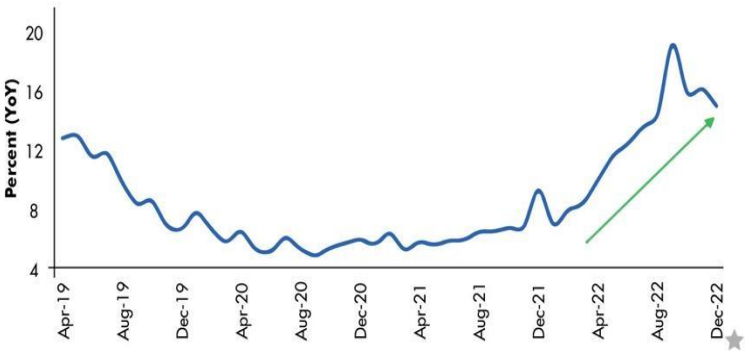

- **गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियां (NBFCs)**
  - सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के साथ-साथ SCBs द्वारा दिए गए ऋण के संबंध में **NBFCs के ऋण में लगातार वृद्धि हुई है।**
  - **NBFCs की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार** हुआ है। यह NBFCs के घटते गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPAs) अनुपात से स्पष्ट होता है।
  - **NBFCs अपने ऋण का सबसे बड़ा हिस्सा औद्योगिक क्षेत्रक में लगाती हैं।** इसके बाद खुदरा, सेवाओं और कृषि का स्थान आता है।

Increasing credit disbursed to and by NBFCs

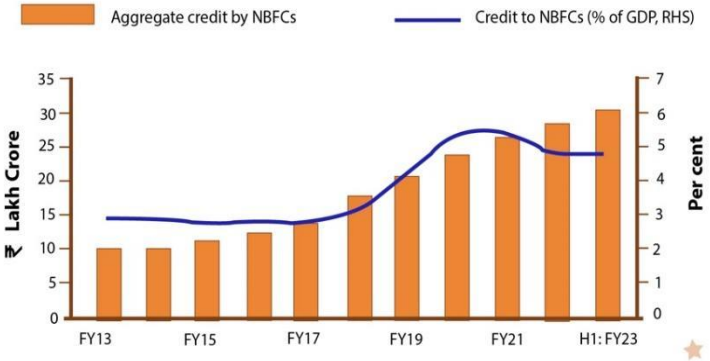

दिवाला और दिवालियापन संहिता (Insolvency and Bankruptcy Code: IBC)

- **कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रियाएं (Corporate Insolvency Resolution Processes: CIRPs) अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं:** वर्ष 2016 में स्थापना के बाद से लगभग 6,000 **CIRPs** शुरू हुई थीं, जिनमें से 67% मामलों का समाधान कर दिया गया है।
- **संकटग्रस्त परिसंपत्तियों में से 69% परिसंपत्तियों को बचाया गया।** दिवाला और दिवालियापन (IB) प्रक्रिया के माध्यम से जो मूल्य प्राप्त हुआ वह परिसमापन मूल्य का लगभग 178% था।
- वित्त वर्ष 2022 में लोक अदालत, सरफेसी अधिनियम और DRT जैसे अन्य चैनलों की तुलना में **IBC** (SCB द्वारा) **के तहत सबसे अधिक राशि वसूल की गई है।**

पूंजी बाजार

- **वित्त वर्ष 2022 में वैश्विक पूंजी का खराब प्रदर्शन:** वैश्विक वृहद आर्थिक अनिश्चितता, अभूतपूर्व मुद्रास्फीति, मौद्रिक नीति में सख्ती, उतार-चढ़ाव भरे बाजार, यूरोप में युद्ध आदि से निवेशकों का उत्साह प्रभावित हुआ है।
- **प्राथमिक बाजार**
  - वैश्विक उथल-पुथल के बावजूद **भारतीय प्राथमिक बाजार ने अच्छा प्रदर्शन किया है।**
  - **शेयर बाजार में सूचीबद्ध होने का विकल्प चुनने वाली फर्मों/ कंपनियों की संख्या में 37% की वृद्धि** हुई। हालांकि जुटाई गई कुल राशि पिछले वर्ष में जुटाई गई राशि की लगभग आधी हो गई है।

शब्दावली को जानें

- **इंडिया वोलाटिलिटी इंडेक्स (इंडिया VIX):** यह निफ्टी इंडेक्स ऑप्शन कीमतों पर आधारित एक अस्थिरता सूचकांक (वोलाटिलिटी इंडेक्स) है। इसके अंगर्तत एक वोलाटिलिटी फिगर (%) की गणना की जाती है जो अगले 30 कैलेंडर दिनों में बाजार में अपेक्षित उतार–चढ़ाव को इंगित करता है। इंडिया VIX, गणना के लिए कम्प्यूटेशन मेथडॉलजी का उपयोग करता है। यह मेथडॉलजी निफ्टी ऑप्शंस ऑर्डर बुक में बदलाव को आसानी से समायोजित कर लेती है।

- भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) के रूप में **भारत के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा इनिशियल पब्लिक ऑफर (IPO) जारी किया गया।**

- **द्वितीयक बाजार**
  - **सेंसेक्स और निफ्टी 50 दोनों** में 2021 की तुलना में 2022 में तेजी आई है।
  - रूस-यूक्रेन संघर्ष के संदर्भ में **इंडिया VIX (वोलैटिलिटी इंडेक्स) सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है।**
  - **खोले गए डीमैट खातों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है।**
  - **कमोडिटी की कीमतों में तीव्र सुधार देखा गया है।** ऐसा इसलिए है क्योंकि फेडरल रिजर्व ने बढ़ती मुद्रास्फीति का मुकाबला करने के लिए मार्च 2022 में ब्याज दरों में वृद्धि शुरू की थी।
  - **इक्विटी सेगमेंट और डेट सेगमेंट दोनों में निवल FPI बहिर्वाह देखा गया है।**
  - **सरकारी प्रतिभूति (G-Sec) द्वितीयक बाजार व्यापार:**
    - **निवल विक्रेता: विदेशी बैंक और प्राथमिक डीलर**
    - **निवल खरीदार: सार्वजनिक क्षेत्रक के बैंक, सहकारी बैंक, वित्तीय संस्थान, बीमा कंपनियां, म्यूचुअल फंड, निजी क्षेत्रक के बैंक और 'अन्य'।**

क्रॉस कंट्री एनालिसिस: क्रिप्टो करेंसी का विनियमन

- क्रिप्टो संपत्ति बाजार बहुत अस्थिर रहा है। इसका **कुल वैल्यूएशन 2021 के लगभग 3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर 2023 में 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से भी कम हो गया है।**
- **क्रिप्टो क्रॉस-सेक्टर और क्रॉस-बॉर्डर प्रकृति का होता है। इसके कारण क्रिप्टो के संदर्भ में यदि राष्ट्रों के दृष्टिकोण एक दूसरे के साथ असमन्वित हों तो उनकी प्रभावशीलता सीमित रह जाती है।** इसके परिणामस्वरूप क्रिप्टो बाजार को विनियमित करने और उनकी अस्थिरता को कम करने के लिए OECD तथा जी-20 जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन वैश्विक स्तर पर समन्वित दृष्टिकोण पर चर्चा कर रहे हैं।

इन उदाहरणों से पता चलता है कि **वैश्विक मानकों को व्यापक और सुसंगत होने की आवश्यकता है।** इस संबंध में विनियामक प्रतिक्रियाएं **मानक वर्गीकरण** के साथ-साथ **संक्रामक प्रभावों को दूर करने के लिए** विश्वसनीय डेटा पर आधारित होनी चाहिए। साथ ही, ये प्रतिक्रियाएं इतनी लचीली होनी चाहिए कि बाजार के विकास एवं भावी अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर भविष्य में उनमें आवश्यकता अनुरूप बदलाव किए जा सकें।

GIFT अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (International Financial Services Centre: IFSC)

- **IFSC एक अधिकार क्षेत्र है,** जिसमें बैंक, शेयर बाजार और संबंधित संस्थाओं जैसे **वित्तीय संस्थानों का उच्च संकेन्द्रण है।** ये ऐसे संस्थान हैं जो **वित्तीय नवाचार को बढ़ावा देने और सीमा पार लेन-देन की सुविधा के लिए गैर-निवासियों तथा निवासियों को विशेष वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हैं।**
- भारत सरकार ने **गुजरात में GIFT मल्टी-सर्विसेज विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) में IFSC** का संचालन किया है। IFSCA ने **घरेलू क्षेत्रक के चार नियामकों अर्थात् RBI, SEBI, IRDAI एवं पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDAI) की शक्ति ग्रहण की है।**
- **इसने इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन ऑफ सिक्योरिटीज कमीशन (IOSCO) और इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ इंश्योरेंस सुपरवाइजर्स (IAIS) के साथ बहुपक्षीय सहयोग समझौते** किए हैं।
- इसने **दुबई, कतर, अबू धाबी, फ्रांस, सिंगापुर, स्वीडन और लक्जमबर्ग** के साथ **द्विपक्षीय सहयोग** समझौते किए हैं।

बीमा बाजार

- **भारत में बीमा की पहुंच सहस्राब्दी** के आरंभ के आस-पास 2.7% के स्तर पर थी। यह **2020 में** बढ़कर **4.2% के स्तर पर आ गई है और 2021 में भी समान बनी रही है।**
- वर्ष 2021 में **भारत में जीवन बीमा की पहुंच** 3.2% थी, जो उभरते बाजारों की तुलना में लगभग दोगुनी और **वैश्विक औसत से थोड़ी अधिक थी।**
  - हालांकि, **भारत में बेचे जाने वाले अधिकांश जीवन बीमा उत्पाद बचत से जुड़े होते हैं**, जिसमें सुरक्षा घटक का अंश बहुत कम होता है। इसलिए इसके कारण **प्राथमिक अर्जकों (Primary breadwinners)** की असामयिक मृत्यु की स्थिति में **पॉलिसी धारकों को उल्लेखनीय वित्तीय अंतराल** का सामना करना पड़ता है।

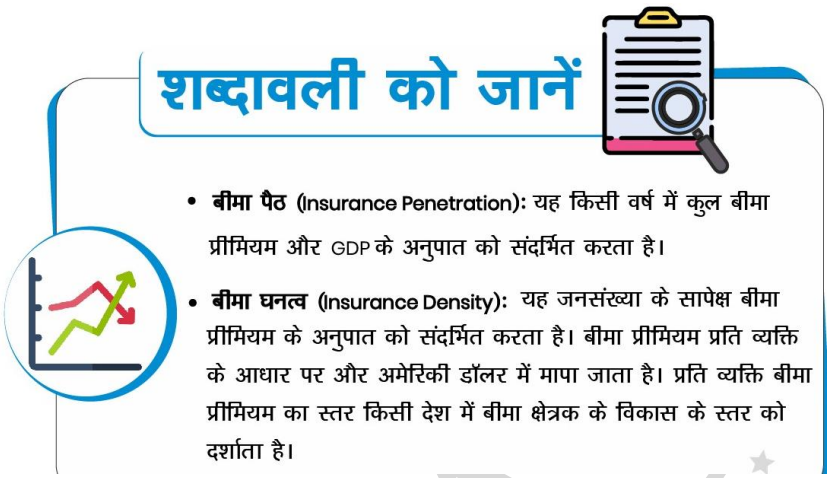

- **भारत में बीमा घनत्व** 2001 के 11.1 अमेरिकी डॉलर से **बढ़कर 2021 में 91 अमेरिकी डॉलर हो गया है।** जीवन बीमा के लिए यह घनत्व 69 अमेरिकी डॉलर था और गैर-जीवन बीमा 2021 में 22 अमेरिकी डॉलर था।

सरकारी बीमा योजनाएं और उनकी प्रगति

	योजना	उपलब्धि	
Ayushman Bharat Yojana	आयुष्मान भारत योजना	लाभार्थियों को 19.6 करोड़ आयुष्मान कार्ड प्रदान किए गए हैं।	4.3 करोड़ लाभार्थियों ने इसका लाभ उठाया है।
Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana	प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना	31.3 करोड़ लाभार्थियों को नामांकित किया गया है।	1.07 लाख दावों का वितरण किया गया है।
Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana	प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना	14.4 करोड़ लाभार्थियों को नामांकित किया गया है।	6.3 लाख दावों का वितरण किया गया है।
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना	प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना	2016 से 2022 के बीच लगभग 2,700 लाख आवेदन प्राप्त हुए।	2016 से 2022 के बीच 1.3 लाख करोड़ रुपये के दावों का भुगतान किया गया।

- वित्त वर्ष 2022 में **जीवन बीमा प्रीमियम में 10.2% की वृद्धि दर्ज की गई।** ऐसी उम्मीद है कि भारत वर्ष 2032 तक बीमा बाजार के संबंध में शीर्ष 6 देशों में शामिल होगा।

पेंशन क्षेत्रक

- NPS और APY की शुरुआत के बाद से **भारत के पेंशन क्षेत्रक का विस्तार हुआ है।**
- NPS और APY के तहत **पेंशन में आबादी का कवरेज बढ़ा है।** कुल आबादी के हिस्से के रूप में यह वित्त वर्ष 2017 के दौरान 1.2% से बढ़कर वित्त वर्ष 2022 3.7% हो गया है।
- **वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (Financial Stability and Development Council: FSDC) के तत्वावधान में पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (Pension Fund Regulatory Development Authority: PFRDA)** ने उपभोक्ताओं को सुविचारित निर्णय लेने तथा औपचारिक वित्तीय क्षेत्रक का लाभ उठाने में सक्षम बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

दृष्टिकोण

वित्तीय प्रणाली का लचीलापन बैंकों की स्वस्थ बैलेंस शीट में परिलक्षित होता है। ऋण वृद्धि में बढ़ोतरी और GNPA में कमी, NBFC का बेहतर प्रदर्शन, IBC प्रक्रिया द्वारा सक्षम बेहतर 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' इस लचीलेपन के द्योतक हैं।

अध्याय - एक नजर में

- **वैश्विक स्तर पर उच्च मुद्रास्फीति** और **सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं ने** मूल्य वृद्धि को कम करने के लिए **सख्त मौद्रिक नीति को अपनाया।**
- **RBI ने रेपो रेट को 225 Bps तक** (4% से 6.25%) बढ़ा दिया, जिसने बाजार में मुद्रा आपूर्ति को मजबूत किया।
- **बाजार में उधार और जमा दरों में वृद्धि हुई तथा सरकारी प्रतिभूतियों (T-Bills और SDLs सहित) में ट्रेडिंग वॉल्यूम दो वर्ष के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया।** इसमें 6.3% की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर्ज की गई है।
- **बैंकिंग क्षेत्रक ने अच्छा प्रदर्शन किया है।** बैंकों के मुनाफे और परिसंपत्ति की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है तथा उनका GNPA भी कम हो गया।
- **NBFCs ने अच्छा प्रदर्शन किया है।** GNPA में कमी के साथ-साथ ऋण वितरण में उनकी हिस्सेदारी में वृद्धि हुई।
- **देश में अब तक का सबसे बड़ा IPO** (LIC का) **जारी किया गया** और इक्विटी जारी करने वाले SMEs की संख्या में दो गुना वृद्धि हुई। साथ ही, इन SMEs द्वारा जुटाई गई राशि में तीन गुना वृद्धि हुई।
- विश्व में **भारत सबसे तेजी से बढ़ते बीमा बाजारों में से एक बना हुआ है** और इसके जीवन बीमा प्रीमियम में 10.2% की वृद्धि दर्ज की गई है।
- वित्त वर्ष 2018 से वित्त वर्ष 2022 के बीच **पेंशन ग्राहकों की संख्या तीन गुने से अधिक हो गई है।**

बजट में क्या कहा गया है?

कृषि ऋण: 6,000 करोड़ रुपये के लक्षित निवेश के साथ पी.एम. मत्स्य संपदा योजना के तहत एक नई उप–योजना शुरू की जाएगी।

MSMEs के लिए क्रेडिट गारंटी: इससे 2 लाख करोड़ रुपये के जमानत/संपार्श्विक (Collateral) मुक्त गारंटीकृत ऋण उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। इसके अलावा ऋण की लागत में भी लगभग 1 प्रतिशत की कमी आएगी।

राष्ट्रीय वित्तीय सूचना रजिस्ट्री: इसे वित्तीय और सहायक सूचनाओं के केंद्रीय भंडार के रूप में कार्य करने हेतु स्थापित किया जाएगा। यह ऋण के कुशल प्रवाह की सुविधा प्रदान करेगा, वित्तीय समावेशन तथा वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देगा।

वित्तीय क्षेत्रक के विनियम: वित्तीय क्षेत्रक के विनियामकों से मौजूदा विनियमों की व्यापक समीक्षा करने का अनुरोध किया जाएगा। इसका उद्देश्य अनुपालन को आसान, सुगम बनाना और उससे संबंधित लागत को कम करना है।

डेटा एम्बेसी: डिजिटल निरंतरता को बनाए रखने संबंधी समाधान ढूंढने वाले देशों के लिए GIFT–IFSC (गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक – इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विसेज सेंटर) में उनके डेटा एम्बेसी की स्थापना में मदद प्रदान की जाएगी।

प्रतिभूति बाजार में क्षमता निर्माण (Capacity Building in Securities Market): सेबी को **राष्ट्रीय प्रतिभूति** बाजार संस्थान में शिक्षण मानदंडों और मानकों को तैयार करने, विनियमित करने, बनाए रखने तथा लागू करने का अधिकार दिया जाएगा।

अध्याय 4

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. 2022-23 में भारत में G-Sec बाजार के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दो वर्षों के ठहराव के बाद 2022 में 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड पर प्रतिफल में वृद्धि हुई थी।
2. 2022 में G-Sec के व्यापार का आकार दो वर्षों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था।
3. समग्र रूप से विदेशी बैंक और प्राथमिक डीलर द्वितीयक बाजार में G-Sec के निवल विक्रेता रहे थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 3
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

2. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. GDP के अनुपात के रूप में NBFCs के क्रेडिट में लगातार वृद्धि हो रही है।
2. NBFCs की संपत्ति की गुणवत्ता में लगातार सुधार हो रहा है।
3. NBFCs अपने ऋण का सबसे बड़ा हिस्सा औद्योगिक क्षेत्र में लगाना जारी रखे हुए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 2 और 3

3. 2022-23 में भारत के द्वितीयक बाजार के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अस्थिरता सूचकांक 2022-23 में भारत अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है।
2. इक्विटी श्रेणी और ऋण श्रेणी दोनों में निवल FPI बहिर्वाह देखा गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) 1 और 2 दोनों
(c) न तो 1, न ही 2
(d) केवल 2

4. स्थायी जमा सुविधा (SDF) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. तरलता समायोजन सुविधा (LAF) कॉरिडोर के नए फ्लोर रेट के रूप में रिवर्स रेपो रेट को प्रतिस्थापित किया गया।
2. SDF में संपार्श्विक की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

5. निम्नलिखित में से किसके परिणामस्वरूप मौद्रिक सख्ती चक्र की स्थिति उत्पन्न हो सकती है?

1. रेपो रेट में कमी
2. बैंक दर में वृद्धि
3. सीमांत स्थायी सुविधा (MFF) दर में कमी

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. जैसे-जैसे भारत विकास पथ पर आगे बढ़ रहा है, बीमा और पेंशन क्षेत्रक इसके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस संदर्भ में, हाल के दिनों में सरकार द्वारा इन दोनों क्षेत्रकों की पैठ बढ़ाने हेतु किए गए उपायों की चर्चा कीजिए।

Q2. अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केंद्र (IFC) से आप क्या समझते हैं? इसके महत्त्व की व्याख्या कीजिए और भारत में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केंद्र विकसित करने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर प्रकाश डालिए?

अध्याय 5: कीमतें और मुद्रास्फीति: नाजुक परिस्थितियों पर कामयाबी (Prices and Inflation: Successful Tight-Rope Walking)

परिचय

पिछले कुछ दशकों के बाद 2022 में **प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में एक बार फिर से उच्च मुद्रास्फीति** की स्थिति देखी गई है। सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने मिलकर भारत में कीमतों में वृद्धि को नियंत्रित करने हेतु निर्णायक उपाय किए हैं। **अप्रैल 2022 में भारत की खुदरा मुद्रास्फीति दर 7.8% पर पहुंच गई थी।**

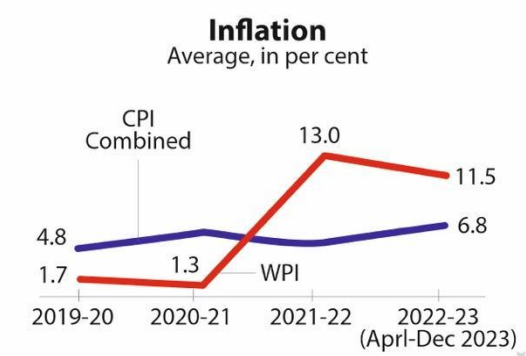

हालांकि, भारत में मुद्रास्फीति की दर इसकी लक्षित सीमा के ऊपरी स्तर को पार कर गई थी। इसके बावजूद, भारत में प्रचलित मुद्रास्फीति की दर पूरी दुनिया की न्यूनतम दरों में से एक थी। **RBI, अर्थव्यवस्था की मैक्रोइकोनॉमिक स्थिति की सक्रिय रूप से निगरानी कर रही है ताकि मूल्य वृद्धि को कम करने हेतु आवश्यक समायोजन किए जा सकें।**

शब्दावली को जानें

- **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI):** CPI के तहत किसी देश की खुदरा मुद्रास्फीति की गणना की जाती है। इसे "मार्केट बास्केट" के रूप में भी जाना जाता है। इसके तहत घरेलू इस्तेमाल की वस्तुओं की खुदरा कीमतों में बदलाव को ट्रैक किया जाता है।

वैश्विक परिदृश्य

आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों की क्रमिक रिकवरी के साथ, इस समय दुनिया रूस और यूक्रेन के बीच जारी संघर्ष से जूझ रही है। इससे कच्चे तेल और अन्य वस्तुओं की कीमतों में उछाल आया है तथा **दुनिया के सामने मुद्रास्फीतिजनित मंदी का खतरा पैदा हो गया है। नतीजतन इसने केंद्रीय बैंकों को तत्काल रूप से सख्त मौद्रिक कदम उठाने के लिए मजबूर किया है।**

खाद्य वस्तुओं द्वारा संचालित खुदरा मुद्रास्फीति

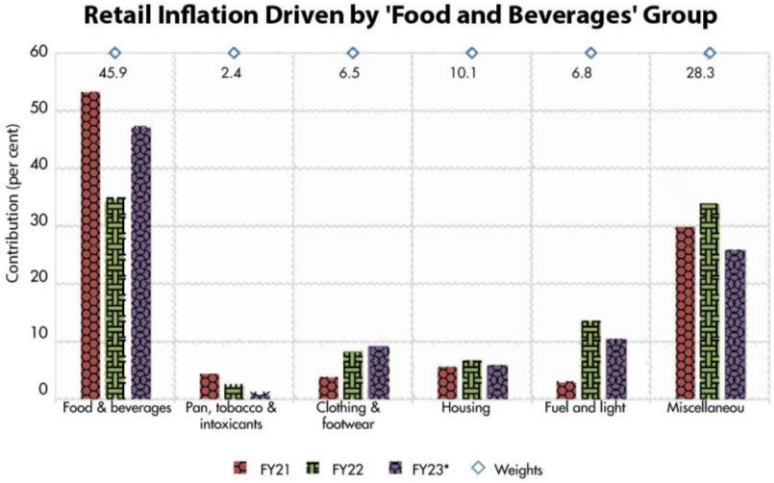

- **CPI मुद्रास्फीति (खुदरा मुद्रास्फीति): 2022 में भारत में खुदरा मुद्रास्फीति के तीन चरण देखे** गए हैं। अप्रैल 2022 में यह अपने **चरम स्तर 7.8%** पर पहुंच गई। इसके बाद अगस्त 2022 में यह 7.0% पर स्थिर बनी रही। दिसंबर 2022 के अंत में इसमें गिरावट आयी और यह घटकर लगभग 5.7% पर पहुंच गई।
  - खुदरा मुद्रास्फीति मुख्य रूप से खाद्य वस्तुओं की महंगाई से प्रेरित थी। हालांकि, कोर मुद्रास्फीति मध्यम स्तर पर बनी रही।
- **उच्च खाद्य मुद्रास्फीति:** उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (CFPI) के अनुसार, खाद्य मुद्रास्फीति **वित्त वर्ष 2012 के 3.8% से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में 7.0% पर पहुंच** गई है। इस दौरान सब्जियों, अनाज, दूध और मसालों की कीमतों में व्यापक वृद्धि दर्ज की गई है।
- **खाद्य तेल की बढ़ती कीमतें: अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के दबाव ने** दुनिया भर में **खाद्य तेल की कीमतों को प्रत्यक्ष रूप** से प्रभावित किया है।
  - **भारत अपने खाद्य तेलों की 60% मांग को आयात के माध्यम से पूरा करता है।**

आवश्यक खाद्य वस्तुओं में मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के उपाय

- **अनाज: मैदा और सूजी के साथ-साथ गेहूं के आटे के निर्यात को विनियमित** किया गया है। सरकार ने पारब्वॉयल्ड (हल्के उबले) राइस को

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

छोड़कर, चावल, ब्राउन राइस और सेमी-मिल्ड के साथ-साथ पूरी तरह से मिल्ड चावल पर 20% का निर्यात शुल्क लगाया है।

- **दालें: मूल्य स्थिरीकरण के लिए दालों का बफर स्टॉक बनाए** रखा गया है। दालों की कीमतों को काबू करने के लिए बाजार में दालों की नियंत्रित रिलीज की गई है।
- **खाद्य तेल:** जमाखोरी, कालाबाजारी जैसे किसी भी अनुचित व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए **रिफाइंड पाम ऑयल और क्रूड पाम ऑयल पर मूल शुल्क को घटा दिया गया है।** बाजार में, **अधिसूचना के माध्यम से सभी खाद्य तेलों और तिलहन के लिए स्टॉक सीमा निर्धारित की गई है।**

ग्रामीण-शहरी मुद्रास्फीति अंतराल में गिरावट आई है

- अधिकांश राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में **शहरी मुद्रास्फीति की तुलना में ग्रामीण मुद्रास्फीति अधिक दर्ज** की गई है।
- चालू वित्त वर्ष के दौरान **ग्रामीण ईंधन मुद्रास्फीति तुलनात्मक रूप से शहरी ईंधन मुद्रास्फीति से कम** रही है।

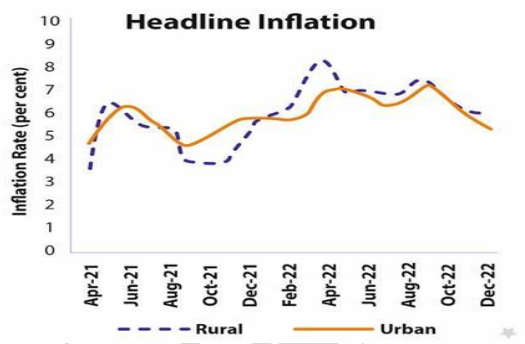

घरेलू थोक मूल्य मुद्रास्फीति

- वित्त वर्ष 2022 में आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और यूक्रेन-रूस संघर्ष के परिणामस्वरूप **थोक मूल्य मुद्रास्फीति (WPI) की दर** लगभग 13.0% तक पहुंच गई थी।
- पेट्रोलियम उत्पादों, मूलभूत धातुओं, रसायनों और रासायनिक उत्पादों तथा खाद्य तेलों जैसी वस्तुओं की कीमतें **अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में होने वाली मूल्य वृद्धि से प्रभावित रही हैं।**
- **विनियामक कार्रवाइयों की मदद से WPI** को 2022 के मध्य में 16.6% के इसके शीर्ष स्तर से घटाकर वर्ष के अंत तक 5.0% स्तर तक लाया गया है।

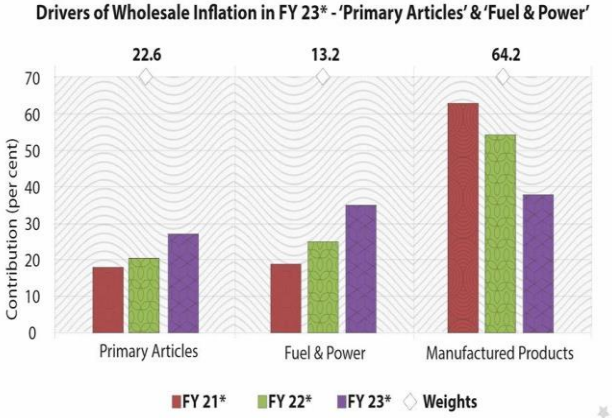

Source: Office of Economic Adviser, DPIIT
Note: *April-December

शब्दावली को जानें

- **थोक मूल्य मुद्रास्फीति सूचकांक** (WPI): इसके अंतर्गत वस्तुओं को खुदरा कीमतों पर बेचे जाने से पहले वस्तुओं के कुल कीमत (थोक मूल्य) में बदलाव को मापा जाता है।

इनपुट कीमतों में मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के उपाय:

- **आयात शुल्क में कमी: प्लास्टिक उद्योग में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल, इस्पात के प्रमुख इनपुट्स** आदि पर आयात शुल्क को कम कर दिया गया है।
- **ईंधन पर उत्पाद शुल्क में कमी:** सरकार ने **पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क को कम** कर दिया है। इस कदम से ईंधन की कीमतों में होने वाली वृद्धि में कमी आई है।
- **सीमा-शुल्क में कमी: कट और पॉलिश किए गए हीरे और रत्नों, कपास** जैसी प्रमुख वस्तुओं पर सीमा-शुल्क में कटौती की गई है। इसके अलावा, सरकार ने पेट्रोलियम रिफाइनिंग के लिए **कुछ महत्वपूर्ण रसायनों,** जैसे- मेथनॉल, एसिटिक एसिड और अन्य भारी फीडस्टॉक्स पर सीमा-शुल्क को कम कर दिया है।

WPI और CPI मुद्रास्फीति का अभिसरण

- **विचलन चरण:** WPI मुद्रास्फीति बेस इफेक्ट के प्रतिकूल होने के कारण दोहरे अंकों में पहुंच गई थी। इसलिए, WPI और CPI-C में **मार्च 2021 में विचलन आरंभ** हो गया था। वहीं दूसरी तरफ, CPI-C मुद्रास्फीति स्थिर रही। नतीजतन, नवंबर 2021 में **इन दोनों के बीच का अंतर 10% के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था।**
- **अभिसरण चरण:** WPI और CPI सूचकांकों के बीच अभिसरण मुख्य रूप से दो कारकों से प्रेरित था:

- सबसे पहले, क्रूड ऑयल, लोहा, एल्युमीनियम और कपास जैसी **वस्तुओं की मुद्रास्फीति में कमी के** कारण थोक मूल्य सूचकांक कम हुआ।
- दूसरा, **सेवाओं की कीमतों में बढ़ोतरी के** कारण CPI मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई।

मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं (Expectations) में गिरावट

- **महत्व:** मुद्रास्फीति के नियंत्रण के पथ का निर्धारण करने में **मुद्रास्फीति प्रत्याशाएं** निर्णायक होती हैं। RBI ने **मुद्रास्फीतिक प्रत्याशाओं की सीमा तय करके देश की मुद्रास्फीति के प्रक्षेप-पथ को निर्देशित करने में मदद** की है।
- **रुझान:** व्यवसायों द्वारा आगामी वर्ष की मुद्रास्फीतिक प्रत्याशाओं में वर्तमान वित्त वर्ष में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। इसी प्रकार, घरेलू मुद्रास्फीति प्रत्याशा में भी कमी आई है।

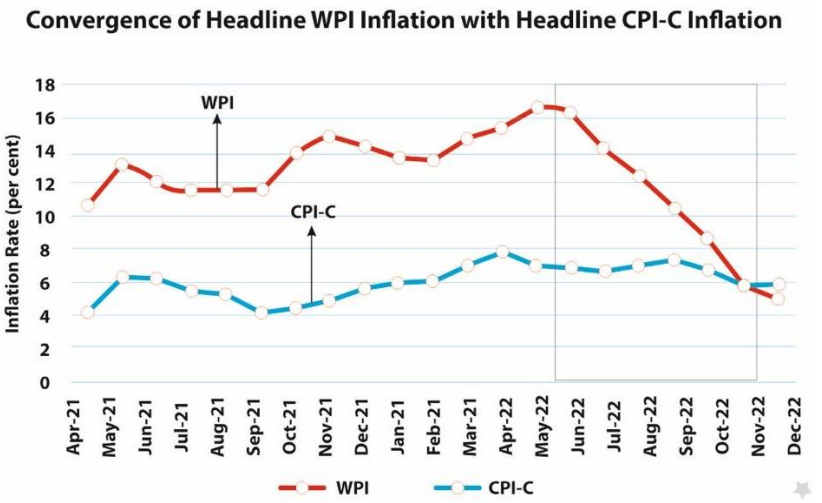

मूल्य स्थिरता के लिए मौद्रिक नीतिगत उपाय

RBI की मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने मई और दिसंबर 2022 के बीच चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF) के अंतर्गत **नीतिगत रेपो दर** को 2.25% (225 आधार अंक) **बढ़ाकर 4.0% से 6.25% कर** दिया है। इससे बाजार में उपलब्ध तरलता में कमी आ गई है।

वर्तमान मुद्रास्फीति 1970 के दशक से किस तरह अलग है?

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और मुद्रास्फीति **1970 के दशक** (विशेष रूप से 1973 और 1979 में तेल संकट के बाद) में **अनुभव की गई प्रवृत्तियों के समान है।** यद्यपि **संकट का वातावरण और तीव्रता अलग-अलग मामलों** में निम्नलिखित रूप से भिन्न है:

- **हाल ही में, तेल की कीमतों में बढ़ोतरी 1970 के दशक के संकट के स्तर से आनुपातिक रूप से कम है।**
- हाल के संकट में कृषि वस्तुओं, उर्वरकों और धातुओं जैसी **अधिकांश वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी दर्ज की** गई है। वहीं, **1970 का संकट केवल तेल की कीमतों तक ही सीमित था।**
- 1970 के दशक की तुलना में **कीमतों की हालिया वृद्धि में वस्तु आपूर्ति व्यवधानों** की **भूमिका अपेक्षाकृत सीमित रही है।**
- **वर्तमान वैश्विक मुद्रास्फीति में अत्यधिक वृद्धि कई वर्षों से लगातार विद्यमान निम्न मुद्रास्फीति के बाद शुरू हुई है।** इसके विपरीत, **1973 का संकट लगातार बढ़ती वैश्विक मुद्रास्फीति की पृष्ठभूमि** में शुरू हुआ था।
- 1970 के दशक के विपरीत, केंद्रीय बैंकों के पास वर्तमान में काफी स्पष्ट और अधिक मजबूत संस्थागत ढांचा मौजूद है, जो मूल्य स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता है।

आवासन मूल्य: महामारी के बाद उभरता आवासन क्षेत्रक

आवास की कीमतें अर्थव्यवस्था की स्थिति पर उपयोगी जानकारी प्रदान करती हैं। आवास की कीमतों की निगरानी मूल्य स्थिरता, वित्तीय स्थिरता और विकास उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

- **सूचकांक: राष्ट्रीय आवास बैंक (NHB)** वित्त वर्ष 2018 को आधार वर्ष मानकर दो आवास मूल्य सूचकांक (HPI) क्रमशः **'HPI मूल्यांकन मूल्य'** और **'HPI बाजार मूल्य त्रैमासिक'**

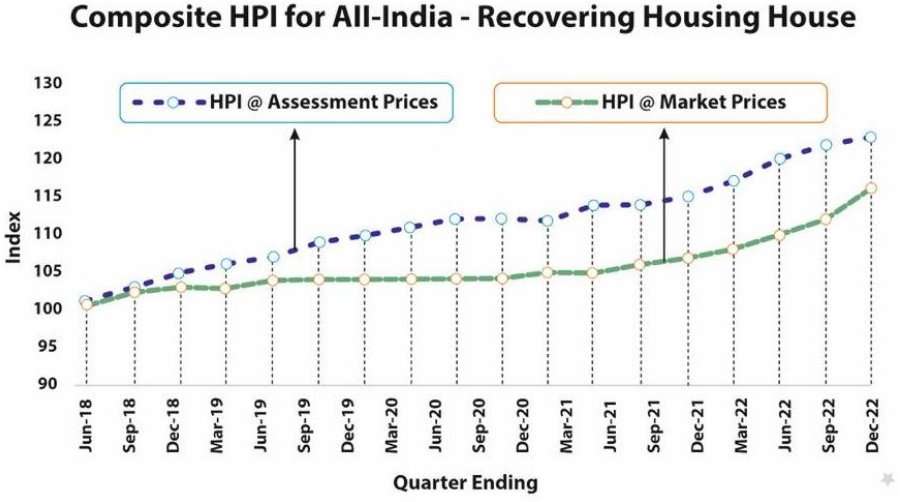

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

प्रकाशित करता है। इनमें भार के रूप में शहरों की आबादी का उपयोग करके संपूर्ण भारत के 50 शहरों के लिए एक समग्र सूचकांक की गणना की जाती है।

- **HPI बाजार मूल्य में समग्र वृद्धि:** पिछले दो वित्त वर्षों में 50 में से 43 शहरों में उपर्युक्त सूचकांक में वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि 7 शहरों में गिरावट देखी गई।
- **HPI मूल्यांकन मूल्य में समग्र वृद्धि:** पिछले दो वित्त वर्षों से पता चला है कि 50 शहरों में से 46 शहरों में सूचकांक में वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि 4 शहरों में गिरावट देखी गई।

शब्दावली को जानें

- **बाजार मूल्य:** यह वह कीमत है जिस पर संपत्ति खुले बाजार में बेची जाती है।
- **अंकित मूल्य (Assessed Price):** अंकित मूल्य, संपत्ति कर के उद्देश्य से किसी घर या रियल एस्टेट के अन्य भागों के लिए निर्धारित किया जाने वाला एक मूल्य है। इसमें अन्य कारकों के साथ-साथ क्षेत्र में तुलनात्मक संपत्तियों के मूल्य को भी ध्यान में रखा जाता है।

फार्मास्यूटिकल मूल्य निर्धारण को नियंत्रण में रखना

- **विनियमन:** बाजार में दवाओं की कीमतों के विनियमन के मूल सिद्धांत **राष्ट्रीय फार्मास्यूटिकल मूल्य निर्धारण नीति, 2012** पर आधारित हैं। इस नीति को **फार्मास्यूटिकल्स विभाग** द्वारा प्रशासित किया जाता है।
- **मूल्य सीमा और निश्चित मूल्य:** दिसंबर 2022 तक, **राष्ट्रीय आवश्यक दवा सूची, 2022 के तहत लगभग 119 फॉर्मूलेशंस की अधिकतम कीमतों का निर्धारण किया गया है।**
  - इस सूची के अलावा, **औषधि (मूल्य नियंत्रण) आदेश 2013 के तहत 2,196 फॉर्मूलेशंस के लिए खुदरा मूल्य निर्धारित किए गए हैं।**
- **प्रधान मंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (PMBJP)** सभी को कम कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराने के लिए शुरू की गई थी।
  - इसके तहत, सस्ती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराने के लिए **जनऔषधि केंद्र** खोले गए हैं।
  - **देश भर में 9000 से अधिक जनऔषधि केंद्र खोले गए** हैं। इनमें **बिक्री के लिए 1759 दवाएं और 280 शल्य चिकित्सा उपकरण उपलब्ध हैं।**

निष्कर्ष

भारत का मुद्रास्फीति प्रबंधन काफी उल्लेखनीय रहा है। वहीं, विकसित अर्थव्यवस्थाएं अब भी उच्च मुद्रास्फीति दर से जूझ रही हैं। RBI और सरकार ने समयबद्ध हस्तक्षेप के माध्यम से मूल्य वृद्धि को काफी हद तक नियंत्रित कर लिया है। इसलिए यह अनुमान लगाया जा रहा है कि वित्त वर्ष 2024 में मुद्रास्फीति का जोखिम इस वर्ष की तुलना में बहुत कम चुनौतीपूर्ण होगा।

अध्याय - एक नज़र में

- अलग-अलग वैश्विक मापदंडों की परिणामी वैश्विक मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति के अनुरूप भारत की **घरेलू खुदरा मुद्रास्फीति 7.8% के चरम स्तर** पर पहुंच गई।
- **खाद्य मुद्रास्फीति अधिक** थी। इसने शहरी मुद्रास्फीति की तुलना में **उच्च ग्रामीण मुद्रास्फीति में योगदान देने में प्रमुख भूमिका निभाई।**
- कई उपायों और अनुकूल परिस्थितियों के बाद **अलग-अलग WPI और CPI दरों में** सकारात्मक बदलाव आया है।
- **आवास मूल्य सूचकांक ने भी सकारात्मक रुझान** दिखाया है जो इस बात को दर्शाता है कि आवासन बाजार गति पकड़ रहा है।
- **राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण नीति, 2012 और जनऔषधि केंद्रों** की स्थापना के जरिए अलग-अलग औषधियों तथा दवाओं की कीमतों को नियंत्रण में रखा गया है।

बजट में क्या कहा गया है?

फार्मास्युटिकल संबंधी नवाचार: फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रक में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्रों के जरिए एक नए कार्यक्रम को शुरू किया जाएगा।

रसायन और पेट्रो-रसायन: एथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम का समर्थन करने के लिए, डिनेचर्ड इथाइल अल्कोहल पर सीमा शुल्क में छूट दी जाएगी। इसके अलावा एसिड ग्रेड फ्लोरस्पार और क्रूड ग्लिसरीन पर सीमा शुल्क को घटाकर 2.5% किया जाएगा। इसके कच्चे तेल पर हमारी निर्भरता को कम करने और एथेनॉल की कीमत को कम करने के साथ-साथ विदेशी मुद्रा भंडार पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

अध्याय 5

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. 2022 में घरेलू खुदरा मुद्रास्फीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. हेडलाइन मुद्रास्फीति वर्ष के अंत तक अपने शीर्ष से नीचे आ गई थी।
2. खुदरा मुद्रास्फीति का मुख्य कारण खाद्य मुद्रास्फीति थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2022-23 में थोक मूल्य मुद्रास्फीति (WPI) की दर 10% से अधिक हो गई है।
2. अंतर्राष्ट्रीय मूल्य निर्धारण के प्रति अधिकतम एक्सपोज़र वाली वस्तुओं के मूल्य में घरेलू WPI में वृद्धि हुई थी।
3. ग्रामीण ईंधन मुद्रास्फीति अपने शहरी समकक्ष की तुलना में कम रही है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 2
(d) 1, 2 और 3

3. 21 महीने के अंतराल के बाद, नवंबर 2022 में WPI और CPI सूचकांकों के बीच अभिसरण देखा गया था। इस संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से प्रेरक कारक है/हैं?

1. कच्चा तेल, लोहा, एल्यूमीनियम और कपास जैसी मदों की मुद्रास्फीति में वृद्धि के कारण थोक मूल्य सूचकांक कम हुआ है।
2. सेवाओं की कीमतों में कमी के कारण CPI मुद्रास्फीति में गिरावट आई है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

4. वर्तमान मुद्रास्फीति 1970 के दशक से किस प्रकार भिन्न है?

1. तेल के मूल्य में हालिया वृद्धि 1970 के दशक के संकट के स्तर की तुलना में आनुपातिक रूप से कम है।
2. हालिया संकट के दौरान वस्तुओं की व्यापक श्रेणी में कीमतों में वृद्धि देखी गई है, जबकि 1970 का संकट केवल तेल की कीमतों में वृद्धि तक ही सीमित था।
3. 1970 के दशक की तुलना में, कीमतों की हालिया वृद्धि में जिस आपूर्ति व्यवधानों की अल्प भूमिका रही है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 2 और 3

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

(c) केवल 1 और 2

(d) केवल 1 और 3

5. हाउसिंग प्राइस इंडेक्स के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा जारी किया जाता है।
2. इसकी गणना वित्तीय वर्ष 2012 को आधार वर्ष मानकर की जाती है।
3. इसकी गणना संपूर्ण भारत के केवल महानगरीय शहरों के लिए शहरी जनसंख्या का भार के रूप में उपयोग करके की जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 2 और 3

(b) केवल 1

(c) केवल 1 और 2

(d) केवल 1 और 3

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. चालू वर्ष में अभूतपूर्व वैश्विक मुद्रास्फीति 1973 और 1979 के तेल संकट के दुष्परिणाम के अनुभव जैसी प्रतीत होती है। इस संदर्भ में चर्चा कीजिए कि वर्तमान मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति 1970 के दशक के रुझान से कैसे भिन्न है।

Q2. बढ़ती खाद्य मुद्रास्फीति के कारणों पर चर्चा कीजिए। साथ ही, आवश्यक खाद्य पदार्थों की कीमतों को कम करने के लिए भारत सरकार द्वारा किए गए उपायों का उल्लेख कीजिए।

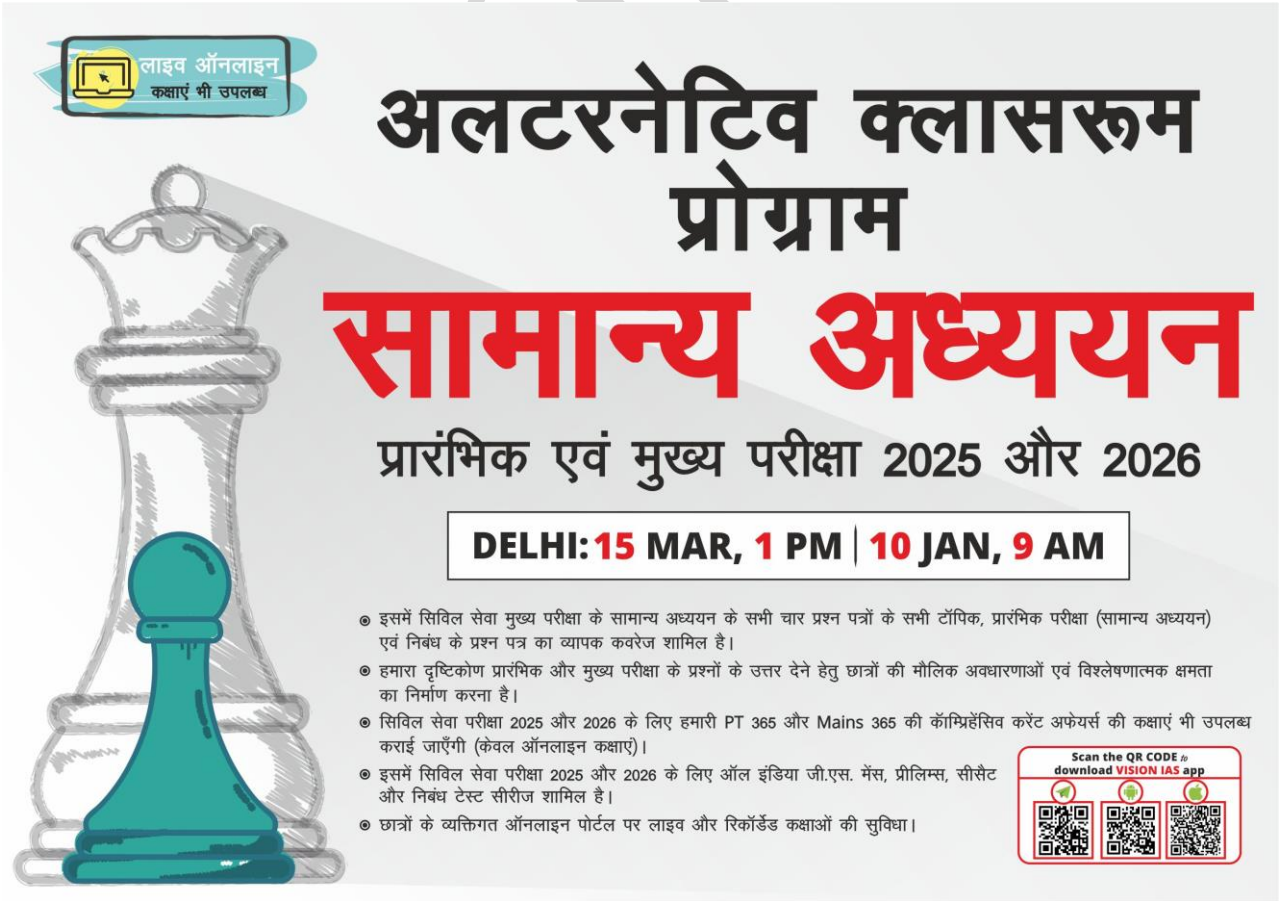

अध्याय 6: सामाजिक अवसंरचना और रोजगार: व्यापक व्यवस्था (Social Infrastructure and Employment: Big Tent)

परिचय

विभिन्न वैश्विक कारकों की वजह से नागरिकों के सामाजिक कल्याण के प्रमुख पहलुओं जैसे- स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा आदि पर दबाव देखा गया। इन दबावों के बीच **सरकार ने मानव विकास के दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित किया और "सबका साथ, सबका विकास"** की अवधारणा पर बल दिया। इसके परिणामस्वरूप SDG लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रगति हुई है। साथ ही बेहतर जीवन को प्रभावित करने वाले अधिकांश क्षेत्रों में निरंतर सुधार हुआ है।

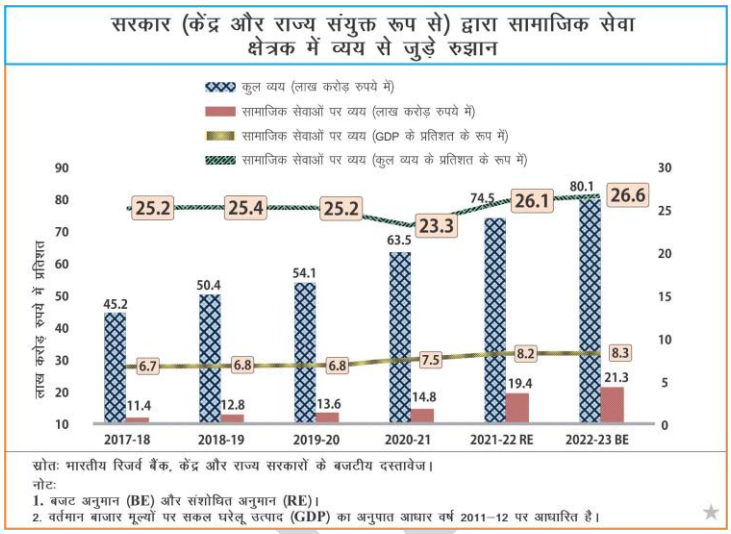

इसी तरह **मानव पूंजी निर्माण के मोर्चे पर भी सुधार दिखाई देता है। शिक्षा और स्वास्थ्य के जुड़वां स्तंभों को वर्तमान एवं भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए जड़ से मजबूत किया जा रहा है।** ऐसा इसलिए किया जा रहा है क्योंकि ये सभी अधिक न्यायसंगत आर्थिक विकास प्राप्त करने की कुंजी हैं।

सामाजिक क्षेत्रक के बढ़ते महत्व के साथ तालमेल रखते हुए इस क्षेत्रक में व्यय :

- सामाजिक सेवाओं पर कुल व्यय में स्वास्थ्य पर व्यय का हिस्सा वित्त वर्ष 2019 के **21% से बढ़ाकर वित्त वर्ष 2023 में 26% कर दिया गया है।**
- **वित्त वर्ष 2023 में स्वास्थ्य व्यय GDP का 2.1% है** जबकि वित्त वर्ष 2022 में यह 2.2% था।
    - **राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति-2017 ने** वर्ष 2025 तक स्वास्थ्य पर व्यय का हिस्सा बढ़ाकर **सकल घरेलू उत्पाद का 2.5% करने की सिफारिश** की है।

मानव विकास मापदंडों में सुधार की स्थिति

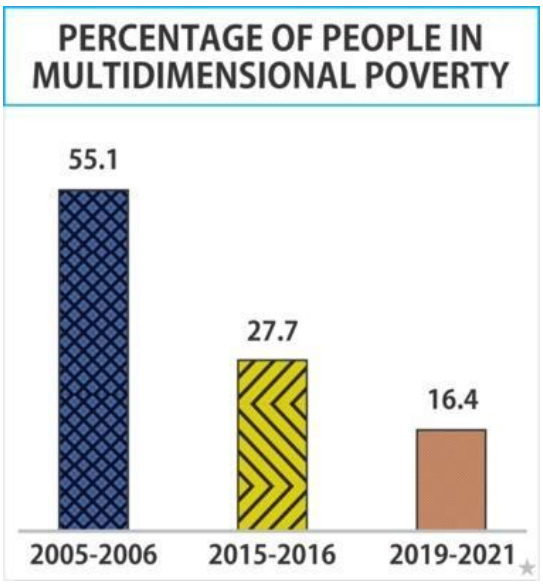

- **खराब वैश्विक HDI स्तर:** संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की रिपोर्ट के अनुसार, 90% देशों ने 2020-21 और 2021-22 के बीच अपने मानव विकास सूचकांक (HDI) में गिरावट दर्ज की है।
- 2021/2022 की HDI रिपोर्ट में **भारत 191 देशों में 132वें स्थान पर रहा** और भारत का HDI मूल्य 2021 में 0.633 था। यह विगत वर्ष के मूल्य से कम है।
- **लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) में भारत 122वें स्थान पर है।** भारत का स्कोर दक्षिण एशियाई क्षेत्र से बेहतर और वैश्विक औसत के करीब था।
    - **UNDP के बहुआयामी गरीबी सूचकांक (Multidimensional Poverty Index) के अनुसार, भारत की 16.4% आबादी बहुआयामी रूप से गरीब है।** साथ ही अतिरिक्त 18.7% लोगों को बहुआयामी गरीबी के प्रति संवेदनशील लोगों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

आकांक्षी जिला कार्यक्रम (Aspirational Districts Program) में बदलाव

- नीति आयोग ने 'वर्ष 2022 तक न्यू इंडिया विजन' के एक भाग के रूप में विभिन्न समग्र संकेतकों के आधार पर 28 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों से **117 आकांक्षी जिलों (AD) की पहचान की थी।**

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **कार्यक्रम की उपलब्धियां:**
  - **स्वास्थ्य और पोषण:** कई आकांक्षी जिलों ने स्वास्थ्य और पोषण से जुड़े कई संकेतकों में **अपने राज्य के औसत मूल्य से बेहतर प्रदर्शन** किया है।
  - **वित्तीय समावेशन:** कुछ आकांक्षी जिलों ने **गैर-आकांक्षी जिलों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन** किया है।
  - **शासन: आकांक्षी जिले** विशेष रूप से दूरस्थ और कठिन क्षेत्रों में **सुशासन के मॉडल के रूप में उभरे हैं।**
    - आकांक्षी जिलों की डिजाइन की तर्ज पर दो और कार्यक्रमों की परिकल्पना की गई है। इनके नाम हैं- **'मिशन उत्कर्ष'** और **'एस्पिरेशनल ब्लॉक प्रोग्राम'।**

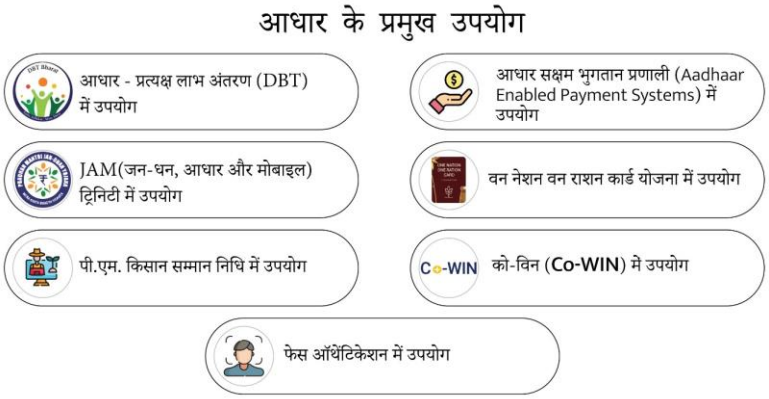

प्रगतिशील श्रम सुधार उपाय

- 25 राज्यों ने सभी **श्रम संहिताओं पर मसौदा** नियमों को पहले ही प्रकाशित कर दिया है।
- **श्रम और रोजगार मंत्रालय (MoLE)** ने असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डेटाबेस बनाने के लिए **ई-श्रम पोर्टल** विकसित किया है।
  - इसमें **28.5 करोड़ से अधिक असंगठित श्रमिकों को पंजीकृत** किया गया है। इनमें से अधिकांश नामांकन कृषि, घरेलू और निर्माण श्रमिकों द्वारा किए गए हैं।

आधार: विशिष्ट पहचान पत्र की कई उपलब्धियां

- **भारत के डिजिटल एकीकरण की आधारशिला:** आधार (Aadhaar) प्रणाली राज्य द्वारा सामाजिक लाभ वितरण के लिए आवश्यक साधन के रूप में कार्य करती है।
- **उपयोग का विस्तार:** 318 केंद्रीय योजनाओं और 720 से अधिक राज्य DBT योजनाओं को आधार अधिनियम, 2016 की धारा 7 के तहत अधिसूचित किया गया है। ये सभी योजनाएं अपनी सेवाओं के लक्षित वितरण के लिए आधार प्रणाली का उपयोग करती हैं।

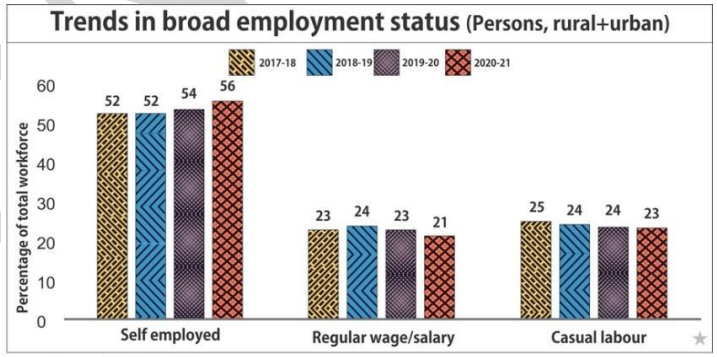

Source: Annual PLFS, MoSPI

रोजगार के रुझानों में सुधार:

- **रोजगार के रुझान** का दो पक्षों से अध्ययन किया जा सकता है:
  - **श्रम के आपूर्ति पक्ष** का अध्ययन सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) द्वारा आयोजित **आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (Periodic Labour Force Survey: PLFS)** जैसे घरेलू सर्वेक्षणों के माध्यम से किया जाता है, और
  - **श्रम के मांग पक्ष** का अध्ययन **MoSPI द्वारा किये गए उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण** (ASI), **श्रम ब्यूरो द्वारा त्रैमासिक रोजगार सर्वेक्षण** (QES) आदि सर्वेक्षणों के माध्यम से किया जाता है।
- **रोजगार का आपूर्ति पक्ष**
  - श्रम बाजार **कोविड के पहले के स्तरों से बेहतर स्थिति में** आ गए हैं: शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में, **बेरोजगारी दर 2018-19 की 5.8% से गिरकर 2020-21 में 4.2%** हो गई है।
  - **रोजगार संकेतकों में सुधार:** PLFS 2020-21 (जुलाई-जून) में **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR), श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) और बेरोजगारी दर** (UR) में **सुधार** हुआ है। यह सुधार ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में पुरुषों एवं महिलाओं, दोनों के संदर्भ में हुआ है।

महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) में मापन संबंधी मुद्दे

यह एक सामान्य धारणा है कि भारतीय महिलाओं की **श्रम बल भागीदारी दर** निम्न है। इसका कारण यह है कि LFPR में **गृहणियों के रूप में परिवार के स्तर पर और अंततः देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देने वाली कामकाजी महिलाओं की वास्तविकता को नहीं दर्शाया जाता** है। सर्वेक्षण में मापन संबंधी तीन मुख्य मुद्दों को रेखांकित किया गया है-

- **महिलाएं घरेलू काम-काज के साथ-साथ** जलावन लकड़ी का संग्रह, कुक्कुट पालन जैसे **उत्पादक कार्यों में भी संलग्न** हैं।
- वर्तमान सर्वेक्षण डिजाइन किसी व्यक्ति की श्रम शक्ति की स्थिति को मापने के लिए मुख्य रूप से एक प्रश्न पर निर्भर करता है। यह ILO की उन सिफारिशों के प्रतिकूल है, जिनमें व्यक्तियों की श्रम शक्ति की स्थिति की जांच करने के लिए कई परीक्षणों या रिकवरी प्रश्नों का उपयोग करने की अनुशंसा की गई है।
- **ILO के नवीनतम मानकों के अनुसार, उत्पादक कार्य को श्रम बल की भागीदारी तक सीमित करना एक संकीर्ण विचार** है और यह मापन श्रम को **केवल बाजार उत्पाद के रूप में** मापता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें महिलाओं के अवैतनिक घरेलू कार्य का मूल्य शामिल नहीं है, जिसे व्यय-बचत कार्य के रूप में देखा जा सकता है।

उपर्युक्त स्थिति को देखते हुए आर्थिक सर्वेक्षण में **"कार्य" के व्यापक मापन** की सिफारिश की गई है। इसमें **मात्रात्मक सुधार के लिए नई डिजाइन के सर्वे** को अपनाने की सिफारिश की गई है। इससे समावेशी एवं व्यापकता-आधारित विकास के लिए लैंगिक लाभांश का लाभ उठाया जा सकेगा।

महिला सशक्तीकरण में स्वयं सहायता समूहों (SHG) की भूमिका

- SHG आंदोलन, सामूहिक एकजुटता और माइक्रोफाइनेंस के सिद्धांतों पर आधारित है। यह आंदोलन 1972 में स्व-नियोजित महिला संघ के गठन से आरंभ हुआ था।
- SHG बैंक लिंकेज प्रोजेक्ट (SHG-BLP), को 1992 में शुरू किया गया था। यह दुनिया की सबसे बड़ी माइक्रोफाइनेंस परियोजना के रूप में उभरा है।

- **स्वयं सहायता समूहों को 'पंचसूत्र' का पालन अवश्य करना** चाहिए। ये 'पंचसूत्र' हैं; नियमित बैठकों का आयोजन, नियमित रूप से बचत करना, नियमित रूप से अंतर-ऋण (Inter-Loaning), समय पर ऋण का पुनर्भुगतान करना और बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए बहीखातों को अपडेट रखना।

स्वयं सहायता समूह (SHG) का नाम	कोविड के दौरान योगदान
झारखंड की **पत्रकार दीदी**	महामारी के संबंध में जागरूकता बढ़ाने हेतु।
उत्तर प्रदेश में **प्रेरणा कैंटीन**	सामुदायिक रसोई के संचालन हेतु।
पशु स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के लिए पशु सखी	कृषि आजीविका के समर्थन हेतु।
झारखंड में सब्जियों के लिए **आजीविका फार्म फ्रेश ऑनलाइन** बिक्री एवं वितरण	
कोविड–राहत DBT नकद अंतरण प्राप्ति के दौरान **बैंकों में भीड़ के प्रबंधन हेतु बैंक–सखी**	वित्तीय सेवाओं के वितरण हेतु।

- **महिला सशक्तीकरण के लिए स्वयं सहायता समूहों द्वारा निभाई गई भूमिका-**
  - **67 लाख SHGs को बिना किसी** कोलैटरल **(संपार्श्विक) के 1.51 लाख करोड़ का ऋण** प्राप्त हुआ है।
    - ✓ **PMGKY के तहत,** महिलाओं के SHGs के लिए **कोलैटरल-मुक्त ऋण की सीमा को `10 लाख से बढ़ाकर `20 लाख रुपये** कर दिया गया है। इससे 63 लाख महिला SHG और 6.85 करोड़ परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।
  - भारत में लगभग 1.2 करोड़ SHGs हैं, जिनमें से 88% में सभी सदस्य महिलाएं हैं।
  - **केरल में कुदुम्बश्री, बिहार में जीविका, महाराष्ट्र में महिला आर्थिक विकास महिला मंडल और लद्दाख में लूम्स** कुछ सफल SHGs हैं।
  - **कोविड के दौरान SHGs की सक्रियता:** SHGs **कोविड संकट के प्रबंधन में प्रमुख भागीदार** के रूप में उभरे। मास्क, सैनिटाइजर, सुरक्षात्मक उपकरण बनाने में अग्रणी रहे और महामारी के बारे में जागरूकता का भी प्रसार किया।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

रोजगार का मांग पक्ष

- **संगठित विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई।**
  - रोजगार की हिस्सेदारी के मामले में **खाद्य उत्पाद उद्योग (11.1%) सबसे बड़ा नियोक्ता** बना हुआ है। इसके बाद **परिधान (7.6%)** और **आधारभूत धातुओं (7.3%)** का स्थान रहा।
- राज्य-वार, **तमिलनाडु में कारखानों में नियोजित लोगों की संख्या सबसे अधिक थी**, उसके बाद **गुजरात और महाराष्ट्र का स्थान** आता है।
- **60% से अधिक कारखानों में 50 से कम कर्मचारी** कार्यरत पाए गए।
- **मनरेगा के तहत काम की मांग करने वाले लोगों की संख्या महामारी से पहले के स्तरों के आस-पास** स्थिर होती दिख रही थी।
  - **मनरेगा के तहत किए गए कार्यों की संख्या में भी विगत वर्षों में लगातार वृद्धि** हुई है।

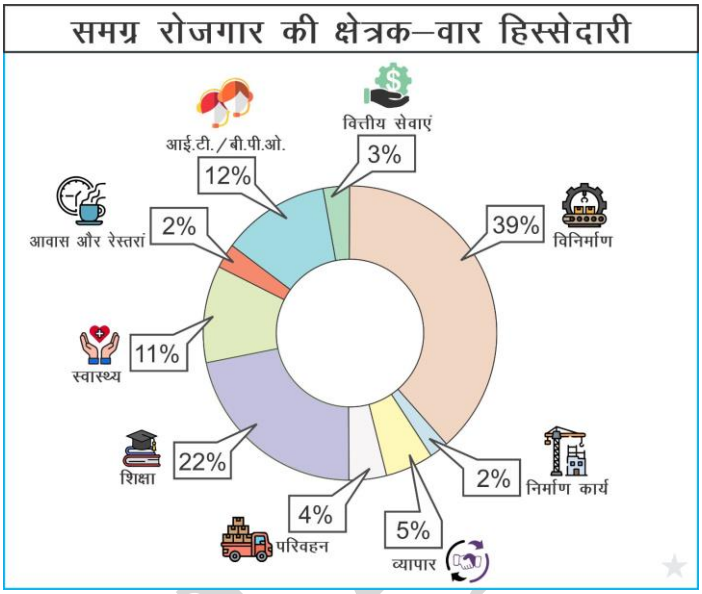

राष्ट्रीय करियर सेवा परियोजना (NCS)

- इस परियोजना को 2015 में शुरू किया गया था। यह **रोजगार और करियर से संबंधित कई प्रकार की सेवाएं प्रदान करने वाले वन-स्टॉप समाधान** के रूप में कार्य करती हैं।
- **नौकरी चाहने वाले 2.8 करोड़ लोगों** और **6.8 लाख नियोक्ताओं** ने NCS पोर्टल पर पंजीकरण कराया है।
- इसने **डिजिसक्षम कार्यक्रम के तहत निजी क्षेत्र के साथ भागीदारी** की है। इस भागीदारी का उद्देश्य नौकरी के इच्छुक लोगों को बेहतर कौशल प्रदान करने के लिए "करियर स्किल्स" पर मुफ्त, स्व-केंद्रित ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रशिक्षण देना है।
- NCS पोर्टल को **ई-श्रम, उद्यम और स्किल इंडिया पोर्टल** (ASEEM पोर्टल के प्राथमिक डेटा स्रोत) के साथ सफलतापूर्वक जोड़ा गया है। इसके परिणामस्वरूप एक बेहतर रोजगार परिवेश का विकास हुआ है।
- इसमें हाल ही में एक **'अंतर्राष्ट्रीय रोजगार' मॉड्यूल** जोड़ा गया है। यह विदेशों में नौकरी खोजना आसान बनाता है और कंपनियों को भारतीय कौशल का उपयोग करने में मदद करता है।

ग्रामीण मजदूरी के रुझान

- वित्त वर्ष 2023 के दौरान **नॉमिनल ग्रामीण मजदूरी स्थिर सकारात्मक दर से बढ़ी** है। पुरुषों के लिए 5.1% और महिलाओं के लिए 7.5% (अप्रैल-नवंबर 22 के बीच) की वृद्धि दर्ज की गई।
  - **गैर-कृषि क्षेत्रों में नॉमिनल मजदूरी की वृद्धि** नॉमिनल ग्रामीण मजदूरी की तुलना में कम थी।
- बढ़ी हुई मुद्रास्फीति के कारण **वास्तविक ग्रामीण मजदूरी में वर्तमान वृद्धि नकारात्मक** रही है।

सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) - 2020 की शुरुआत ने देश में शिक्षा व्यवस्था की सभी पहलुओं की समीक्षा और सुधार की नींव रखी है।

स्कूल नामांकन और ड्रॉपआउट

- वित्त वर्ष 2022 में **प्राथमिक-नामांकन और उच्च-प्राथमिक नामांकन के GER में सुधार** हुआ है। इससे वित्त वर्ष 2017-19 के बीच जो गिरावट और स्थिर प्रवृत्ति बनी हुई थी, उसको न केवल रोक दिया, वरन उसमें सुधार भी हुआ। इन समूहों में **लड़कियों का GER लड़कों की तुलना में अधिक** था।
- **पूर्व-प्राथमिक स्तर को छोड़कर** सभी स्तरों पर अर्थात् **प्राथमिक, उच्च-प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक में नामांकन में वृद्धि** हुई है। वित्त वर्ष 2022 में पूर्व-प्राथमिक स्तर में नामांकन 1.1 करोड़ से घटकर 1 करोड़ हो गया है।
- **ड्रॉपआउट दरों में हाल के वर्षों में सभी स्तरों पर लगातार गिरावट** देखी गई है।
- **छात्र-शिक्षक अनुपात में** वित्त वर्ष 2013 से वित्त वर्ष 2022 के मध्य लगातार **सभी स्तरों पर सुधार** हुआ है।

पहलें	अपेक्षित परिणाम
पीएम स्कूल फॉर राइज़िंग इंडिया (PM SHRI)	यह योजना कम से कम 14,500 PM SHRI स्कूल स्थापित करने के लिए केंद्र प्रायोजित योजना (CSS) के रूप में लॉन्च की गई थी। यह 2023-27 के बीच लगभग **20 लाख छात्रों/छात्राओं को लाभान्वित** कर सकती है।
केन्द्रीय विद्यालयों में बालवाटिका (पायलट प्रोजेक्ट) का शुभारंभ	ये **3-5 वर्ष के आयु वर्ग के छात्र/छात्राओं के लिए संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरण क्षमताओं के विकास** पर ध्यान देने के लिए प्रिपरेटरी कक्षाएं हैं।
स्क्रीनिंग टूल्स (मोबाइल ऐप) फॉर स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटीज ।	• **PRASHAST**, नामक **दिव्यांगता स्क्रीनिंग मोबाइल ऐप** लॉन्च किया गया है, जिसमें बेंचमार्क दिव्यांगता सहित 21 दिव्यांगता शामिल हैं। • यह ऐप स्कूल स्तर पर **दिव्यांगता की स्थिति की जांच करने में मदद करेगा**। साथ ही यह **समग्र शिक्षा के दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रमाणन प्रक्रिया शुरू करने के लिए स्कूलवार रिपोर्ट** तैयार करेगा।
स्ट्रैंथ इन टीचिंग लर्निंग एंड रिजल्ट फॉर स्टेट (STAR S)	• इस परियोजना को कुछ राज्यों में **केंद्र प्रायोजित योजना (CSS)** के रूप में कार्यान्वित किया जा रहा है। • इस योजना का उद्देश्य **स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता और प्रशासन में सुधार करना है।**
विद्यांजलि (स्कूल स्वयंसेवी पहल)	**विद्यांजलि पोर्टल** स्वयंसेवकों/संगठनों को सरकार और सहायता प्राप्त स्कूलों के साथ संवाद करने और उनसे सीधे जुड़ने में सक्षम बनाता है। यह उनके **ज्ञान और कौशल को साझा करता है** या स्कूलों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए संपत्ति, सामग्री या उपकरण के रूप में योगदान देता है।

उच्चतर शिक्षा

- **बड़ी संख्या में मेडिकल कॉलेज:** देश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या 2014 में 387 थी, जो 2022 में बढ़कर 648 हो गई है।
- **अतिरिक्त IITs और IIMs:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IITs) और भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIMs) की संख्या 2014 में क्रमशः 16 और 13 के मुकाबले 2022 में 23 और 20 हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर **विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़कर 1,113** तक पहुंच गयी है।
- वित्त वर्ष 2020 में **उच्चतर शिक्षा में GER 25.6% से बढ़कर** वित्त वर्ष 2021 में **27.3%** हो गया।

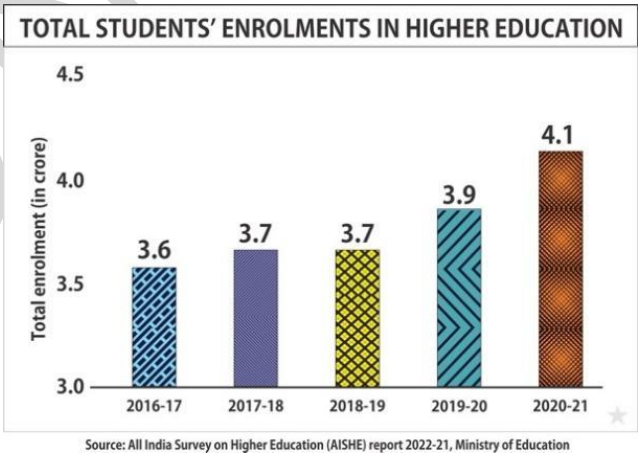

Source: All India Survey on Higher Education (AISHE) report 2022-21, Ministry of Education

पहलें	अपेक्षित परिणाम
उच्चतर शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ (RDC)।	इसे आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की दिशा में योगदान देने वाले गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है।
एक साथ दो शैक्षणिक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए दिशा-निर्देश	NEP 2020 में परिकल्पित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, **छात्रों को एक साथ दो शैक्षणिक कार्यक्रमों को जारी रखने की अनुमति** दी जाती है। इससे वर्तमान में प्रचलित कठोरता को दूर किया जा सकेगा और अंतःविषय सोच के लिए नई संभावनाएं पैदा की जा सकेंगी।

कार्यबल को मिशन मोड पर रोजगार योग्य कौशल और ज्ञान से युक्त करना

- 2014 में **कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE)** बनाया गया था और 2015 में **स्किल इंडिया मिशन** लॉन्च किया गया था। इनका उद्देश्य बदलती औद्योगिक जरूरतों के अनुसार देश में कौशल परिवेश को बेहतर और कारगर बनाना है।
- स्किल इंडिया मिशन के माध्यम से सरकार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू कर रही है।

पहलें	अपेक्षित परिणाम
प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) 2015 में शुरू की गई। (वर्तमान में, PMKVY 3.0 चल रही है)	• PMKVY के तहत वित्त वर्ष 2017 और वित्त वर्ष 2023 के बीच लगभग **1.1 करोड़ लोगों को प्रशिक्षित** किया गया है। • 116 जिलों में **1.3 लाख प्रवासियों को प्रशिक्षित** किया गया है।
जन शिक्षण संस्थान योजना	• इसके तहत अब तक **16.0 लाख लाभार्थियों को प्रशिक्षित** किया जा चुका है जिनमें से **69.0% ग्रामीण क्षेत्रों से और 2.7% आदिवासी क्षेत्रों** से हैं। • **प्रशिक्षुओं में 81% महिलाएं** थीं।
राष्ट्रीय शिक्षुता प्रोत्साहन योजना	• इसकी शुरुआत के बाद से **उद्योगों द्वारा 21.4 लाख प्रशिक्षुओं को नियुक्त** किया गया है।
शिल्पकार प्रशिक्षण योजना	• इस योजना के तहत **91.7 लाख विद्यार्थियों को प्रशिक्षित** किया गया है।
राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC)	इसके तहत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर **राष्ट्रीय कौशल विकास प्राधिकरण (NSDC) की स्थापना** की गई है जिसका उद्देश्य पूरे भारत में संस्थानों का एक नेटवर्क बनाना है। {इसे **स्किल इंडिया इंटरनेशनल (SII) नेटवर्क** कहा जाएगा।}
आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता (SANKALP)	• जिला स्तर पर कौशल गतिविधियों की योजना, प्रबंधन और निगरानी के लिए **724 जिला कौशल समितियों (DSC) का गठन** किया गया है। • SANKALP के राष्ट्रीय घटक और राज्य घटक के तहत क्रमश: **64 और 700 परियोजनाएं** शुरू की गई हैं।

सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण और वहनीय स्वास्थ्य

सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत सभी प्रासंगिक क्षेत्रों और हितधारकों के साथ जुड़ने हेतु ठोस प्रयास किए हैं। इसके ज़रिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज को प्राप्त किया जा सकेगा।

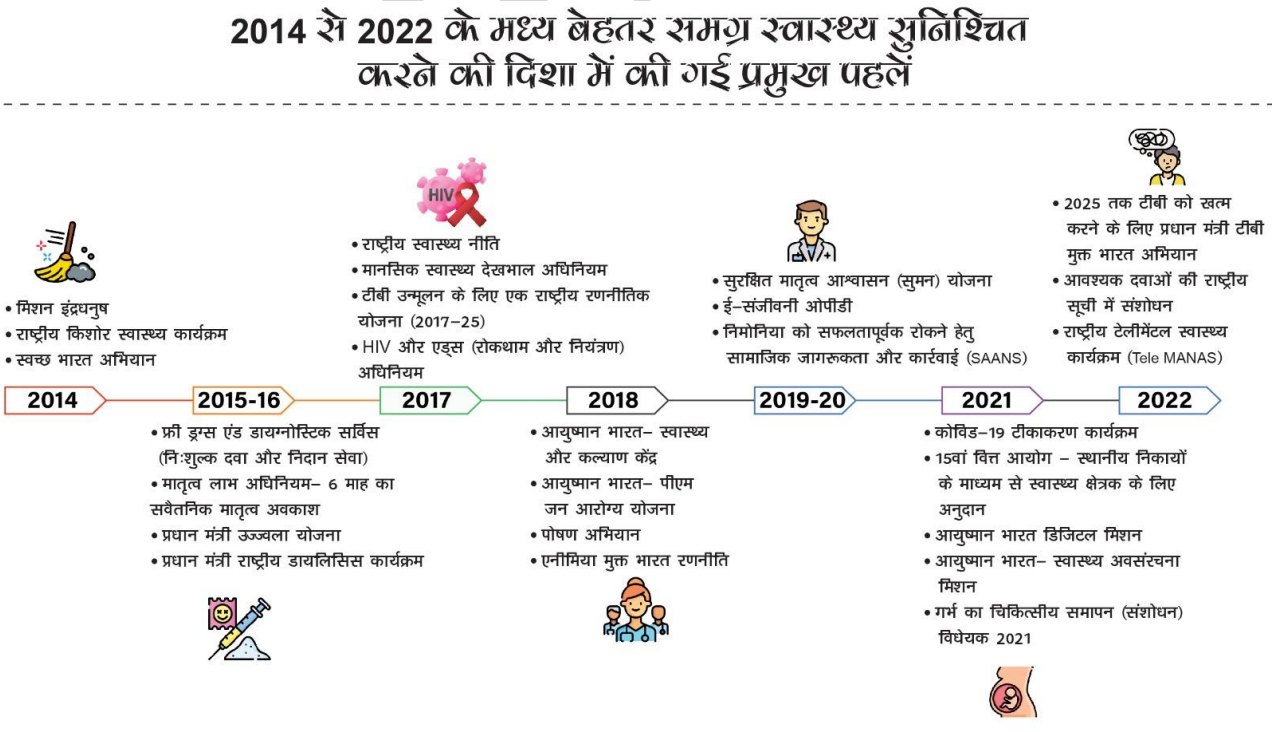

भारत में ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली

स्वास्थ्य संकेतक	NFH–5 के आंकड़े (ऐसे NFHS 4 की तुलना में कमी या वृद्धि दर्शाता है)
स्वास्थ्य बीमा वित्त–पोषण योजना के तहत कवर किए गए परिवार	(41%) ↑
कुल प्रजनन दर	(2.0) ↓
अस्पतालों में प्रसव (संस्थागत प्रसव)	(88.6%) ↑
नवजात मृत्यु दर (प्रत्येक 1000 जीवित जन्म पर)	(24.9) ↓
शिशु मृत्यु दर (प्रत्येक 1000 जीवित जन्म पर)	(35.2) ↓
5 वर्ष से कम उम्र के ठिगनेपन (आयु के अनुरूप लंबाई कम होना) से पीड़ित बच्चे	(35.5%) ↓
5 वर्ष से कम उम्र के दुबलेपन (लंबाई के अनुरूप वजन कम होना) से पीड़ित बच्चे	(19.3%) ↓
5 वर्ष से कम उम्र के अल्पवजनी (आयु के अनुरूप वजन कम होना) बच्चे	(32.1%) ↓
5 वर्ष से कम उम्र के मोटापा से पीड़ित बच्चे	(3.4%) ↑
15–24 वर्ष की महिलाएं जो मासिक धर्म के दौरान सुरक्षा के लिए स्वच्छ तरीकों को अपनाती हैं	(77.3%) ↑

स्वास्थ्य व्यय का अनुमान

- **स्वास्थ्य क्षेत्रक पर केंद्र और राज्य सरकार का बजटीय व्यय वित्त वर्ष 2023 (BE) में सकल घरेलू उत्पाद का 2.1%** और वित्त वर्ष 2022 (RE) में 2.2% तक पहुंच गया, जबकि वित्त वर्ष 2021 में यह 1.6% था।
- **कुल स्वास्थ्य व्यय के प्रतिशत के रूप में आउट-ऑफ-पॉकेट व्यय** में वित्त वर्ष 2014 के 64.2% से घटकर वित्त वर्ष 2019 में 48.2% हो गया।

Government Health Expenditure (GHE) and Out of Pocket Expenditure (OOPE) as per cent of Total Health Expenditure (THE)

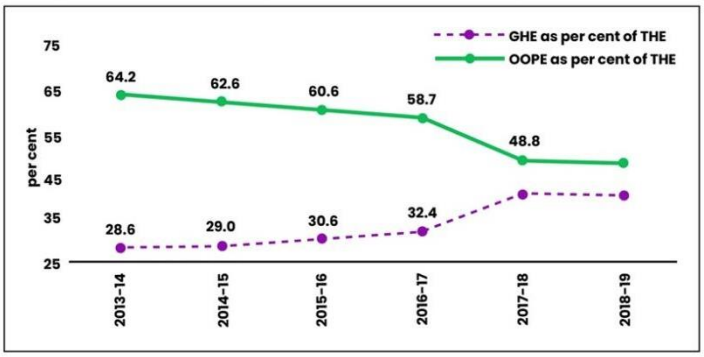

स्वास्थ्य के लिए प्रमुख सरकारी पहलों के तहत हुई प्रगति

पहलें	प्रगति
सार्वभौमिक टीकाकरण	• NFHS-5 में NFHS-4 की तुलना में **पूर्ण टीकाकरण कवरेज में 14.4% की वृद्धि** हुई है।
ई-संजीवनी	• इसने **देश भर में 9.3 करोड़ से अधिक रोगियों की मदद की** है। वर्तमान में इससे प्रतिदिन लगभग 4 लाख रोगियों को मदद मिल रही है।
आयुष्मान भारत	• इसके **1.54 लाख से अधिक केंद्र** शुरू हो गए हैं और **135 करोड़ से अधिक लोग** इससे जुड़ चुके हैं।
राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस	• इसके तहत **सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों एवं आंगनबाड़ियों के अलावा, स्कूल न जाने वाले बच्चों तक पहुँचने के लिए विशेष प्रयास** किए जाते हैं। निजी स्कूल भी अब इस कार्यक्रम में शामिल हो गए हैं। 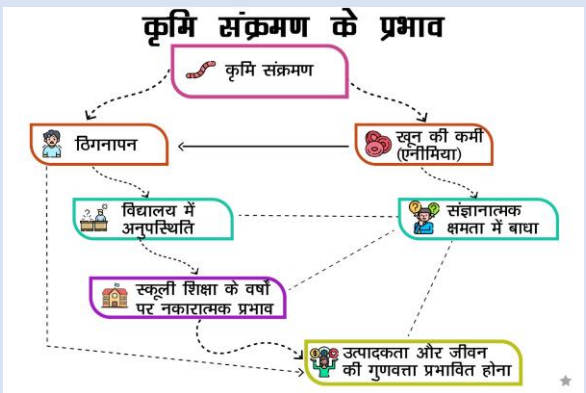

राष्ट्रीय कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम	• देश भर में **220 करोड़ से अधिक कोविड वैक्सीन** की खुराक दी जा चुकी है। • **पात्र लाभार्थियों में से 97% ने टीके की कम से कम एक खुराक प्राप्त** की है और लगभग 90% पात्र लाभार्थियों ने दोनों खुराकें प्राप्त की हैं।

स्वास्थ्य- समर्पित कोविड इंफ्रास्ट्रक्चर पर एक दृष्टि

- **आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत,** केंद्र सरकार ने निम्नलिखित उपायों के ज़रिए स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे पर खर्च बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है-
  - **जमीनी स्वास्थ्य संस्थानों में निवेश करना** और ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में हेल्थ एन्ड वेलनेस सेंटर (HWC) का विस्तार करना;
  - **सभी जिलों में क्रिटिकल केयर अस्पताल** स्थापित करना; और
  - महामारी के प्रबंधन के लिए **सभी जिलों और ब्लॉकों में एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं द्वारा प्रयोगशाला नेटवर्क और निगरानी तंत्र** को मजबूत करना।
  - अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने हेतु **टेलीमेडिसिन के लिए सामूहिक टीकाकरण और ई-संजीवनी के लिए Co-WIN** के माध्यम से डिजिटल अवसंरचना की सहायता से प्रयास को पूरा किया गया।

समर्पित कोविड इंफ्रास्ट्रक्चर:

- देश में समर्पित **कोविड-19 स्वास्थ्य सुविधाओं की त्रिस्तरीय व्यवस्था** लागू की गई है, जिसमें शामिल हैं
  - हल्के या पूर्व-लक्षण वाले मामलों के लिए **आइसोलेशन बिस्तरों वाला कोविड देखभाल केंद्र**;
  - **सामान्य मामलों के लिए ऑक्सीजन समर्थित आइसोलेशन बेड वाला कोविड स्वास्थ्य केंद्र,** और
  - गंभीर मामलों के लिए **ICU बेड वाला कोविड अस्पताल**।

कोविड महामारी के दौरान ऑक्सीजन संबंधी अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण

- **प्रेशर स्विंग एडजॉर्शन (PSA) ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट:** ऑक्सीजन के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने के लिए अस्पतालों में PSA प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं।
- अब तक राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों/केंद्र सरकार के अस्पतालों को लगभग **4.02 लाख ऑक्सीजन सिलेंडरों की आपूर्ति** की जा चुकी है।
- कोविड प्रबंधन के लिए सरकार द्वारा **कुल 1.13 लाख कंसंट्रेटर्स की खरीद** की गई है।

डॉक्टर-रोगी अनुपात

- देश में वर्तमान में **डॉक्टर-जनसंख्या अनुपात 1:1000 के WHO मानदंडों के मुकाबले 1:834** है।

को-विन: टीकाकरण की एक सफल डिजिटल कहानी

कोविड महामारी के दौरान, **Co-WIN को eVIN (इलेक्ट्रॉनिक वैक्सीन इंटेलिजेंस नेटवर्क) प्लेटफॉर्म के विस्तार के रूप में विकसित** किया गया था।

- यह भारत में कोविड-19 टीकाकरण की योजना, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन के लिए एक व्यापक **क्लाउड-आधारित IT तंत्र** है।
- इससे **राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर (सरकारी और निजी, दोनों) पर रीयल-टाइम स्टॉक ट्रैकिंग की सुविधा प्राप्त हुई**। इससे **कोविड-19 टीकों की बर्बादी को रोकने में भी मदद मिली।**
- इसने सरकार के **10 फोटो पहचान पत्रों में से किसी एक का उपयोग करते हुए 12 क्षेत्रीय भाषाओं में पंजीकरण कराने की सुविधा** प्रदान की और डिजिटल रूप से सत्यापन योग्य प्रमाण-पत्र जारी करने के लिए भी सेवा का विस्तार किया।
- भारत में **220 करोड़ से अधिक कोविड-19 वैक्सीन की खुराक देना वास्तव में Co-WIN के मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे के कारण संभव** हुआ।

वर्षा के दिनों में सामाजिक सुरक्षा

नागरिकों को स्वास्थ्य समस्याओं, प्राकृतिक आपदाओं, बुढ़ापे जैसी **सुभेद्यताओं और इनसे उत्पन्न जोखिमों से बचाने के लिए** देश में **मजबूत सामाजिक सुरक्षा प्रणाली की आवश्यकता** होती है। **इससे संबंधित कुछ प्रमुख कार्यक्रम/योजनाएं निम्नलिखित हैं:**

कार्यक्रम/योजना	प्रगति
प्रधानमंत्री वय वंदना योजना	• वर्तमान में कुल मिलाकर लगभग **8.6 लाख सब्सक्राइबर** इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं।
प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना	• लगभग **14.96 करोड़ व्यक्तियों को संचयी रूप** से इसमें नामांकित किया गया है और **6 लाख से अधिक दावों का भुगतान** किया गया है।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना	• लगभग **32.1 करोड़ व्यक्तियों को संचयी रूप से नामांकित** किया गया है और **1.1 लाख दावों का भुगतान** किया गया है।
प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना	• इस योजना के तहत **49.1 लाख से अधिक लाभार्थियों को नामांकित** किया गया है।
पीएम स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि योजना	• इसके तहत **39.4 लाख से अधिक ऋण वितरित** किए गए हैं।
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना	• इसके तहत **38.4 करोड़ से अधिक ऋण स्वीकृत** किए गए हैं।

भारत की महत्वाकांक्षी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास

- वर्तमान में **भारत की 65% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है।** इसमें से **47% लोग आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर** हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए विभिन्न उपाय किए गए हैं जिनमें स्वास्थ्य सेवा का विकास, ग्रामीण आवास, पेयजल और स्वच्छता, ग्रामीण संपर्क शामिल हैं।

जीवन की गुणवत्ता संबंधी समग्र परिवेश में सुधार के लिए बहुआयामी पहलें

फोकस क्षेत्र	पहलें	प्रगति/उपलब्धियां
ग्रामीण आय में वृद्धि	**दीनदयाल अंत्योदय योजना- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन**	• इस पहल ने गरीब और कमजोर समुदायों की कुल **8.7 करोड़ महिलाओं को 81 लाख SHGs में संगठित** किया है।
	महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना	• इससे जुड़ी **5.2 करोड़ से अधिक संपदाओं को जियो-टैग** किया गया है। • पारिश्रमिक पाने वाले लगभग 99% श्रमिक अपनी मजदूरी सीधे अपने बैंक खातों में प्राप्त कर रहे हैं।
	दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना	• इस योजना के तहत लगभग **13 लाख उम्मीदवारों को प्रशिक्षित** किया गया है, जिनमें से **7.9 लाख से अधिक को नौकरी** मिल चुकी है।

आवासीय	**प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण**	• अब तक कुल **2.7 करोड़ घरों को मंजूरी** दी गई है तथा **2.1 करोड़ घरों का निर्माण पूरा** किया जा चुका है।
पेयजल और स्वच्छता	**जल जीवन मिशन**	• 19.4 करोड़ ग्रामीण परिवारों में से लगभग **11 करोड़ परिवारों को उनके घरों में नल से जलापूर्ति** हो रही है। • चार राज्य- गोवा, गुजरात, तेलंगाना, हरियाणा और तीन केंद्र शासित प्रदेश- अंडमान -निकोबार द्वीप समूह, दादरा नगर हवेली और दमन दीव तथा पुडुचेरी **'हर घर जल' राज्य/केंद्र शासित प्रदेश** बन गए हैं।
	मिशन अमृत सरोवर	• कुल **90,000 से अधिक अमृत सरोवर स्थलों की पहचान** की गई है।
	जलदूत ऐप	• यह ऐप **साल में दो बार** (मानसून से पहले और मानसून के बाद) 2-3 चयनित खुले कुओं के माध्यम से **ग्राम पंचायत में जल स्तर को मापने के लिए** है। • अब तक **कुल 3.5 लाख से अधिक कुओं के जल स्तर का मापन किया जा चुका है।**
	स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)	• लगभग **1.24 लाख गांवों को ODF प्लस** घोषित किया गया है। **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पहला स्वच्छ, सुजल प्रदेश** बन गया है, क्योंकि इसने अपने सभी गांवों को ODF प्लस घोषित कर दिया है।
LPG कनेक्शन	**प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना 2.0**	• LPG कवरेज को **2016 में 62% से बढ़ाकर 2021 तक 99.8%** कर दिया गया है।
ग्रामीण संपर्क	**प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना**	• इसके तहत **7.2 लाख किलोमीटर लंबी सड़कें और 7,789 लॉन्ग स्पैन पुल** बनाए चुके हैं।
विद्युत	**सौभाग्य- प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना**	• इसने **मार्च, 2022 तक अपना लक्ष्य हासिल** कर लिया है।
	दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना	• यह गांवों में **आधारभूत विद्युत बुनियादी ढांचे के निर्माण में मदद** करता है, साथ ही कुछ क्षेत्रों में मौजूदा बुनियादी ढांचे को मजबूत भी करता है।
शासन	**राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान**	• विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यमों से लगभग **31 लाख निर्वाचित प्रतिनिधियों (ERs) को सक्षम** बनाया गया है।
	स्वामित्व योजना	• लगभग 65,000 गांवों के लिए एक करोड़ से अधिक **संपत्ति कार्ड (Property Card)** तैयार किए गए हैं।

निष्कर्ष

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश को व्यापक समावेशी सामाजिक नीतियों के कार्यान्वयन की आवश्यकता है। इससे इसकी ग्रामीण और शहरी आबादी, दोनों को समान महत्व मिल सकेगा और संधारणीय और समान विकास प्राप्त किया जा सकेगा। हमारे विकास लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त करने के लिए ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों; पुरुषों और महिलाओं, दोनों की क्षमताओं का दोहन करना आवश्यक है।

अध्याय - एक नज़र में

- सरकार का ध्यान **"सबका साथ, सबका विकास"** पर है, जो SDG लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।
- **सामाजिक क्षेत्र के लिए सरकारी व्यय का हिस्सा लगातार बढ़ रहा** है।
- **स्वास्थ्य क्षेत्र पर खर्च भी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति** के तहत अनुशंसित स्तर (GDP का 2.5%) की ओर बढ़ रहा है।

- **बहु-आयामी गरीबों की आबादी लगभग 16.4%** है।
- आकांक्षी जिला कार्यक्रम, श्रम संहिता अधिनियम, आधार के उपयोग और विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के रुझान में सुधार जैसे कार्यों के माध्यम से **सामाजिक क्षेत्र में असंतुलन को कम किया गया** है।
- शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसके प्रत्यक्ष परिणाम स्कूल और उच्चतर शिक्षा, दोनों क्षेत्रकों में देखे गए हैं।
- देश भर में विभिन्न **कौशल विकास पहलों को लागू किया गया** है। इसका उद्देश्य वर्तमान में कार्यरत और नियोजित, दोनों तरह के नागरिकों को लाभान्वित करना है।
- **बुजुर्गों और वंचितों के लिए सामाजिक सुरक्षा को भी उचित प्रोत्साहन** दिया गया है और सामाजिक सुरक्षा के लिए बनाई गई **योजनाएं/पहलें अच्छा प्रदर्शन** कर रही हैं।
- **ग्रामीण क्षेत्रों को विशेष महत्व** दिया गया है और **ग्रामीण आबादी के जीवन की गुणवत्ता में सभी मानकों पर वृद्धि** देखी गई है।

बजट में क्या कहा गया है?

सभी के लिए वहनीय स्वास्थ्य

- **सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशनः** एक मिशन शुरू किया जाएगा, जिसका लक्ष्य 2047 तक सिकल सेल एनीमिया का उन्मूलन करना होगा।।
- **चिकित्सा उपकरणों के लिए बहु–विषयक पाठ्यक्रमः** इसके माध्यम से भावी चिकित्सा प्रौद्योगिकियों, उच्च कोटि के विनिर्माण और अनुसंधान के लिए कुशल कार्यबल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी।

शिक्षा और कौशल तक पहुंच

- **अध्यापकों का प्रशिक्षणः** इसके तहत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (District Institutes of Education and Training) को प्रभावकारी उत्कृष्ट संस्थानों (Vibrant Institutes of Excellence) के रूप में तैयार किया जाएगा।
- बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किए जाएंगे।

किसी को पीछे नही छोड़ना

- **प्रधान मंत्री PVTG विकास मिशनः** अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना के तहत अगले तीन वर्षों में इस मिशन को लागू करने के लिए 15,000 करोड़ रुपये की धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी। PVTG से आशय विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह से है।
- **एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयः** अगले तीन वर्षों में, केंद्र सरकार 3.5 लाख जनजातीय छात्रों हेतु चलाए जा रहे 740 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के लिए 38,800 शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति करेगी।
- **सूखा प्रवण क्षेत्र के लिए जलः** ऊपरी भद्रा परियोजना के लिए 5,300 करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता दी जाएगी।

शहरी विकास

- संपत्ति कर व्यवस्था में सुधारों और शहरी अवसंरचना पर रिंग–फेंसिंग यूजर चार्ज के माध्यम से **शहरों को नगरपालिका बॉण्ड के लिए तैयार किया जाएगा।**
- **शहरी अवसंरचना विकास निधि (UIDF):** इसके तहत टियर 2 और टियर 3 शहरों में शहरी अवसंरचना का निर्माण किया जाएगा। UIDF का वित्त–पोषण उन बैंकों से किया जाएगा जो 'प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रक को ऋण' (PSL) देने के लक्ष्य को पूरा करने में विफल रहते हैं।
- **शहरी स्वच्छताः** सेप्टिक टैंक्स और सीवरों की सफाई पूरी तरह मशीन से की जाएगी, ताकि मैनहोल से मशीन–होल मोड (Manhole to machine-hole mode) की ओर बढ़ा जा सके।

युवा शक्ति

- **प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना 4.0:** युवाओं को अंतर्राष्ट्रीय अवसरों हेतु कौशल प्रदान करने के लिए अलग–अलग राज्यों में 30 **'स्किल इंडिया इंटरनेशनल सेंटर'** स्थापित किए जाएंगे।
- **यूनिफाइड स्किल इंडिया डिजिटल प्लेटफॉर्मः** इसके निम्नलिखित उद्देश्य होंगे:
  - मांग आधारित औपचारिक कौशल वर्धन को सक्षम करना;
  - नियोक्ताओं के साथ जुड़ाव स्थापित करना, जिसमें MSMEs भी शामिल होंगे;
  - उद्यमिता योजनाओं की उपलब्धता को सुगम बनाना।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

अध्याय 6

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. मानव विकास मापदंडों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2020-21 और 2021-22 के बीच मानव विकास में वैश्विक गिरावट दर्ज की गई है।
2. UNDP के 'बहुआयामी निर्धनता सूचकांक' के अनुसार भारत में 25% से अधिक आबादी बहुआयामी रूप से गरीब है।
3. UNDP के बहुआयामी निर्धनता सूचकांक के अनुसार 15% से अधिक भारतीय आबादी बहुआयामी गरीबी के प्रति सुभेद्य के रूप में वर्गीकृत है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 1 और 2

2. 2020-21 में रोजगार की स्थिति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2019-20 की तुलना में 2020-21 में स्व-नियोजित श्रमिकों की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई थी।
2. ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों के लिए श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में सुधार हुआ है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

3. रोजगार के मांग पक्ष के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संगठित विनिर्माण क्षेत्रक में रोजगार ने समय के साथ लगातार उर्ध्वगामी रुख बनाए रखा है।
2. परिधान क्षेत्रक सबसे बड़ा नियोक्ता है।
3. महाराष्ट्र में कारखानों में नियोजित व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 1 और 2

4. राष्ट्रीय करियर सेवा परियोजना (NCS) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे रोजगार और करियर संबंधी सेवाओं के लिए वन-स्टॉप समाधान प्रदान करने हेतु लॉन्च किया गया था।
2. इसने डिजीसक्षम कार्यक्रम के तहत निजी क्षेत्रक के साथ भागीदारी की है।
3. इसमें एक 'इंटरनेशनल जॉब' मॉड्यूल है, जो विदेशों में रोजगार की तलाश को आसान बनाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) 1, 2 और 3
(c) केवल 2 और 3
(d) केवल 1 और 3

5. स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और उनसे संबंधित राज्यों के संबंध में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

	SHG		राज्य
1.	पत्रकार दीदी	:	झारखंड
2.	प्रेरणा कैंटीन	:	पंजाब
3.	आजीविका फार्म फ्रेश	:	उत्तर प्रदेश

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 2 और 3
(b) केवल 1
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 2

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. जीवन-गुणवत्ता इकोसिस्टम में सुधार के लिए भारत ने सामाजिक क्षेत्रक में बहुआयामी पहलें शुरू की हैं। इन पहलों के साथ-साथ इनमें हुई प्रगति की भी चर्चा कीजिए।

Q2. मानव पूंजी निर्माण स्वास्थ्य और शिक्षा के दोहरे स्तंभों पर टिका है। आपके विचार में, पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत सरकार इन स्तंभों को मजबूत करने में कहाँ तक सफल रही है?

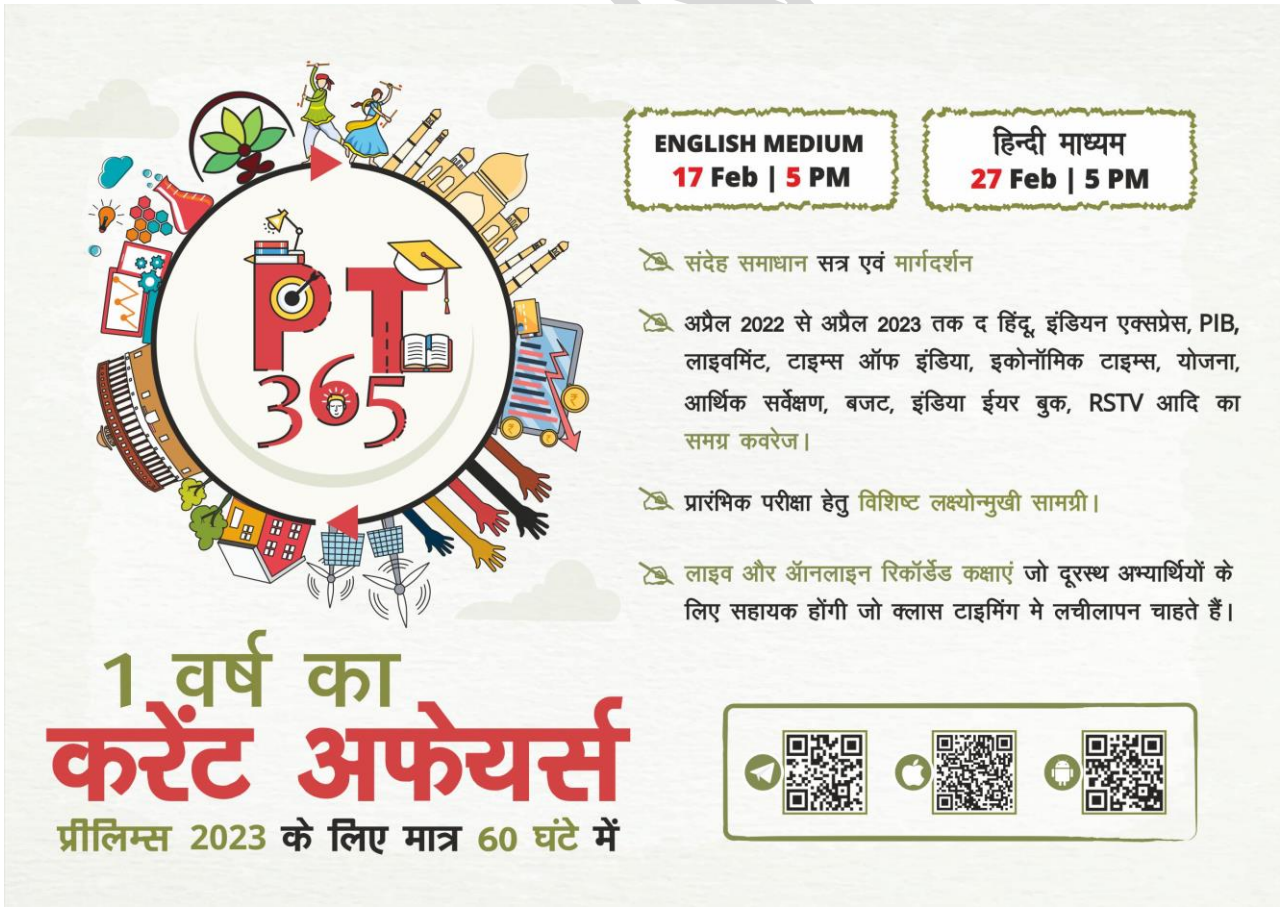

अध्याय 7: जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण: भविष्य का सामना करने की तैयारी (Climate Change and Environment: Preparing to Face the Future)

परिचय

यह अध्याय भारत के नज़रिए से जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर नवीनतम परिचर्चा प्रस्तुत करता है। इसमें वनों और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में इनकी भूमिका पर परिचर्चा भी शामिल है। साथ ही, यह नवीकरणीय ऊर्जा की ओर संक्रमण और हाल ही में प्रस्तुत किए गए निम्न-उत्सर्जन विकास रणनीति के दृष्टिकोण पर भी चर्चा करता है।

यह अध्याय आगे पक्षकारों के 27वें सम्मेलन (COP-27) के निष्कर्षों, सतत विकास के लिए वित्त पोषण को सक्षम करने में हुई प्रगति और जलवायु परिवर्तन से निपटने की दिशा में वैश्विक प्रयासों में भारत की भूमिका पर भी चर्चा करता है। इस अध्याय में पर्यावरणीय विनियमों और अन्य पर्यावरणीय पहलुओं जैसे कि जैव विविधता और वन्य जीवन के मामलों में हाल के बदलावों पर भी चर्चा की गई है।

भारत की जलवायु कार्रवाई की दिशा में प्रगति

भारत का जलवायु विजन, इसके विकास विजन से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। **यह विजन गरीबी उन्मूलन के लक्ष्यों और अपने सभी नागरिकों की बेहतरी के लिए मूलभूत जरूरतों की गारंटी की दिशा में प्रयास से संबंधित है। स्वच्छ भविष्य के लिए शुरू की गईं प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं-**

- **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (National Action Plan on Climate Change: NAPCC):** इसे 2008 में लॉन्च किया गया था। इस कार्य योजना में आठ राष्ट्रीय मिशनों की स्थापना का उल्लेख है, जिनमें कई पहलें और कई उपाय शामिल हैं (इन्फोग्राफिक देखें)।
- **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष (National Adaptation Fund for Climate Change: NAFCC):** यह केंद्रीय क्षेत्र की एक योजना है जिसे प्रोजेक्ट मोड में क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके तहत अभी तक 27 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 847.5 करोड़ रुपये की कुल परियोजना लागत के साथ 30 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

शब्दावली को जानें

- **कार्बन स्टॉक:** यह कार्बन की वह मात्रा है जो वायुमंडल से अवशोषित करके वनों के बायोमास, डेडवुड, मृदा तथा अपशिष्ट में स्टोर रहती है। भारतीय राज्यों में, **अरुणाचल प्रदेश में वनों में अधिकतम कार्बन स्टॉक (1023.84 मिलियन टन) है।** इसके बाद मध्य प्रदेश (609.25 मिलियन टन) का स्थान है।
- **प्रति हेक्टेयर वन कार्बन स्टॉक** जम्मू और कश्मीर (173.41 टन) में अधिकतम है। इसके बाद हिमाचल प्रदेश (167.0 टन), सिक्किम (166.2 टन), तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (162.9 टन) का स्थान है।

- **रामसर स्थल:** भारत में 75 रामसर स्थल हैं और इनमें से 49 स्थलों को पिछले 8 वर्षों में ही यह दर्जा दिया गया है। ये 75 रामसर स्थल 13.3 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करते हैं।
- **मैंग्रोव आवरण:** देश में मैंग्रोव आवरण में 2013 की तुलना में 2021 में 364 वर्ग किमी की वृद्धि हुई है।

- मैंग्रोव आवरण क्षेत्रों को बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए गए हैं। उदाहरण के लिए- राष्ट्रीय तटीय मिशन कार्यक्रम को आरंभ किया गया। इसके अलावा **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत तटीय विनियमन क्षेत्र (CRZ) अधिसूचना (2019); वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972; भारतीय वन अधिनियम, 1927** के माध्यम से विनियामक उपायों को भी लागू किया गया है।

- **नदी संरक्षण और कायाकल्प:** सरकार मानचित्रण (Mapping) तथा 5Ps यानी लोग (People), नीति (Policy), योजना (Plan), कार्यक्रम (Programme) और परियोजना (Project) के अभिसरण पर काम कर रही है।
- **राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC):** भारत सरकार ने पेरिस समझौते के अनुच्छेद 4 के तहत अपने NDC को अपडेट किया है। गौरतलब है कि प्रत्येक पक्षकार देश के लिए प्रत्येक पांच वर्षों में अपने NDC को अपडेट करना अनिवार्य है।

NDC 2015	अपडेटेड NDC	प्रगति
वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से विद्युत की संचयी स्थापित क्षमता को कुल ऊर्जा के **40 प्रतिशत तक पहुंचाना**।	वर्ष 2030 तक विद्युत की संचयी स्थापित क्षमता का लगभग **50 प्रतिशत भाग गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से प्राप्त** करना।	बड़ी **जलविद्युत** परियोजनाओं **सहित, कुल स्थापित विद्युत् क्षमता में गैर-जीवाश्म स्रोतों का हिस्सा लगभग 40.4 प्रतिशत** होने का अनुमान है।
वर्ष 2030 तक 2005 के स्तर की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद की **उत्सर्जन तीव्रता में 33 से 35 प्रतिशत की कमी** करना।	वर्ष 2030 तक 2005 के स्तर से अपने **सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम** करना।	वर्ष 2005-2016 के दौरान, भारत ने अपने सकल घरेलू उत्पाद की **उत्सर्जन तीव्रता में 24 प्रतिशत की कमी** की है।
वर्ष 2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्षावरण के माध्यम से **2.5 से 3 बिलियन टन CO_2 समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक** का निर्माण करना।	वर्ष 2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्षों के आवरण के माध्यम से **2.5 से 3 बिलियन टन CO_2 समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक का निर्माण** करना।	वर्ष 2017 के पिछले आकलन के अनुमानों की तुलना में **कार्बन स्टॉक में 79.4 मिलियन टन की वृद्धि** हुई है।

- **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर कदम: रिन्यूएबल्स 2022 ग्लोबल स्टेटस रिपोर्ट** के अनुसार, 2014-2021 की अवधि के दौरान, भारत में नवीकरणीय ऊर्जा में कुल निवेश 78.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
  - **2029-30 के अंत तक विद्युत की संभावित स्थापित क्षमता** 800 GW से अधिक होने की संभावना है। इसमें गैर-जीवाश्म ईंधन की हिस्सेदारी 500 GW से अधिक होगी।
- **ग्रीन हाइड्रोजन:** सरकार ने ग्रीन हाइड्रोजन के निर्माण, उत्पादन, उपयोग और निर्यात की सुविधा के लिए **राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन** को मंजूरी दी है। इसके तहत 2030 तक 8 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश जुटाया जाएगा।
  - **अंतर्राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी (2020)** की एक हालिया रिपोर्ट बताती है कि ग्रीन हाइड्रोजन को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए इलेक्ट्रोलाइज़र की लागत पर ध्यान देना महत्वपूर्ण होगा।

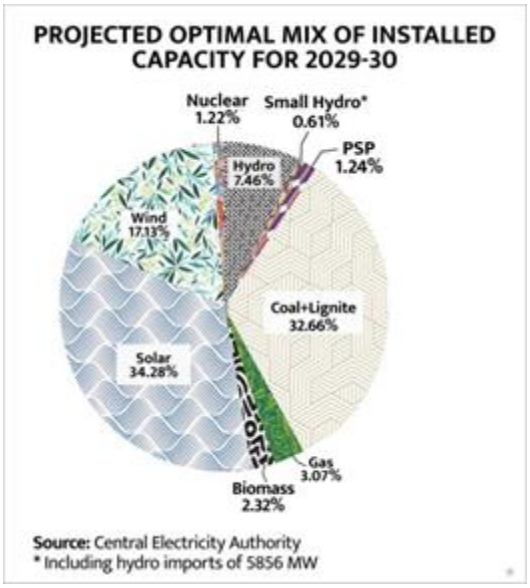

सतत विकास के लिए वित्तपोषण

- **ग्रीन बॉण्ड:** ग्रीन बॉण्ड ऐसे वित्तीय साधन हैं जो पर्यावरण की दृष्टि से सतत और जलवायु-अनुकूल परियोजनाओं में निवेश के लिए आय उत्पन्न करते हैं।
  - अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) का डेटा इंगित करता है कि वर्ष 2021 में दुनिया भर में लगभग 620 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के ग्रीन बॉण्ड जारी किए गए थे।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **केंद्रीय बजट 2022-23** में **सॉवरेन ग्रीन बॉण्ड्स (SGrBs)** जारी करने की घोषणा की गई है।
- **RBI** ने 5 वर्ष और 10 वर्ष की श्रेणियों में 4,000 करोड़ मूल्य के बॉण्ड्स की दो किश्तों की नीलामी की।

- **हरित ऋण प्रतिभूतियां जारी करने के लिए विनियामक फ्रेमवर्क**
  - RBI ने **हरित उद्योगों और परियोजनाओं के लिए बैंक ऋण देने को प्रोत्साहित** किया है। उदाहरण के लिए- प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण (PSL) के तहत अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को शामिल किया गया है।
  - सेबी ने तत्कालीन **सेबी (निर्गम और ऋण प्रतिभूतियों की सूची) विनियम, 2008, (ILDS विनियम)** के तहत सतत वित्त के एक तरीके के रूप में हरित ऋण प्रतिभूतियों को जारी करने के लिए विनियामक फ्रेमवर्क पेश किया।

- **सतत विकास हेतु लचीलापन विकसित करने के क्षेत्र में निवेश**
  - सेबी सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए सततता रिपोर्टिंग को अपनाने वाले शुरुआती विनियामकों में शामिल रहा है। इसके तहत वर्ष 2012 से **शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए ESG-संबंधित डिस्क्लोजर को अनिवार्य** किया गया है।
  - सेबी ने **बिजनेस रिस्पांसिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट (BRSR)** के तहत नई सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग आवश्यकताएं जारी की हैं। ये **'राष्ट्रीय जिम्मेदार व्यावसायिक आचरण दिशा-निर्देश'** में निहित सिद्धांतों के अनुरूप हैं।

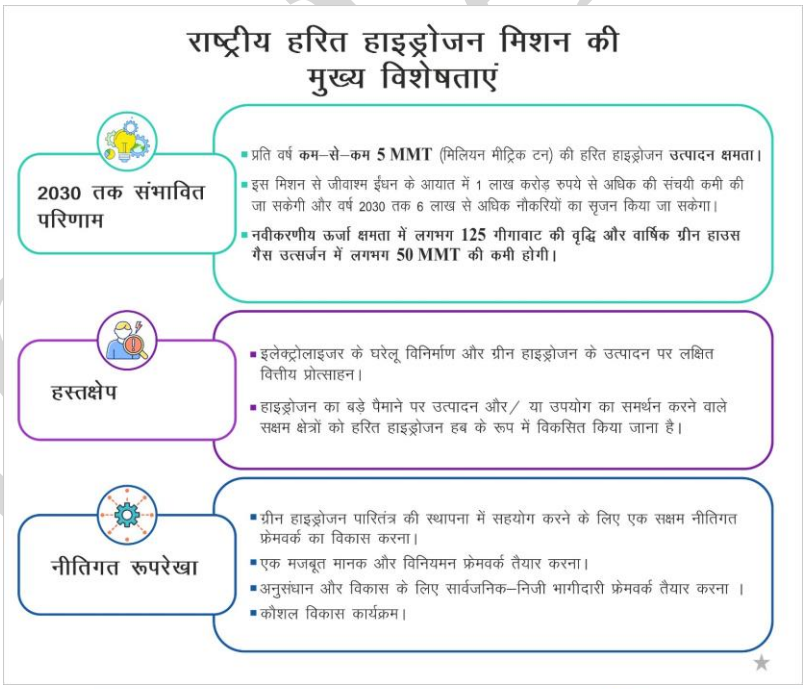

COP- 27, शर्म अल शेख (मिस्र) में लिए गए प्रमुख निर्णय

- **नुकसान और क्षति के लिए सहायता:** यह निर्णय लिया गया कि **नुकसान और क्षति** से निपटने के लिए नई वित्त पोषण व्यवस्था स्थापित की जाए। यह व्यवस्था जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति संवेदनशील विकासशील देशों की सहायता के लिए की जाएगी।
- **अनुकूलन पर वैश्विक लक्ष्य:** COP-27 सम्मेलन में अनुकूलन पर प्रगति देखी गई है। कई सरकारें COP-28 में निर्धारित किए जाने वाले **वैश्विक अनुकूलन लक्ष्य** पर आगे बढ़ने के तरीके पर सहमत हुई हैं। गौरतलब है कि अनुकूलन के विषय पर अंतिम निर्णय COP-28 में लिए जाएंगे। इसी निर्णय को 2023 में **होने वाले प्रथम ग्लोबल स्टॉकटेक** में भी प्रस्तुत किया जाएगा। **गौरतलब है कि ग्लोबल स्टॉकटेक, पेरिस समझौते के कार्यान्वयन और उस पर हुई प्रगति के मूल्यांकन के लिए आयोजित किया जाएगा।**

- **वित्त पोषण:** COP-27 के दौरान, यह भी माना गया कि प्रति वर्ष 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य हासिल किया जाना अभी भी बाकी है।

- COP-21 में निर्णय लिया गया था कि 2025 से पहले जलवायु वित्त पर प्रति वर्ष 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर की न्यूनतम सीमा से एक **नया सामूहिक मात्रात्मक लक्ष्य** (New Collective Quantified Goal: NCQG) निर्धारित किया जाएगा।
- **कृषि और खाद्य सुरक्षा:** चार वर्षों की अवधि में, कृषि और खाद्य सुरक्षा के विषय पर जलवायु कार्रवाई के कार्यान्वयन के संबंध में संयुक्त कार्रवाई पर समझौता किया जाएगा।
- **जस्ट ट्रांज़िशन एंड मिटिगेशन वर्क प्रोग्राम** स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

COP-27 में भारत

- भारत ने COP-27 में भाग लिया और **'LiFE-पर्यावरण के लिए जीवन शैली'** की थीम को मुख्यधारा में लाने पर ध्यान केंद्रित किया।
- भारत ने अपनी **दीर्घकालिक निम्न-कार्बन विकास रणनीति (LT-LEDS)** को भी प्रस्तुत किया।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहलें

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)	हाल के घटनाक्रम शामिल हैं: • ISA ने सभी 110 सदस्य देशों में अपने कवरेज का विस्तार किया है। • इसने **संयुक्त राष्ट्र महासभा में स्थायी पर्यवेक्षक** का दर्जा प्राप्त किया। • इसके सदस्य देशों में 9.5 GW सौर ऊर्जा क्षमता की एक पाइपलाइन की पहचान की गई है। इसमें कई विकासशील देशों में बड़े पैमाने पर सौर पार्क की स्थापना शामिल हैं।
आपदा-रोधी अवसंरचना गठबंधन (Coalition for Disaster Resilient Infrastructure: CDRI)	CDRI को भारत के प्रधान मंत्री द्वारा न्यूयॉर्क (2019) में **संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन** के दौरान लॉन्च किया गया था। **हाल के घटनाक्रम में शामिल हैं:** • 31 देश, छह अंतर्राष्ट्रीय संगठन और निजी क्षेत्रक के दो संगठन CDRI के सदस्य के रूप में शामिल हुए हैं। • **DRI कनेक्ट "नेटवर्क्स का नेटवर्क" है। यह ज्ञान के संसाधनों और उनके साथियों एवं अन्य अभिकर्ताओं के साथ सहयोगी अवसरों तक हितधारकों की पहुंच को सक्षम बनाता है।** • भारत, यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया, फिजी, जमैका और मॉरीशस के प्रधान मंत्रियों द्वारा **इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर रेसिलिएंट आइलैंड स्टेट्स (IRIS)** शुरू किया गया। • **CDRI की आपदा और जलवायु-रोधी अवसंरचना पर ग्लोबल फ्लैगशिप** रिपोर्ट अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह आपदा तथा जलवायु-लचीली अवसंरचना के लिए गंभीर एवं बहुआयामी चुनौतियों की ओर दुनिया का ध्यान खींचने और उसे केंद्रित करने पर बल देगी।
लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजीशन (LeadIT Group)	• इसे **सितंबर 2019 में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन में विश्व आर्थिक मंच के समर्थन से भारत और स्वीडन** द्वारा शुरू किया गया था। यह जलवायु महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देने और पेरिस समझौते के क्रियान्वयन की दिशा में कार्रवाई करने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा चिह्नित 9 एक्शन ट्रैक्स में से एक है।

अन्य पर्यावरणीय मुद्दों से संबंधित पहलें

- **जैव विविधता का संरक्षण**
  - विश्व में मेगा-जैव विविधता वाले देशों में भारत **आठवें और एशिया में चौथे स्थान पर** है।
  - भारत और नेपाल ने **जैव विविधता संरक्षण पर एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर** किए हैं। इसका उद्देश्य वनों, वन्यजीव, पर्यावरण, जैव विविधता संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में समन्वय तथा सहयोग को मजबूत करना एवं बढ़ावा देना है।
- **वन्यजीव**
  - भारत के **18 राज्यों में 53 टाइगर रिजर्व** स्थित हैं। ये विश्व के 75 प्रतिशत वन्य बाघों की आबादी के पर्यावास हैं।
  - भारत ने लक्षित वर्ष 2022 से चार वर्ष पहले यानी **2018 में ही बाघों की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य हासिल** कर लिया।
  - भारतीय हाथी को **प्रवासी प्रजातियों के कन्वेंशन (CMS) के पक्षकारों के सम्मेलन CMS-13** में परिशिष्ट I में सूचीबद्ध किया गया। यह सम्मेलन फरवरी 2020 में गांधी नगर (गुजरात) में आयोजित किया गया था।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **वन्य जीव (संरक्षण) संशोधन अधिनियम, 2022**
  - यह अधिनियम कानूनी रूप से संरक्षित प्रजातियों की संख्या में वृद्धि करने का प्रयास करता है। साथ ही, यह वन्यजीवों व वनस्पतियों की संकटापन्न प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) को लागू करने का प्रयास भी करता है।
  - यह अधिनियम सरकार को आक्रामक विदेशी प्रजातियों के आयात, व्यापार, कब्जे में लेने या प्रसार को विनियमित या प्रतिबंधित करने का अधिकार देता है।
- **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन और एकल-उपयोग वाले चिह्नित प्लास्टिक का उन्मूलन**
  - केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 को अधिसूचित किया है। यह देश में फैले प्लास्टिक अपशिष्ट के कारण होने वाले प्रदूषण को कम करेगा।
  - हाल ही में, एकल-उपयोग वाली चिह्नित प्लास्टिक वस्तुओं के निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया था।
  - **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (दूसरा संशोधन) नियम- 2022**, BIS मानकों और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) प्रमाणन के अनुरूप बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के लिए एक वैधानिक फ्रेमवर्क प्रदान करता है।
  - नैरोबी में आयोजित **पांचवीं संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा** ने **"प्लास्टिक प्रदूषण का उन्मूलन: कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय साधन की ओर"** (End Plastic Pollution: Towards an internationally legally binding instrument) नामक संकल्प को अपनाया।
    - भारत प्लास्टिक प्रदूषण पर वैश्विक कार्रवाई करने के संकल्प पर सभी सदस्य देशों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ा हुआ है।इस जुड़ाव का उद्देश्य इस बारे में आम सहमति विकसित करना है।

जैव विविधता कन्वेंशन (CBD) के पक्षकारों के सम्मेलन (COP-15) के प्रमुख निष्कर्ष

- दुनिया की कम-से-कम 30 प्रतिशत भूमि, अंतर्देशीय जल, तटीय क्षेत्रों और महासागरों का **प्रभावी संरक्षण और प्रबंधन करना।**
- अत्यधिक जैव विविधता महत्व वाले क्षेत्रों के ह्रास को कम करके लगभग **शून्य नुकसान सुनिश्चित करना।**
- अतिरिक्त पोषक तत्वों व कीटनाशकों और अत्यधिक खतरनाक रसायनों द्वारा उत्पन्न समग्र जोखिम, दोनों को **आधा करना।**
- **वैश्विक स्तर पर होने वाली खाद्य पदार्थों की बर्बादी को आधा करना** और अति-उपभोग एवं अपशिष्ट उत्पादन को उल्लेखनीय रूप से कम करना।
- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रवाह को विकसित से विकासशील देशों की ओर मोड़ना।
- वर्ष 2030 तक **जैव विविधता को नुकसान पहुंचाने वाली सब्सिडी को धीरे-धीरे समाप्त करना या इसमें सुधार करना।** साथ ही, इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कम-से-कम 500 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष तक की सब्सिडी को कम करना।

प्रोजेक्ट चीता

- भारत में **प्रोजेक्ट चीता के तहत चीतों का पुनर्वास** किया जा रहा है। यह दुनिया की पहली बड़ी अंतर-महाद्वीपीय जंगली मांसाहारी ट्रांसलोकेशन परियोजना है।
  - इस परियोजना के तहत, **मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में नामीबिया से आठ जंगली चीतों को लाया** गया है।
  - **1952 में चीते को भारत से विलुप्त घोषित** कर दिया गया था।
- चीता भारत में **खुले जंगल और चरागाह पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने में मदद** कर सकता है।
  - यह अप्रत्यक्ष रूप से जैव **विविधता के संरक्षण में मदद करेगा।** साथ ही, यह जल सुरक्षा, कार्बन पृथक्करण एवं मिट्टी की नमी के संरक्षण जैसी **पारिस्थितिकी तंत्र संबंधी सेवाओं में वृद्धि** करेगा जिससे समाज को लाभ होगा।

- **बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन**
  - सरकार ने बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022 जारी किया है, ताकि अपशिष्ट बैटरियों का पर्यावरणीय रूप से समुचित प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके।
    - ये नियम **विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व** (Extended Producer Responsibility: EPR) की अवधारणा पर आधारित हैं। इसके तहत बैटरी के विनिर्माता (आयातकों सहित) ही अपशिष्ट बैटरी के संग्रह और पुनर्चक्रण/ नवीनीकरण एवं नई बैटरीज़ के निर्माण में अपशिष्ट से प्राप्त सामग्री के उपयोग के लिए जिम्मेदार होते हैं।
    - ये नियम **सभी प्रकार की बैटरीज़ को कवर** करते हैं।

क्रिटिकल मिनरल्स

स्वच्छ ऊर्जा प्रणाली को अपनाने से क्रिटिकल मिनरल्स की मांग में भारी वृद्धि होने का अनुमान है।

- **कोबाल्ट, तांबा, लिथियम, निकल और रेयर अर्थ एलिमेंट्स (REEs)** जैसे खनिज बिजली से चलने वाले वाहनों, बैटरी के उत्पादन तथा सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा का उपयोग करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- क्रिटिकल मिनरल्स की **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला** अत्यधिक केंद्रित और असमान रूप से वितरित है।
- खान मंत्रालय ने **नाल्को, HCL और MECL के सहभागी हितों के साथ एक संयुक्त उद्यम कंपनी 'खनिज बिदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL)**" का गठन किया है। इसका उद्देश्य भारत में खनिज सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

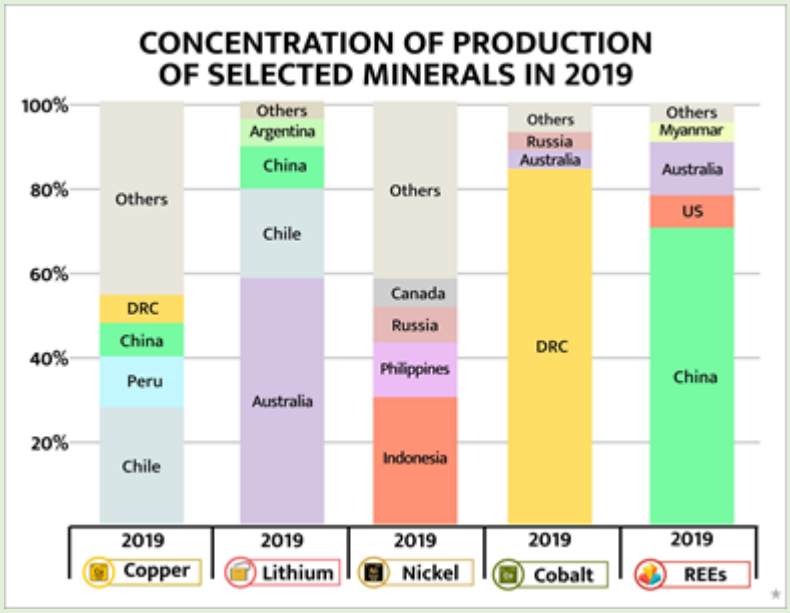

- **ई-अपशिष्ट प्रबंधन**
  - सरकार ने **ई-अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम, 2022** को अधिसूचित किया है।
  - **इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं-**
    - ये नियम **प्रत्येक विनिर्माता, उत्पादक, रिफर्बिशर, डिसमेंटलर और रिसाइकलर पर लागू** होते हैं। इन्हें केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के पास पंजीकृत कराना होगा।
    - अनुसूची 1 का विस्तार किया गया है और अब **106 विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (EEEs)** को विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) व्यवस्था के तहत शामिल किया गया है।
    - नए नियमों में **सौर** फोटोवोल्टिक मॉड्यूल्स/ पैनल्स/ सेल्स **के प्रबंधन को भी जोड़ा गया** है।
    - **इसके तहत EPR प्रमाण-पत्र को जारी करने और उसका लेन-देन** करने के लिए प्रावधान किया गया है।
    - पर्यावरण **क्षतिपूर्ति और सत्यापन एवं लेखापरीक्षा** के लिए प्रावधान किए गए हैं।

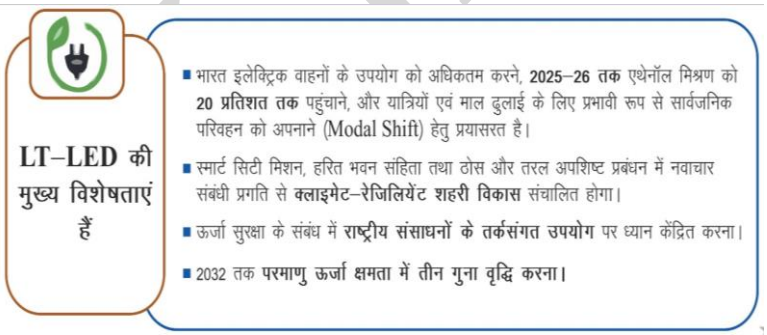

निष्कर्ष

यदि विकसित देश अपने सफल नीतिगत और व्यावहारिक परिवर्तनों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, तो वैश्विक जलवायु एजेंडे की दिशा में प्रगति हो सकती है। साथ ही, ऐसे उदाहरणों के लाभ अच्छी तरह से चिन्हित और उन देशों की जनता द्वारा स्वीकृत होने चाहिए। इस स्थिति में उपयुक्त अनुकूलन के साथ विकासशील देशों में लोगों द्वारा इन नीतियों और व्यवहारों के अनुपालन की उम्मीद की जा सकती है।

अध्याय - एक नज़र में

- **पर्यावरण से संबंधित सरकारी पहलें**
  - राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन पर कार्य योजना (NAPCC)
  - राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष (NAFCC)
  - रामसर स्थलों में वृद्धि हुई।
  - मैंग्रोव आवरण में वृद्धि हुई।
  - नदी संरक्षण और कायाकल्प।
  - राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) को अपडेट किया गया।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन।

- **सतत विकास के लिए वित्त पोषण**
  - **सॉवरेन ग्रीन बॉण्ड** जारी किया गया।
  - RBI ने **हरित उद्योगों और परियोजनाओं के लिए बैंक ऋण** को प्रोत्साहित किया है।
  - सेबी ने बिजनेस रिस्पांसिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट (BRSR) के तहत नई सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग आवश्यकताएं जारी की हैं।
- **COP-27, शर्म अल शेख (मिस्र) में लिए गए प्रमुख निर्णय**
  - नुकसान और क्षति के लिए नई वित्तपोषण व्यवस्था
  - वैश्विक अनुकूलन लक्ष्य
  - कृषि और खाद्य सुरक्षा पर जलवायु कार्रवाई का कार्यान्वयन।
  - जस्ट ट्रांजिशन एंड मिटिगेशन वर्क प्रोग्राम की स्थापना की गई।
  - भारत ने अपनी दीर्घकालिक निम्न-कार्बन विकास रणनीति (LT-LEDS) प्रस्तुत की।
- **अन्य पर्यावरणीय मुद्दों से संबंधित पहलें**
  - वन्य जीव (संरक्षण) संशोधन अधिनियम, 2022
  - प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021
  - बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022
  - ई-अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम, 2022
  - भारत और नेपाल ने जैव विविधता संरक्षण पर एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए।

बजट में क्या कहा गया है?

बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम (BESSs): 4,000 MWH की विकासशील क्षमता वाली BESSs को व्यवहार्यता अंतराल वित्त–पोषण (Viability Gap Funding) से सहायता प्रदान की जाएगी।

नवीकरणीय ऊर्जा निकासी: लद्दाख से 13 गीगावाट (GW) नवीकरणीय ऊर्जा की निकासी और ग्रिड एकीकरण के लिए अंतर–राज्यीय पारेषण प्रणाली (Inter–state transmission system) का निर्माण किया जाएगा।

अमृत धरोहर: आर्द्रभूमि के लिए स्थानीय समुदायों की अनूठी संरक्षण शैली को बढ़ावा दिया जाएगा।

हरित ऋण कार्यक्रम (Green Credit Programme): इसे पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के तहत अधिसूचित किया जाएगा।
- इससे व्यवहारगत परिवर्तन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, कंपनियों, व्यक्तियों और स्थानीय निकायों को पर्यावरण की दृष्टि से संधारणीय एवं उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

पी.एम.–प्रणाम {PM–PRANAM (PM Programme for Restoration, Awareness] Nourishment and Amelioration of Mother Earth)}: इसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को अग्रलिखित कार्यों के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शुरू किया जाएगा– रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग के लिए, तथा उनके स्थान पर वैकल्पिक उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए।

भारतीय प्राकृतिक खेती बायो–इनपुट संसाधन केंद्र (Bhartiya Prakritik Kheti Bio–Input Resource Centres): 10,000 बायो–इनपुट संसाधन केंद्र स्थापित किए जाएंगे।
- राष्ट्रीय स्तर पर वितरित सूक्ष्म–उर्वरक एवं कीटनाशक विनिर्माण नेटवर्क तैयार किया जाएगा।
- इसके तहत सरकार अगले तीन वर्षों में एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहन एवं सहायता प्रदान करेगी।

मिश्टी (Mangrove Initiative for Shoreline Habitats & Tangible Incomes: MISHTI): इसके तहत तटीय रेखा से जुड़े क्षेत्रों और लवणीय भूमि पर मैंग्रोव का रोपण किया जाएगा।

एथेनॉल मिश्रण कार्यक्रम का समर्थन करने के लिए, डिनेचर्ड इथाइल अल्कोहल पर बेसिक कस्टम ड्यूटी (BCD) में छूट दी जाएगी।।
- एसिड ग्रेड फ्लोरस्पार और क्रूड ग्लिसरीन पर BCD को घटाकर 2.5% किया जाएगा।

GST का भुगतान की गई संपीड़ित बायोगैस पर **उत्पाद शुल्क में छूट** देने का प्रस्ताव किया गया है। इसका उद्देश्य **करों की कैस्केडिंग से बचना** है।

अध्याय 7

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. निम्नलिखित में से कौन-से मिशन 2008 में शुरू की गई जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) के भाग हैं?
   1. सतत मैंग्रोव पर राष्ट्रीय मिशन
   2. राष्ट्रीय जल मिशन
   3. उन्नत ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

2. हाल ही में, भारत सरकार ने पेरिस समझौते के अनुच्छेद 4 के अनुरूप अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों (NDCs) को अद्यतित किया है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-से भारत के अद्यतित NDC के हिस्से हैं?
   1. 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 50 प्रतिशत संचयी विद्युत शक्ति की संस्थापित क्षमता हासिल करना।
   2. 2005 के स्तर की तुलना में 2030 तक जीडीपी के संदर्भ में उत्सर्जन तीव्रता में 45 प्रतिशत की कमी करना
   3. 2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्षावरण के माध्यम से 5-10 बिलियन टन CO_2 समतुल्य के अतिरिक्त कार्बन सिंक का निर्माण करना।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

3. वनों और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस भारतीय राज्य के वनों में सर्वाधिक कार्बन भंडार विद्यमान है?
   (a) मध्य प्रदेश
   (b) अरुणाचल प्रदेश
   (c) मिजोरम
   (d) असम

4. राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत, निम्नलिखित में से कौन-से परिकल्पित परिणाम हैं?
   1. प्रति वर्ष कम-से-कम 5 MMT (मिलियन मीट्रिक टन) की ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता को हासिल करना।
   2. नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में लगभग 500 GW की वृद्धि करना तथा वार्षिक GHG उत्सर्जन में लगभग 200 MMT की कमी करना।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

5. भारत में हरित वित्त और सतत विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस संगठन ने बिजनेस रेस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट (BRSR) के तहत एक नई संधारणीयता रिपोर्टिंग आवश्यकताओं को जारी किया है?

(a) भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग
(b) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
(c) भारतीय रिज़र्व बैंक
(d) भारतीय स्टेट बैंक

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. भारत द्वारा निर्धारित 'अद्यतित राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों' (NDCs) के मद्देनज़र, उन तरीकों को स्पष्ट कीजिए जिनके माध्यम से सरकार भारत के सतत विकास के वित्त-पोषण को सक्षम कर रही है।

Q2. हाल के दिनों में जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए भारत ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण योगदान किए हैं। चर्चा कीजिए।

अध्याय 8: कृषि एवं खाद्य प्रबंधन: खाद्य सुरक्षा से पोषण सुरक्षा तक (Agriculture and Food Management: From Food Security to Nutritional Security)

परिचय

इस अध्याय में **कृषि और सहायक क्षेत्रक के प्रदर्शन** तथा ऋण उपलब्धता को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा की गई है। साथ ही, इसमें कृषि यंत्रीकरण को प्रोत्साहित करने तथा बागवानी व जैविक कृषि को बढ़ावा देने पर भी विस्तार से चर्चा की गई है।

यह अध्याय पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रकों के प्रदर्शन तथा खाद्य बास्केट (Food Basket) एवं किसानों की आय में इन क्षेत्रकों के महत्व को भी दर्शाता है। साथ ही, इस अध्याय में कानून समर्थित राष्ट्रव्यापी खाद्य प्रबंधन कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (National Food Security Act: NFSA) पर भी चर्चा की गई है।

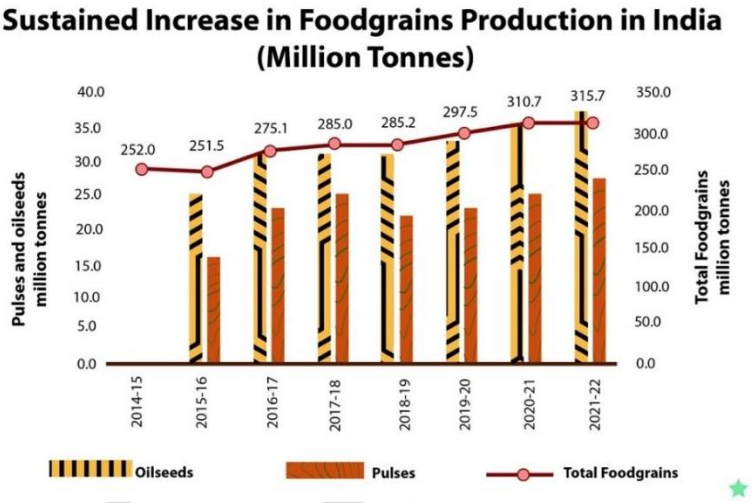

खाद्यान्न उत्पादन

- **कृषि में वृद्धि:** भारतीय कृषि क्षेत्रक में **पिछले 6 वर्षों के दौरान 4.6 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर** दर्ज की गई है।
  - हाल के वर्षों में, भारत भी वैश्विक पटल पर तेजी से **कृषि उत्पादों के निवल निर्यातक** के रूप में उभरा है।
  - वर्ष 2022 में **गेहूं की कटाई के मौसम के दौरान हीट वेव के असर** के कारण गेहूं का उत्पादन प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ है।
  - इस वर्ष मानसून में देरी और कम वर्षा के कारण **धान के कुल बुवाई क्षेत्र में भी गिरावट** आई है।

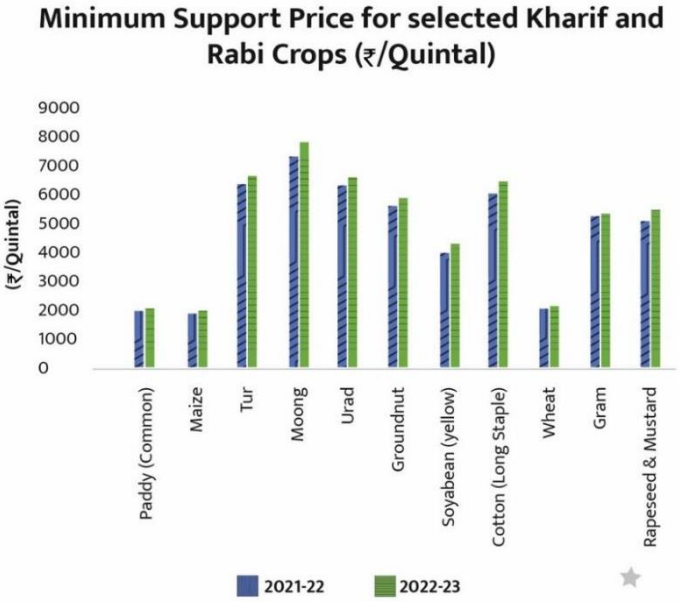

उत्पादन की लागत से अधिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP)

- वर्ष 2018-19 के केंद्रीय बजट में घोषणा की गई थी कि भारत में किसानों को **उत्पादन लागत का कम-से-कम डेढ़ गुना MSP दिया जाएगा।**
- सरकार ने कृषि वर्ष 2018-19 के बाद से **सभी 22 खरीफ, रबी और अन्य वाणिज्यिक फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में कम-से-कम 50 प्रतिशत** की वृद्धि की है।

कृषि संबंधी ऋण

- **किसान क्रेडिट कार्ड योजना (KCC):** यह योजना वर्ष 1998 में शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य किसानों को कृषि उत्पादों और सेवाओं की खरीद में सक्षम बनाने के लिए ऋण प्रदान करना है।
  - **4,51,672 करोड़ रुपये की KCC सीमा के साथ** अब तक बैंकों ने **3.89 करोड़ पात्र किसानों** को किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) जारी किए हैं।
  - **वर्ष 2018-19** में भारत सरकार ने **मत्स्य पालन और पशुपालन करने वाले किसानों** को भी KCC की सुविधा देने का निर्णय लिया।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **संशोधित ब्याज सहायता योजना (Modified Interest Subvention Scheme: MISS):** यह किसानों को रियायती ब्याज दरों पर अल्पकालिक ऋण प्रदान करने हेतु शुरू की गई है।
- **कृषि में ऋण प्रवाह:** यह 2021-22 में अपने लक्ष्य से लगभग 13 प्रतिशत अधिक था।
- वर्ष 2021-22 में कृषि क्षेत्रक में **निजी निवेश** बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो गया था।

कृषि यंत्रीकरण

- कृषि यंत्रीकरण अन्य इनपुट्स और प्राकृतिक संसाधनों की समय पर उपलब्धता तथा इनका कुशल उपयोग सुनिश्चित करते हुए **उत्पादकता बढ़ाने में मदद** करता है।
- **कृषि यंत्रीकरण पर उप मिशन (Sub Mission on Agricultural Mechanisation: SMAM)** के तहत, राज्य सरकारों को कृषि मशीनरी के प्रशिक्षण और प्रदर्शन में सहायता दी जा रही है। इसके अलावा, इस मिशन के तहत कृषि मशीनरी खरीदने में किसानों की मदद की जा रही है।
  - अब तक, **21628 कस्टम हायरिंग सेंटर और 467 हाई-टेक हब तथा 18306 कृषि मशीनरी बैंक** स्थापित किए गए हैं।

जैविक और प्राकृतिक कृषि

- **जैविक कृषि (Organic farming) करने वाले किसान:** भारत में जैविक कृषि करने वाले किसानों की संख्या 44.3 लाख है। यह संख्या **विश्व में सबसे अधिक है।** इसके अलावा, 2021-22 तक लगभग 59.1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को जैविक कृषि के अंतर्गत लाया गया था।

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मार्च 2021 में अपने 75वें सत्र में वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष (IYM) घोषित किया था।

- मिलेट्स उच्च पोषण से युक्त **स्मार्ट खाद्यान्न हैं।** ये जलवायु के अनुकूल और संयुक्त राष्ट्र के कई सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप हैं।
- भारत **50.9 मिलियन टन** (चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार) **से अधिक मिलेट्स का उत्पादन करता है।** यह **एशिया का 80 प्रतिशत और वैश्विक उत्पादन का 20 प्रतिशत है।**
- **वैश्विक औसत उपज** 1229 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है, जबकि भारत की औसत उपज 1239 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।

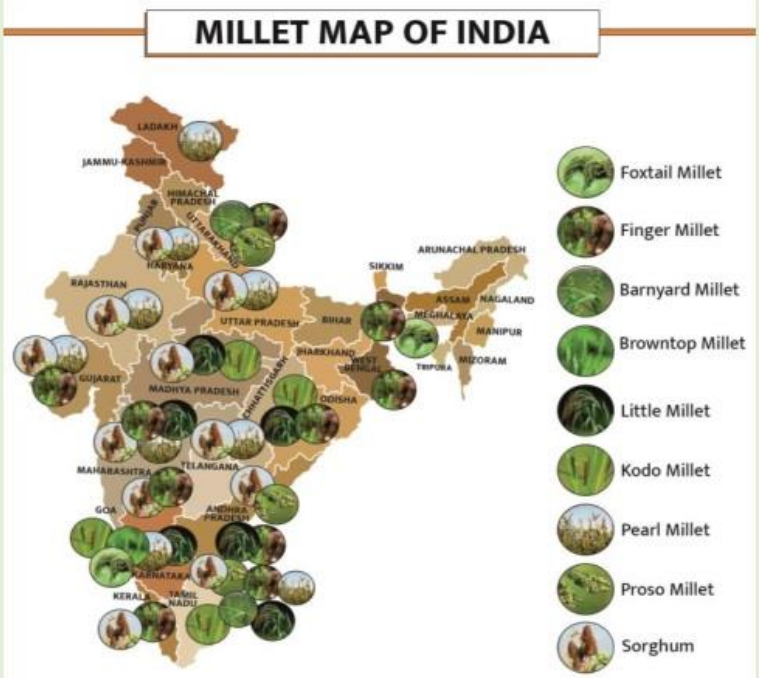

- **सिक्किम पूरी तरह से जैविक बनने वाला दुनिया का पहला राज्य बन गया है।** त्रिपुरा और उत्तराखंड सहित अन्य राज्यों ने भी अपने लिए इसी तरह के लक्ष्य निर्धारित किए हैं।
- सरकार, किसान उत्पादक संगठन (Farmers Producer Organisation: FPO) के गठन के माध्यम से समर्थित दो योजनाओं- **परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY)** और **पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन (Mission Organic Value Chain Development for North Eastern Region: MOVCDNER)** के तहत जैविक कृषि को बढ़ावा दे रही है।
  - PKVY योजना **क्लस्टर मोड** (न्यूनतम 20 हेक्टेयर आकार के साथ) में लागू की जा रही है।
  - किसानों को तीन वर्षों के लिए 50,000 रुपये प्रति हेक्टेयर की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। साथ ही, इन योजनाओं के माध्यम से कुल 6.4 लाख हेक्टेयर क्षेत्र और 16.1 लाख किसानों को कवर किया गया है।
  - MOVCDNER, **पूर्वोत्तर क्षेत्र** की विशिष्ट फसलों की जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक पहल है।
  - **भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP):** यह परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY) की एक उप-योजना है। यह **शून्य-बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF)** सहित पारिस्थितिक कृषि के सभी रूपों को प्रोत्साहित करने के क्रम में पारंपरिक स्वदेशी प्रथाओं को अपनाने हेतु किसानों की मदद करती है।

कृषि क्षेत्रक हेतु शुरू की गई अन्य पहलें

- **पी.एम. किसान योजना:** यह एक केंद्रीय क्षेत्रक की योजना है। इसका उद्देश्य भूमि-धारक किसानों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करना है।
  - इसके तहत प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के माध्यम से प्रति वर्ष 6,000 रुपये का वित्तीय लाभ किसान परिवारों के बैंक खातों में

स्थानांतरित किया जाता है।

- **कृषि अवसंरचना निधि (Agriculture Infrastructure Fund: AIF):** यह एक प्रकार की वित्त-पोषण सुविधा है। इसे वर्ष 2020-21 से 2032-33 तक फसलोत्तर प्रबंधन अवसंरचना और सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए शुरू किया गया है।
- **प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY):** कृषक नामांकन के संदर्भ में यह दुनिया की सबसे बड़ी फसल बीमा योजना तथा प्राप्त प्रीमियम के आधार पर तीसरी सबसे बड़ी योजना है। इसके तहत प्रतिवर्ष औसतन 5.5 करोड़ आवेदन किए जाते हैं।
  - इस योजना के लागू होने के बाद के छः वर्षों के दौरान, किसानों ने 25,186 करोड़ रुपये के प्रीमियम का भुगतान और 1.2 लाख करोड़ रुपये के दावे प्राप्त किए गए हैं।
  - यह योजना **'क्षेत्र दृष्टिकोण'** के आधार पर लागू की गई है।
- **एकीकृत बागवानी विकास मिशन (MIDH):** इसका उद्देश्य फलों, सब्जियों, जड़ और कंद फसलों, मसालों, फूलों, वृक्षारोपण फसलों को शामिल करते हुए बागवानी को बढ़ावा देना है।
- **राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM) योजना:** सरकार ने ऑनलाइन पारदर्शी, प्रतिस्पर्धी बोली प्रणाली को तैयार करने हेतु इसे शुरू किया था। इसका उद्देश्य किसानों के लिए उनकी उपज का लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना था।
  - e-NAM पोर्टल पर 1.7 करोड़ से अधिक किसानों और 2.3 लाख व्यापारियों को पंजीकृत किया गया है।
- **जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियां:** ये फसल विविधीकरण को सक्षम बनाती है तथा जल के लिए मानसून पर किसानों की निर्भरता को कम करने में मदद करती है। गौरतलब है कि भारत में 1,000 से अधिक एग्रीटेक स्टार्ट-अप हैं।

सहायक क्षेत्रक

- **पशुधन क्षेत्रक:** वर्ष 2014-15 से 2020-21 के दौरान (स्थिर मूल्य पर) पशुधन क्षेत्रक में 7.9% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (Compound Annual Growth Rate: CAGR) दर्ज की गई थी।
- **मत्स्य पालन:** 2016-17 से **मत्स्य पालन क्षेत्रक** की वार्षिक औसत वृद्धि दर लगभग 7% रही है। **कुल कृषि सकल मूल्य वर्द्धन (GVA) में इसकी हिस्सेदारी लगभग 6.7 प्रतिशत है।**
- **डेयरी क्षेत्रक:** डेयरी क्षेत्रक पशुधन क्षेत्रक का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह सीधे तौर पर आठ करोड़ से अधिक किसानों को रोजगार प्रदान करता है।

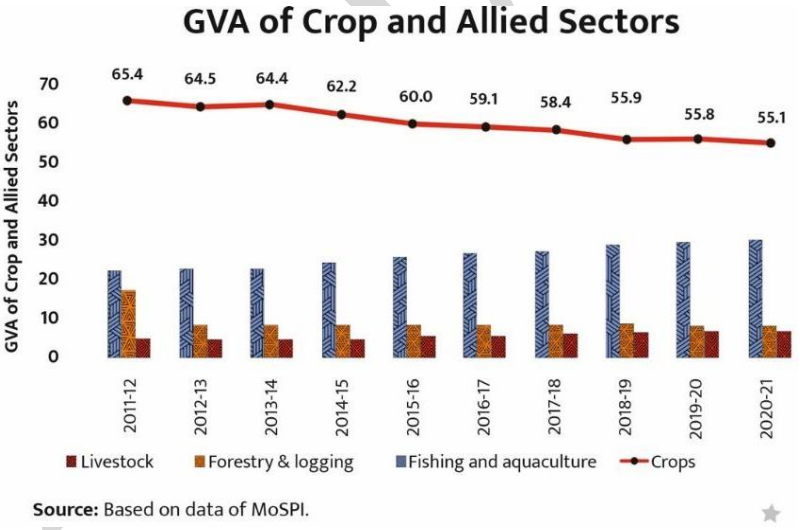

Source: Based on data of MoSPI.

- भारत **विश्व में दूध उत्पादन में पहले स्थान पर है।** इसके अलावा, यह **अंडे के उत्पादन में विश्व में तीसरे तथा मांस उत्पादन में आठवें स्थान पर है।**

कृषि से संबंधित क्षेत्रकों हेतु सरकारी हस्तक्षेप

2020 में 15,000 करोड़ रुपये के बजट से **पशुपालन अवसंरचना विकास कोष** (AHIDF) का गठन किया गया।

उद्यमिता विकास पर ध्यान केंद्रित करने तथा खाद्य आहार एवं चारा विकास सहित कुक्कुट, भेड़, बकरी और सुअर पालन में सुधार करने हेतु **राष्ट्रीय पशुधन मिशन** (NLM)।

पूर्ण टीकाकरण द्वारा खुरपका और मुंहपका रोग तथा ब्रुसेलोसिस को नियंत्रित करने के लिए **राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम** (NADCP)।

मत्स्य पालन क्षेत्रक के सतत और उत्तरदायी विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रधान मंत्री **मत्स्य संपदा योजना** (PMSSY)।

सहकारी समितियां

"सहकार-से-समृद्धि" के विजन को साकार करने के लिए सहकारी क्षेत्रक के विकास को नए सिरे से गति प्रदान की गई है।

- **पंजीकृत सहकारी समितियां: देश में 8.5 लाख पंजीकृत सहकारी समितियां हैं।** इनमें 29 करोड़ से अधिक सदस्य हैं। ये सदस्य मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के सीमांत और निम्न-आय समूहों से संबंधित हैं।
  - 98 प्रतिशत गांव, **प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (Primary Agriculture Credit Societies : PACS)** द्वारा कवर किए गए हैं।
- **कृषि वित्त: कृषि वित्त का लगभग 19 प्रतिशत** सहकारी समितियों के माध्यम से प्रदान किया जाता है।
- **सहकारिता मंत्रालय:** सहकारी क्षेत्रक पर अधिक ध्यान देने के लिए एक पूर्ण विकसित सहकारिता मंत्रालय की स्थापना की गई है।
- **बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 2002 {Multi-State Cooperative Societies (MSCS) Act, 2002}:** बहु-राज्य सहकारी समितियों के लोकतांत्रिक कामकाज तथा स्वायत्त कामकाज को सुविधाजनक बनाने के लिए MSCS बनाया गया था।
  - बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 2002 के तहत 1528 समितियां पंजीकृत हैं।
  - सरकार ने MSCS (संशोधन) विधेयक, 2022 को भी पेश करने का निर्णय लिया है।
  - इस विधेयक का लक्ष्य MSCS अधिनियम, 2002 को संशोधित करना है ताकि इसे संविधान के भाग IXB के अनुरूप बनाया जा सके।
  - इसका उद्देश्य **सहकारी आंदोलन को मजबूत करना** है। यह सशक्तीकरण निम्नलिखित उपायों के माध्यम से किया जाएगा-
    - चुनावी सुधारों से संबंधित प्रावधानों को लागू करके,
    - शासन और पारदर्शिता को मजबूत करके, और
    - सहकारी क्षेत्रक को धन एकत्रित करने में सक्षम बनाकर, तथा
    - निगरानी तंत्र को मजबूत करके।

खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक

- **खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक** का इष्टतम विकास, **विकास संबंधी कई चिंताओं से निपटने में** उल्लेखनीय रूप से मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए- इससे कृषि में प्रच्छन्न ग्रामीण बेरोजगारी दूर करने, ग्रामीण गरीबी कम करने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, खाद्य मुद्रास्फीति कम करने, बेहतर पोषण उपलब्ध कराने, खाद्य की बर्बादी को रोकने में मदद मिलेगी।
  - पिछले पांच वर्षों के दौरान (वित्त वर्ष 21 के अंत तक), खाद्य प्रसंस्करण उद्योग क्षेत्रक लगभग **8.3% की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़** रहा है।

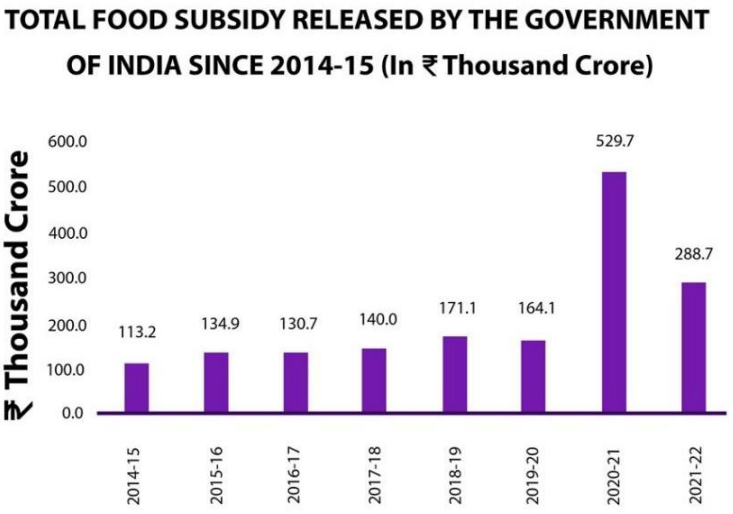

- वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण (Annual Survey of Industries: ASI) 2019-20 के अनुसार, **पंजीकृत विनिर्माण क्षेत्रक में कार्यरत कुल लोगों में से 12.2 प्रतिशत व्यक्ति खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र से संबंधित थे।**

- वर्ष 2021-22 के दौरान प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात सहित कृषि-खाद्य निर्यात का मूल्य, भारत के कुल निर्यात का लगभग 10.9% था।
- **चुनौतियां**
  - ऐसा अनुमान है कि **पर्याप्त और कुशल कोल्ड चेन इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी** के कारण कटाई के बाद बड़े पैमाने पर होने वाली फसल की क्षति (ज्यादातर शीघ्र नष्ट होने वाली) से प्रतिवर्ष 92,561 करोड़ रुपये का नुकसान होगा।
  - दुनिया भर में **खाद्य और कृषि उत्पादों के आयात** के लिए सख्त दिशा-निर्देश बनाए गए हैं। ऐसे में भारत से होने वाले निर्यात को अस्वीकार किए जाने की आशंका बढ़ जाती है।
  - कनेक्टिविटी से संबंधित **लॉजिस्टिक्स बाधाएं भी हैं।**

खाद्य सुरक्षा

- भारत के **खाद्य प्रबंधन कार्यक्रम** के अंतर्गत किसानों से लाभप्रद कीमतों पर खाद्यान्न की खरीद, उपभोक्ताओं को खाद्यान्न का वितरण एवं खाद्य बफर स्टॉक का रख-रखाव आदि शामिल है।
  - कोविड के दौरान निःशुल्क खाद्यान्न वितरण कार्यक्रम के परिणामस्वरूप अन्य वर्षों की तुलना में **2020-21 और 2021-22 के दौरान खाद्य सब्सिडी बिल बढ़ गया था।**
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA):** NFSA, 2013 के तहत भारत के लगभग 80 करोड़ आबादी को कवर किया गया है।
  - 2022-23 के दौरान, **भारत सरकार ने** NFSA एवं अन्य कल्याणकारी योजनाओं के तहत राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को **970.1 लाख टन खाद्यान्न आवंटित** किए हैं।
- **वन नेशन वन राशन कार्ड (ONORC) योजना:** ONORC प्रणाली **राशन कार्डों की इंटरा-स्टेट (Intra-State) और इंटर-स्टेट (Inter-State) पोर्टेबिलिटी को सक्षम** बनाती है।
  - वर्तमान में, राष्ट्रीय/ इंटर-स्टेट (Inter-State) पोर्टेबिलिटी सुविधा सभी 36 राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में लागू की गई है, जो 100 प्रतिशत NFSA के तहत आने वाले लाभार्थियों को कवर करती है।

निष्कर्ष

कृषि क्षेत्रक का प्रदर्शन देश में विकास और रोजगार के लिए महत्वपूर्ण है। ऋण वितरण के लिए किफायती, आवश्यकता के अनुरूप और समावेशी दृष्टिकोण के आधार पर इस क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक के विकास पर अधिक ध्यान देने से खाद्यान्न की बर्बादी को कम किया जा सकता है और भंडारण की अवधि बढ़ाई जा सकती है। इससे किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त हो सकता है।

अध्याय - एक नज़र में

- **खाद्य उत्पादन:** भारतीय कृषि क्षेत्रक पिछले छः वर्षों के दौरान **4.6 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रहा है।**
- **MSP:** सरकार ने कृषि वर्ष 2018-19 के बाद से **सभी 22 खरीफ, रबी और अन्य वाणिज्यिक फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में कम-से-कम 50 प्रतिशत** की वृद्धि की है।
- **कृषि ऋण: वर्ष 2018-19** से भारत सरकार ने **मत्स्य पालन और पशुपालन करने वाले किसानों** के लिए भी KCC सुविधा का विस्तार किया है।
  - 2021-22 में कृषि क्षेत्रक में **निजी निवेश** बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो गया था।
- **जैविक कृषि करने वाले किसान:** भारत में जैविक कृषि करने वाले किसानों की संख्या लगभग 44.3 लाख है, जो विश्व में सबसे अधिक हैं।
- **कृषि यंत्रीकरण: कृषि यंत्रीकरण पर उप मिशन (SMAM)** के तहत, राज्य सरकारों को कृषि मशीनरी के प्रशिक्षण और प्रदर्शन में सहायता दी जा रही है। इसके अलावा इस मिशन के तहत कृषि मशीनरी खरीदने में किसानों की मदद की जा रही है।
- **संबंधित क्षेत्रक:** भारत **विश्व में दूध उत्पादन में पहले स्थान पर है।** इसके अलावा **अंडे के उत्पादन में विश्व में तीसरे स्थान पर तथा मांस उत्पादन में आठवें स्थान पर है।**
- **खाद्य प्रसंस्करण:** पिछले पांच वर्षों के दौरान (वित्त वर्ष 2021 के अंत तक), खाद्य प्रसंस्करण उद्योग क्षेत्र **लगभग 8.3 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रहा है।**
- **खाद्य सुरक्षा**
  - **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013** के तहत भारत के लगभग 80 करोड़ आबादी को कवर किया गया है।
    - **वन नेशन वन राशन कार्ड (ONORC) लॉन्च** किया गया है।
  - **सहकारी समितियां**
    - देश में **8.5 लाख सहकारी समितियां पंजीकृत हैं।**
    - **कृषि वित्त का लगभग 19 प्रतिशत** सहकारी समितियों के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

बजट में क्या कहा गया है?

कृषि के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर: इसे एक ओपन सोर्स, ओपन स्टैंडर्ड और इंटर–ऑपरेबल पब्लिक गुड के रूप में बनाया जाएगा। इसका उद्देश्य आगतों (Inputs), विपणन (Marketing) आदि से संबंधित किसान–केंद्रित समाधानों को बढ़ावा देना है।

कृषि त्वरक कोष (Agriculture Accelerator Fund): इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि संबंधी स्टार्ट–अप्स को प्रोत्साहित करना है।

कपास की फसल की उत्पादकता में वृद्धि: इसके तहत सार्वजनिक निजी भागीदारी (PPP) के माध्यम से क्लस्टर–आधारित और मूल्य श्रृंखला दृष्टिकोण को अपनाने का लक्ष्य है।

आत्मनिर्भर बागवानी स्वच्छ पादप कार्यक्रम: इसका लक्ष्य उच्च प्रतिफल प्रदान करने वाली बागवानी फसलों के लिए रोग–मुक्त, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री की उपलब्धता को बढ़ावा देना है। इसके लिए 2,200 करोड़ रुपये का परिव्यय निर्धारित किया गया है।

मोटे अनाजों के लिए वैश्विक हब (Global Hub for Millets): इसके लिए हैदराबाद स्थित **भारतीय मोटा अनाज अनुसंधान संस्थान (Indian Institute of Millet Research)** को **उत्कृष्टता केंद्र** के रूप में सहायता प्रदान की जाएगी। मोटे अनाजों को "श्री अन्न" कहा गया है।

कृषि ऋण:
- पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन के लिए 20 लाख करोड़ रुपये का ऋण दिया जाएगा।
- **6,000 करोड़ रुपये के लक्षित निवेश** के साथ **प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना की एक नई उप–योजना** शुरू की जाएगी।

सहकारिता: सरकार विशेष रूप से लघु एवं **सीमांत किसानों और अन्य वंचित वर्गों के लिए सहकारिता आधारित आर्थिक विकास मॉडल** को बढ़ावा दे रही है।
- सरकार ने **63,000 प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (Primary Agricultural Credit Societies: PACS) के कंप्यूटरीकरण** का काम शुरू किया है। इनके साथ ही, इनको **बहुउद्देशीय PACS** बनने में सक्षम बनाया जाएगा।
- इसके अलावा, सहकारी समितियों **से वंचित पंचायतों और गांवों में** सरकार ने आगामी **पांच वर्षों के दौरान** सहकारी समितियों की स्थापना को सुगम बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

निर्यात को बढ़ावा देने हेतु झींगा के आहार के घरेलू विनिर्माण संबंधी प्रमुख इनपुट पर **बेसिक कस्टम ड्यूटी (BCD)** में कमी का प्रस्ताव किया गया है।

अध्याय 8

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. भारत में जैविक कृषि के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दुनिया में जैविक किसानों की संख्या सबसे अधिक भारत में है।
2. 2021-22 तक भारत में 10 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को जैविक कृषि के तहत लाया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

2. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

योजना	विशेषताएं
1. पीएम किसान योजना	किसान परिवारों को प्रति वर्ष ₹6,000 का वित्तीय लाभ अंतरित किया जाता है
2. कृषि अवसंरचना कोष (AIF)	यह फसल कटाई के बाद के प्रबंधन से संबंधित अवसंरचना और सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों के निर्माण का वित्त-पोषण करता है।
3. प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना	क्षेत्र दृष्टिकोण के आधार पर लागू की गई है

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 2 और 3
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

3. भारतीय कृषि क्षेत्रक के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस मद में भारत उत्पादन की दृष्टि से विश्व में शीर्ष स्थान पर है:

1. दूध
2. मांस
3. अंडा

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 2

4. भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पिछले पांच वर्षों में यह लगभग 15 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा है।
2. 2021-22 के दौरान प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात सहित कृषि-खाद्य निर्यात का मूल्य भारत के कुल निर्यात का लगभग 20 प्रतिशत था।
3. नवीनतम 'वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण' (ASI) 2019-20 के अनुसार, पंजीकृत विनिर्माण क्षेत्रक में 10 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में कार्यरत थे।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 3

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सरकार केवल रबी और व्यावसायिक फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करती है।
2. किसान क्रेडिट कार्ड के तहत कृषि ऋण सुविधा मत्स्यपालन और पशुपालन में संलग्न किसानों द्वारा नहीं ली जा सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. व्यापक बीमा कवरेज भारत में किसानों की आय को स्थिर करने की कुंजी है। इस संदर्भ में, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) द्वारा निभाई गई भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

Q2. खाद्य सुरक्षा सरकार द्वारा राष्ट्र के लोगों के प्रति एक कानूनी और सामाजिक प्रतिबद्धता है। इस संदर्भ में, भारत सरकार द्वारा अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए उठाए गए कदमों की चर्चा कीजिए।

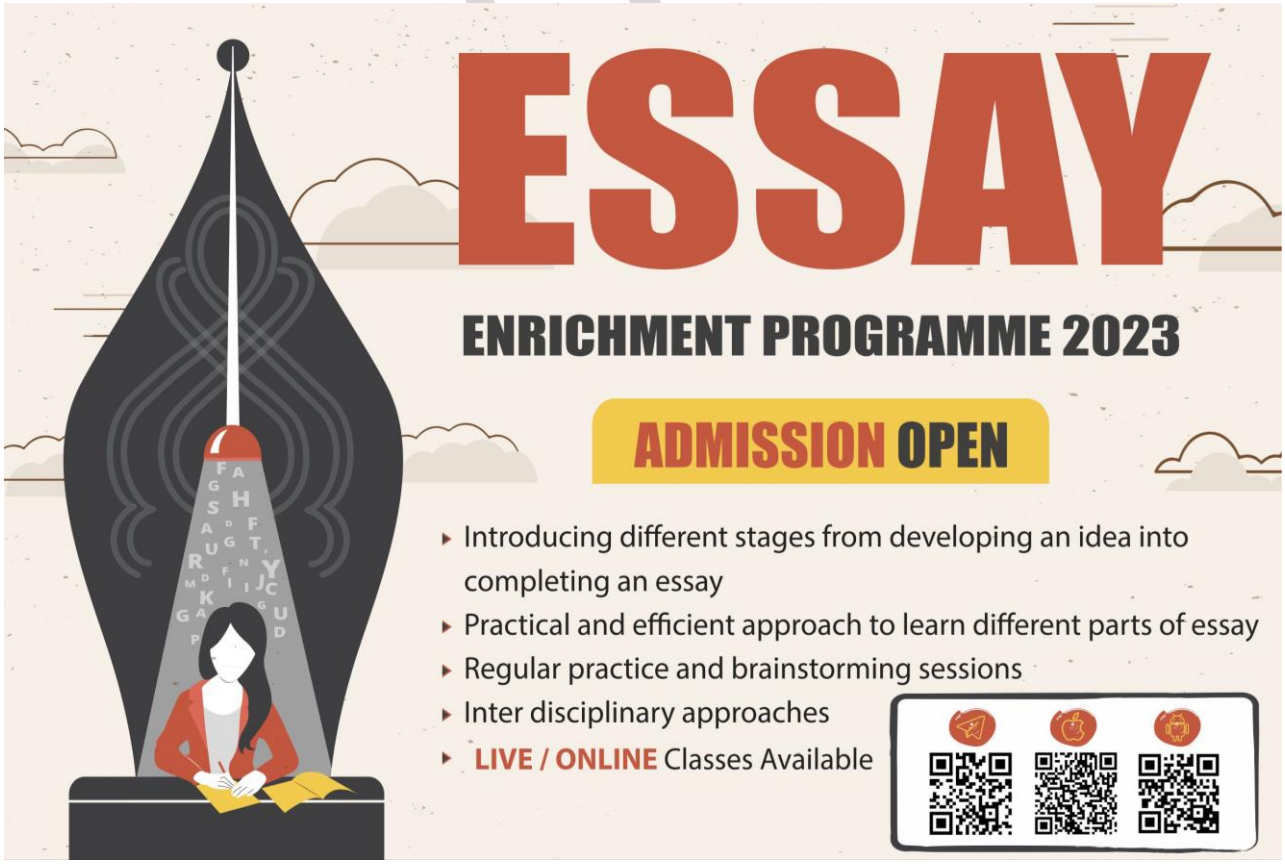

अध्याय 9: उद्योग: स्थायी विकास (Industry: Steady Recovery)

परिचय

यह अध्याय चालू वित्त वर्ष में भारतीय उद्योग के प्रदर्शन की समीक्षा करेगा। साथ ही, यह अध्याय औद्योगिक विकास के लिए मांग बढ़ाने वाले कारक, उद्योग की आपूर्ति प्रतिक्रिया, उद्योग के लिए ऋण रुझान और भारत के औद्योगिक क्षेत्र में विदेशी निवेश की भी पड़ताल करता है। इसके अलावा, यह अध्याय वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में भारत की आकांक्षाओं और संभावनाओं का भी मूल्यांकन करता है।

औद्योगिक घटकों की वृद्धि और हिस्सेदारी (प्रतिशत में)

	वित्त वर्ष 2021–22 की तुलना में वित्त वर्ष 2022–23 में रियल GVA मे वृद्धि	वित्त वर्ष 2022–23 में कुल GVA में हिस्सेदारी
उद्योग	4.1	30.0
खनन और उत्खनन	2.4	2.3
विनिर्माण	1.6	17.3
बिजली, गैस, जल आपूर्ति और अन्य उपयोगिता सेवाएं	9.0	2.3
निर्माण कार्य	9.1	8.1
कुल GVA	6.7	-

उद्योग क्षेत्रक का महत्व

- उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसने वित्त वर्ष 2012 से वित्त वर्ष 2021 के दौरान **GDP में औसतन लगभग 31% का योगदान** दिया है। साथ ही, इसने **12.1 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार** भी प्रदान किया है।
- **आर्थिक विकास और रोजगार में योगदान देने वाले अन्य क्षेत्रकों के साथ विभिन्न प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संबंधों के माध्यम से उद्योग क्षेत्रक की प्रासंगिकता की पहचान की जा सकती है,** जैसे-
  - यह सुनिश्चित करता है कि **घरेलू उत्पादन घरेलू मांग को समायोजित कर सकता है** और आयात पर निर्भरता को कम कर सकता है।
  - **औद्योगिक विकास अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव उत्पन्न करता है** और अंततः रोजगार सृजन में मदद करता है।
  - कुछ उद्योगों, जैसे- वस्त्र और विनिर्माण में **रोजगार लोचशीलता उच्च** है।
  - औद्योगिक विकास बैंकिंग, बीमा, लॉजिस्टिक्स जैसे **सेवा क्षेत्रकों में विकास को बढ़ावा देता है।**

शब्दावली को जानें

- **रोजगार लोचशीलता (Employment elasticity):** सकल घरेलू उत्पाद में 1% की वृद्धि से रोजगार की स्थिति में प्रतिशत में हुए परिवर्तन को रोजगार की लोचशीलता कहते हैं। रोजगार की लोचशीलता जितनी अधिक होगी, श्रम प्रधान संवृद्धि उतनी ही अधिक होगी।
- **नजी निवेश में क्राउडिंग–इन प्रभाव:** क्राउडिंग–इन ऐसी स्थिति है जब उच्चतर सरकारी व्यय से निजी क्षेत्रक के लिए निवेश में वृद्धि होती है।
  - क्राउडिंग–इन प्रभाव घटित इसलिए होता है क्योंकि उच्चतर सरकारी व्यय से आर्थिक विकास में वृद्धि होती है। इसके चलते कंपनियां निवेश करने के लिए प्रोत्साहित होती हैं क्योंकि अब निवेश के अधिक लाभदायक अवसर उपलब्ध होते हैं।
- **वैश्विक बाधाएं (हेडविंड):** हेडविंड जहाज की गति की दिशा के विपरीत दिशा में बहने वाली पवन होती है। ये किसी अर्थव्यवस्था के विकास को मंद कर सकती हैं इसलिए अर्थशास्त्र में इनको नकारात्मक कारक माना जाता है।

औद्योगिक विकास के लिए मांग को बढ़ाने वाले कारक

- **समग्र खुदरा मुद्रास्फीति में कमी:** इसने महामारी के बाद की भारतीय अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता मांग को बनाए रखा है। इससे **वैश्विक चुनौतियों के बावजूद** औद्योगिक सुधार हुआ है।
- **मजबूत बाह्य मांग:** इसने वित्त वर्ष 2022 में भी भारतीय उद्योग की ऐसे समय में उल्लेखनीय मदद की थी, **जब वैश्विक संवृद्धि की प्रतिक्रिया में उत्पाद निर्यात में वृद्धि हुई।**
- **निवेश की मांग में वृद्धि:** यह औद्योगिक विकास को बढ़ाने वाले एक शक्तिशाली कारक के रूप में उभरा है।
  - यह वृद्धि, केंद्र सरकार के पूंजीगत व्यय में तीव्र उछाल के कारण शुरू हुई है।
  - उपभोग की मांग, निर्यात प्रोत्साहन और कॉर्पोरेट बैलेंस शीट के मजबूत होने के कारण **इसमें निजी निवेश बढ़ा है।**

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **निजी निवेश में वृद्धि के कारण**
  - बैंकों की दबाव वाली परिसंपत्तियों के समाधान के लिए **इंस्टीट्यूशन ऑफ इंसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC)** की स्थापना की गई है, ताकि वे कंपनियों को कर्ज दे सकें।
  - इसके अलावा, कंपनियों की कारोबार सुगमता में सुधार करने के लिए **वस्तु एवं सेवा कर (GST)** को लागू किया गया है।
  - साथ ही, कॉर्पोरेट टैक्स की दर में भी कटौती की गई है।

- वित्त वर्ष 2023 की पहली छमाही के दौरान GDP में **सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF)** की हिस्सेदारी में उच्च वृद्धि दर्ज की गई है।

Steady Growth in Components of Index of Core Industries

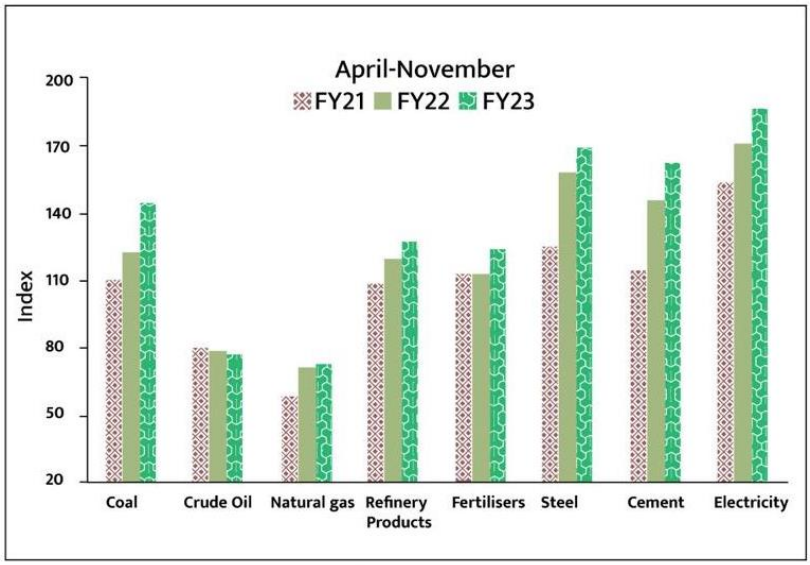

Source: Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT)

उद्योग की आपूर्ति प्रतिक्रिया

- मांग प्रोत्साहन के प्रति उद्योग की आपूर्ति प्रतिक्रिया मजबूत रही है, जैसा कि **उच्च आवृत्ति संकेतकों** में देखा गया है।
  - **परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (PMI-मैन्युफैक्चरिंग)** में जुलाई 2021 से 18 महीनों तक विस्तार दर्ज किया गया है।
  - विनिर्माण उत्पादन की निरंतर वृद्धि, **समग्र औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) उत्पादक** टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं में 'दबी हुई' (Pent-Up) खपत मांग के साथ देखी जा सकती है।
  - **आठ प्रमुख उद्योगों की वृद्धि स्थिर रही है,** जो औद्योगिक गतिविधियों में व्यापक गति को दर्शाती है।

शब्दावली को जानें

- **सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF):** RBI के अनुसार, GFCF गणना अवधि के दौरान अचल परिसंपत्तियों (यानी नियत पूंजी निर्माण) के साथ–साथ स्टॉक्स में परिवर्तन के कुल योग को संदर्भित करता है। अचल परिसंपत्ति में निर्माण–कार्य, मशीनरी और उपकरण आदि शामिल हैं।
- **उच्च–आवृत्ति संकेतक (HFIs):** यह दैनिक आधार पर अर्थव्यवस्था के कई पहलुओं पर डेटा की एक श्रृंखला प्रदान करते हैं। जैसे– उर्वरक की बिक्री, कृषि वस्तुओं में व्यापार, नए व्यवसायों का पंजीकरण, ई–वे बिल आदि पर।
- **क्रय प्रबंधक सूचकांक (PMI– विनिर्माण):** यह एक सर्वेक्षण–आधारित साधन है जो लोगों से पिछले महीने की तुलना में प्रमुख व्यावसायिक चरों के बारे में उनकी धारणा में बदलाव के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। यह विनिर्माण और सेवा क्षेत्रकों में आर्थिक प्रवृत्तियों की मौजूदा स्थिति का सूचकांक है।

- **वित्त वर्ष 2023 की पहली छमाही में औद्योगिक विकास के सामने आने वाली बाधाएं।**
  - **मौसमी प्रकृति:** इसने खनन और उत्खनन तथा विनिर्माण के संबंध में उत्पादन की गति को बाधित किया है।
    - **उच्च वर्षा के कारण तापमान ठंडा होने से विद्युत की मांग में गिरावट आई है।** अतः ऐसे में वित्त वर्ष 2022 की दूसरी तिमाही की तुलना में वित्त वर्ष 2023 की दूसरी तिमाही में उत्पादन में 5 प्रतिशत से भी कम की वृद्धि हुई है।
  - **बड़ी इन्वेंटरी (Large inventory):** ऐसा प्रतीत होता है कि विनिर्माण उत्पादन, **व्यापक रूप से** संचित **स्टॉक** के कारण बाधित हुआ है।

- मौजूदा मांग को पूरा करने वाले संचित स्टॉक के कारण विनिर्माण की गति मंद हो जाती है। सामान्यतः पहले मौजूदा मांग को पूरा करने के लिए संचित स्टॉक को खाली करने के बाद ही नया उत्पादन किया जाता है।
- **विनिर्माण परिदृश्य में असमान वृद्धि**

निरंतर वृद्धि	• मजबूत मांग और चिप की कमी के मामले में सुधार करते हुए मोटर वाहन निर्माण खंड का प्रदर्शन लगातार बेहतर हो रहा है। • 'कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक और ऑप्टिकल उत्पादों' का निर्माण भी बढ़ रहा है। • कोक और रिफाइंड पेट्रोलियम का उत्पादन भी बढ़ा है। • कास्टिक सोडा, सोडा ऐश, उर्वरक और पेट्रोलियम उत्पादों जैसे रसायनों तथा रासायनिक उत्पादों ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है।
धीमी वृद्धि	• **प्रतिकूल आधार प्रभाव (Base Effect)** और महामारी के प्रभाव के कम होने के कारण **फार्मास्युटिकल उत्पादन** की दर में गिरावट आई है। • साथ ही, **वस्त्र, परिधान और चमड़े** में वृद्धि की दर मंद रही है। गौरतलब है कि वैश्विक उत्पादन और मांग में कमी के साथ इन उत्पादों की निर्यात मांग में भी गिरावट आई है।

उद्योग के लिए बैंक ऋण में मजबूत वृद्धि

- क्षमता के बढ़ते उपयोग और विनिर्माण क्षेत्रक में निवेश के साथ **ऋण मांग में मजबूत वृद्धि, भविष्य की मांग के संबंध में व्यवसायिक संभावनाओं को रेखांकित करती है।**
- **बैंक ऋण का एक बड़ा हिस्सा, बड़े उद्योगों को प्रदान किया जा रहा है।**
- साथ ही, **इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम (ECLGS)** की शुरुआत ने **MSMEs के लिए ऋण उपलब्धता को बढ़ाया है।** साथ ही, इस योजना के माध्यम से लगभग 1.2 करोड़ व्यवसाय को समर्थन पहुंचाया गया है, जिनमें से 95 प्रतिशत MSMEs से संबंधित हैं।

Double-digit credit growth in Industry driven by MSMEs

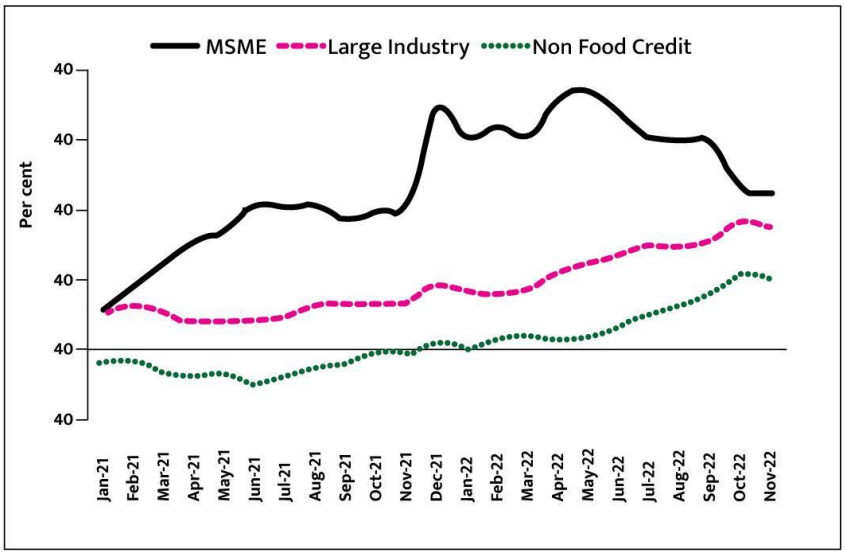

Source: RBI

विनिर्माण क्षेत्रक में लचीला FDI अंतर्वाह

- **विनिर्माण क्षेत्रक में FDI इक्विटी अंतर्वाह** वित्त वर्ष 2021 के 12.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2022 में 21.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।
  - हालांकि, **रूस-यूक्रेन संघर्ष के मद्देनजर वैश्विक अनिश्चितता में वृद्धि हुई है।** इससे वित्त वर्ष 2023 की पहली छमाही में विनिर्माण में FDI इक्विटी अंतर्वाह, वित्त वर्ष 2022 की पहली छमाही के स्तर से नीचे गिर गया है।
- वैश्विक स्तर पर **मौद्रिक सख्ती** ने FDI इक्विटी प्रवाह को और सीमित कर दिया है।

Sector-wise FDI Equity Inflows in 2022-23 during April-September 2022

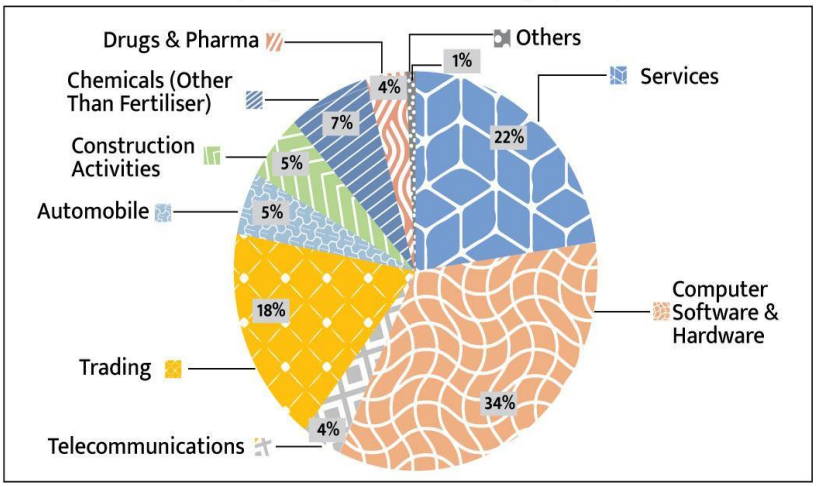

Source: DPIIT data

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

निवेश को बढ़ावा देने के लिए FDI नीति में सुधार

- वित्त वर्ष 2020 में कोयले की बिक्री और संबद्ध प्रसंस्करण अवसंरचना सहित कोयला खनन गतिविधियों के लिए **स्वचालित मार्ग के तहत 100 प्रतिशत FDI की अनुमति दी गई थी।**
- **डिजिटल मीडिया के माध्यम से समाचार और करंट अफेयर्स को अपलोड/ स्ट्रीम करने के लिए** सरकारी प्रणाली के तहत 26 प्रतिशत FDI की अनुमति दी गई है।
- **मध्यस्थों या बीमा मध्यस्थ कम्पनियों** में 100 प्रतिशत FDI की अनुमति दी गई है।
- **कोविड-19 महामारी के कारण भारतीय कंपनियों को अवसरवादी तरीके से नियंत्रण में लेने पर अंकुश लगाने के लिए सरकार ने FDI नीति में संशोधन किया, जिसके अनुसार-**
  - **निम्नलिखित द्वारा केवल सरकारी मार्ग के तहत निवेश किया जा सकता है-**
    - भारत के साथ एक भूमि सीमा साझा करने वाले किसी देश की एक इकाई, या
    - ऐसा देश जहां भारत में निवेश का लाभार्थी स्वामी स्थित है, या
    - ऐसे किसी भी देश का नागरिक,
  - भारत में किसी कंपनी में वर्तमान या भविष्य की FDI में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष स्वामित्व हस्तांतरण के मामले में लाभार्थी स्वामित्व में आगे परिवर्तन के लिए सरकार की मंजूरी आवश्यक होगी।
- **मई 2017 में पूर्ववर्ती विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (FIPB) को समाप्त कर दिया गया था।** इसे विदेशी निवेश की स्वीकृति प्रक्रिया को सरल बनाने और कारोबार में सुगमता को बढ़ावा देने के लिए समाप्त किया गया था।
  - FDI के लिए आवेदनों की प्रक्रिया संबंधित मंत्रालयों/विभागों को सौंपी गई है। **इस प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए DPIIT को एक नोडल विभाग के रूप में नियुक्त किया गया है।**
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सुविधा हेतु निवेशकों के लिए भारत सरकार के ऑनलाइन एकल-बिंदु इंटरफ़ेस के रूप में **विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल (FIF पोर्टल)** को लॉन्च किया गया है।

उद्योग समूह और उनकी चुनौतियां

- **सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs):** समग्र GVA में MSMEs क्षेत्रक का योगदान वित्त वर्ष 2018 के 29.3 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 2020 में 30.5 प्रतिशत हो गया था। हालांकि, महामारी के आर्थिक प्रभाव के कारण वित्त वर्ष 2021 में इस क्षेत्रक की हिस्सेदारी घटकर 26.8 प्रतिशत हो गई।

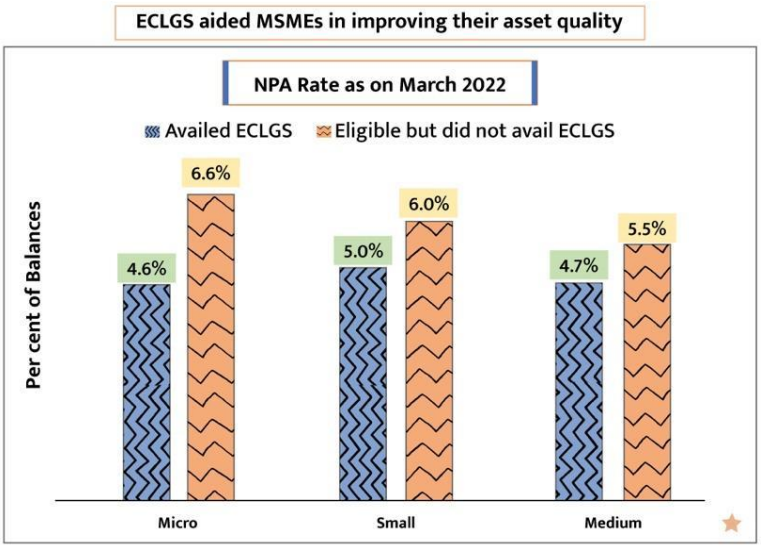

Source: ECLGS Insights Report', TransUnion CIBIL, August 2022

  - **सरकार द्वारा उठाए गए कदम**
    - **MSMEs की परिभाषा में संशोधन;**
    - तनावग्रस्त MSMEs के लिए 20,000 करोड़ रुपये के अधीनस्थ ऋण का प्रावधान;
    - **आत्मनिर्भर भारत फंड** के माध्यम से 50,000 करोड़ रुपये का इक्विटी निवेश/ इन्फ्यूजन;
    - 200 करोड़ रुपये तक की खरीद के लिए **वैश्विक निविदा की आवश्यकता से छूट;**
    - MSMEs पंजीकरण के लिए **उद्यम पोर्टल की शुरुआत।**
  - MSMEs क्षेत्रक की बकाया राशि की निगरानी के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास (MSMED) अधिनियम के तहत **'समाधान पोर्टल'** को स्थापित किया गया है। यह MSMEs को उनकी नकदी प्रवाह की कठिनाइयों को हल करने में मदद कर रहा है।
  - MSME के लिए सिंगल-विंडो शिकायत निवारण हेतु MSMEs मंत्रालय द्वारा **'चैंपियन्स पोर्टल'** लॉन्च किया गया है।

- **सरकार ने वित्त वर्ष 2023 में 'MSMEs के प्रदर्शन में बेहतरी और तेजी' RAMP(Raising and Accelerating MSME Performance' scheme : RAMP) योजना की भी शुरुआत की है।**
  - इसका उद्देश्य केंद्र-राज्य संबंधों और साझेदारी तथा **MSMEs की बाजार ऋण तक पहुंच में सुधार करना है।** इसके अलावा, इसका उद्देश्य **प्रौद्योगिकी उन्नयन और विलंबित भुगतान के मुद्दों का समाधान** करना है। साथ ही, MSMEs का कायाकल्प करना भी इसका उद्देश्य है।
  - यह **विश्व बैंक समर्थित योजना है।**
  - इसे **पांच वर्ष की अवधि के लिए कार्यान्वित किया जाएगा।**

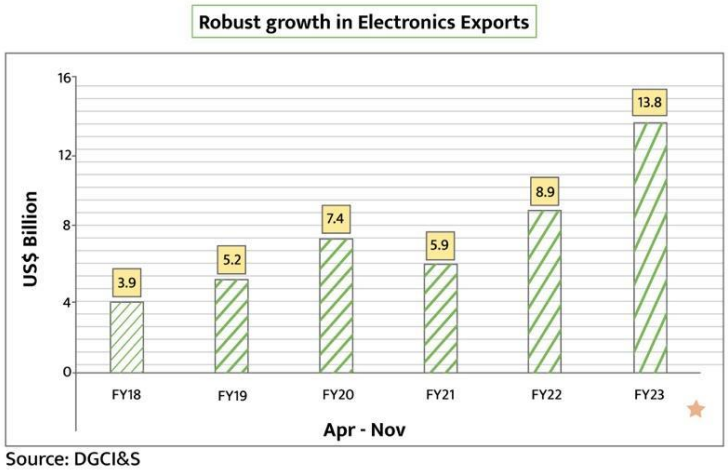

Source: DGCI&S

- **इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग**
  - वित्त वर्ष 2020 तक घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग का **मूल्य 118 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया था।
    - सकारात्मक निर्यात वृद्धि प्रदर्शित करने वाले शीर्ष पांच समूहों में इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं शामिल थी।
    - मोबाइल **फोन खंड में, भारत वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन निर्माता बन गया है।**
  - **उद्योग 4.0 में बेहतर डिजिटलीकरण और रोबोटिक्स अनुप्रयोगों** के कारण औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्रक में भी वृद्धि देखी जा रही है।
    - इसके अतिरिक्त, स्मार्ट सिटीज और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) को बढ़ावा दिए जाने से स्मार्ट तथा स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक की मांग को भी सुव्यवस्थित करने में मदद मिलेगी।
  - **इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण के लिए की गई पहलें**
    - बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए PLI योजना,
    - आई.टी. हार्डवेयर के लिए PLI योजना।
- **कोयला उद्योग**
  - वित्त वर्ष की शुरुआत में, **आर्थिक गतिविधियों में पुनरुत्थान और हीट वेव के कारण देश में विद्युत की मांग अत्यधिक बढ़** गई थी। साथ ही, विद्युत उत्पादन के लिए कोयले की उपलब्धता एक चुनौती बन गई थी।
  - **सरकार द्वारा उठाए गए कदम**
    - सभी उत्पादकों को **अपनी आवश्यकता के 10 प्रतिशत तक कोयले का आयात करने** के लिए कहा गया था।
    - विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 11 को लागू किया गया था। इसके अंतर्गत आयातित **कोयले पर चलने वाले सभी संयंत्रों को निर्देशित किया गया था कि वे पूरी संचालन क्षमता से प्रचालन करें।** उनकी बढ़ी हुई प्रचालन लागत की भरपाई की जाएगी।
    - **टोलिंग (Tolling) प्रणाली को सक्षम बनाया** गया है। इसके तहत राज्यों को अपने आवंटित कोयले को खानों के पास निजी उत्पादकों को स्थानांतरित करने की अनुमति दी गई है।
    - ग्रामीण विद्युतीकरण निगम (REC)/ पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन (PFC) और वाणिज्यिक बैंकों को सलाह दी गई थी कि वे विद्युत उत्पादन संयंत्रों को अतिरिक्त कार्यशील पूंजी की उपलब्धता की सुविधा प्रदान करें।
  - **कोयला उद्योग के प्रतिवर्ष 6-7 प्रतिशत की दर से बढ़ने** की उम्मीद है। इस दर से यह वित्त वर्ष 2026 तक 1 बिलियन टन और 2030 तक लगभग 1.5 बिलियन टन के उत्पादन स्तर तक पहुंच जाएगा।
- **इस्पात उद्योग**
  - वर्तमान वित्त वर्ष में इस्पात क्षेत्रक के प्रदर्शन में जबरदस्त वृद्धि देखी गई है। इसके तहत, तैयार इस्पात का संचयी उत्पादन और खपत क्रमशः 88 मीट्रिक टन तथा 86 मीट्रिक टन रहा है।
  - **खपत में दोहरे अंकों की वृद्धि** (वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 11 प्रतिशत) के चलते **तैयार इस्पात उत्पादन में भी वृद्धि आई** है।
  - **वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी के कारण** चालू वित्त वर्ष के पहले **आठ महीनों में लौह और इस्पात का निर्यात कम हुआ है।** हालांकि, यह वित्त वर्ष 2020 की महामारी से पहले के स्तर की तुलना में 20 प्रतिशत अधिक है।

VISION IAS

- **वस्त्र उद्योग**
  - वित्त वर्ष 2022 की तुलना में वस्त्र उद्योग, मंद निर्यात से जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा है।
  - वस्त्र क्षेत्र में FDI प्रवाह अभी भी महामारी से पहले के स्तर तक नहीं पहुंच पाया है।
  - **सरकार द्वारा उठाए गए कदम**
    - सरकार ने सात **पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल (पीएम मित्रा) पार्कों की स्थापना** को मंजूरी दी है।
    - 10,683 करोड़ रुपये के स्वीकृत परिव्यय के साथ 1 जनवरी, 2022 से अगले पांच वर्षों के लिए **वस्त्र उद्योग हेतु 'उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन' (PLI) योजना** को मंजूरी दी गई है।

सेमीकंडक्टर विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन योजना

- **डिजाइन लिंक्ड-इंसेंटिव (DLI) योजना:** इसे सेमीकंडक्टर डिजाइन से जुड़ी घरेलू कंपनियों के पोषण और सुविधा के लिए शुरू किया गया है। इससे देश भर में तैनात सेमीकंडक्टर उत्पादों और IP के उल्लेखनीय स्वदेशीकरण को प्राप्त करने तथा सेमीकंडक्टर डिजाइन के लिए अवसंरचना को मजबूत करने में मदद मिलेगी।
- **भारत में सेमीकंडक्टर्स और डिस्प्ले मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम के विकास के लिए कार्यक्रम:** यह देश में एक मजबूत एवं स्थायी सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले इकोसिस्टम के गहन विकास को सुनिश्चित करने में सहयोग करेगा।
- **इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और अर्धचालकों के विनिर्माण को बढ़ावा देने की योजना (Scheme for Promotion of Manufacturing of Electronic Components and Semiconductors: SPECS)।**

सेमीकंडक्टर योजना के तहत अलग-अलग प्रोत्साहन

योजना	वित्तीय सहायता	अनुसंधान और विकास सहायता
भारत में सेमीकंडक्टर फैब की स्थापना के लिए योजना।	कंपनी के पूंजीगत व्यय का 50 प्रतिशत।	योजना परिव्यय का 2.5 प्रतिशत तक।
डिस्प्ले फैब की स्थापना के लिए योजना।	कंपनी के पूंजीगत व्यय का 50 प्रतिशत।	योजना परिव्यय का 2.5 प्रतिशत तक।
कंपाउंड सेमीकंडक्टर/सिलिकॉन फोटोनिक्स/सेंसर फैब और सेमीकंडक्टर ATMP/OSAT सुविधाओं की स्थापना के लिए योजना।	कंपनी के पूंजीगत व्यय का 50 प्रतिशत।	योजना परिव्यय का 2.5 प्रतिशत तक।

स्रोत: MeitY

- **औषधि उद्योग**
  - भारत के घरेलू औषधि बाजार का मूल्य 2021 में 41 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। इसके 2024 तक 65 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ने की संभावना है।
  - मात्रा के आधार पर, औषधि उत्पादों के उत्पादन में **भारत दुनिया भर में तीसरे और मूल्य के हिसाब से औषधि उत्पादों के उत्पादन में 14वें स्थान पर है।**
  - **इसके अलावा, भारत वैश्विक स्तर पर जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा प्रदाता है।** मात्रा के हिसाब से वैश्विक आपूर्ति में इसकी हिस्सेदारी लगभग 20 प्रतिशत रही है।

फार्मास्युटिकल/ औषध क्षेत्रक में विनिर्माण क्षमता को बढ़ावा देने के लिए तीन उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजनाएं

महत्वपूर्ण प्रारंभिक सामग्री (KSMs)/ ड्रग इंटरमीडिएट्स (DIs) और सक्रिय औषध सामग्री (APIs) के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए	विकित्सीय उपकरण हेतु	फार्मास्युटिकल/औषधि हेतु
▸ **अवधि:** वित्त वर्ष 2020–21 से वित्त वर्ष 2029–30	▸ **अवधि:** वित्त वर्ष 2020–21 से वित्त वर्ष 2027–28	▸ **अवधि:** वित्त वर्ष 2020–21 से वित्त वर्ष 2028–29
▸ **परिव्यय:** 6,940 करोड़ रुपये	▸ **परिव्यय:** 3,420 करोड़ रुपये	▸ **परिव्यय (Outlay):** 15,000 करोड़ रुपये
▸ **प्रगति:** दिसंबर 2022 तक, 51 आवेदकों को मंजूरी दी गई है, जिन्होंने 4,138.4 करोड़ रुपये के निवेश के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है।	▸ **प्रगति:** दिसंबर 2022 तक, 21 आवेदकों को मंजूरी दी गई है, जिन्होंने 1058.97 करोड़ रुपये के निवेश के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है।	▸ **प्रगति: दिसंबर 2022 तक, 55 आवेदकों को मंजूरी दी गई है, जिन्होंने 18,669 करोड़ रुपये के निवेश के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है।**
▸ **रोजगार:** 51 परियोजनाओं से अनुमानतः 10,598 व्यक्तियों को रोजगार मिलने की संभावना है।	▸ **रोजगार:** 21 परियोजनाओं के माध्यम से अनुमानतः 6,411 व्यक्तियों को रोजगार मिलने की संभावना है।	▸ **रोजगार:** 55 परियोजनाओं से अनुमानतः 20,000 प्रत्यक्ष और 80,000 अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन होने की संभावना है।
▸ **वित्तीय प्रोत्साहन:** अनुपलब्ध (NA)	▸ **वित्तीय प्रोत्साहन:** 5 वर्षों के लिए चिकित्सा उपकरणों की वृद्धिशील बिक्री पर वित्तीय प्रोत्साहन।	▸ **वित्तीय प्रोत्साहन:** अलग-अलग दर तथा कई श्रेणियों के तहत वृद्धिशील बिक्री पर 10 प्रतिशत से 3 प्रतिशत तक का आर्थिक प्रोत्साहन।

  - सितंबर 2022 तक FDI का अंतर्वाह विगत **पांच वर्षों में चार गुना बढ़कर** 699 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया था। यह निवेशक-अनुकूल नीतियों और उद्योग के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण हुआ है।
  - **औषध उद्योग को मजबूत बनाने (SPI) की योजना**
    - इसका उद्देश्य **वित्तीय सहायता प्रदान करके मौजूदा बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करना** है, ताकि सामान्य सुविधाएं तैयार की जा सके।

- यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विनियामक मानकों को पूरा कर, **MSMEs की उत्पादन सुविधाओं को बेहतर बनाने में मदद** करता है।
- यह औषध और चिकित्सा उपकरण उद्योग के विषय में **ज्ञान तथा जागरूकता** को बढ़ावा देता है।

- **ऑटोमोबाइल बाजार**
  - दिसंबर 2022 में, भारत दुनिया का **तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार बन गया है।**
  - 2021 में, भारत **दोपहिया और तिपहिया वाहनों का सबसे बड़ा निर्माता** तथा **यात्री वाहनों का दुनिया का चौथा सबसे बड़ा विनिर्माता** था।
  - ऐसा अनुमान है कि घरेलू इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बाजार **2022 और 2030 के बीच 49 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR)** से बढ़ेगा।
  - **चुनौतियां**
    - **उच्च ऋण लागत और वैश्विक मांग में कमी।**
    - **दीर्घकालिक तृतीय-पक्ष वाहन बीमा प्रीमियम** में वृद्धि।

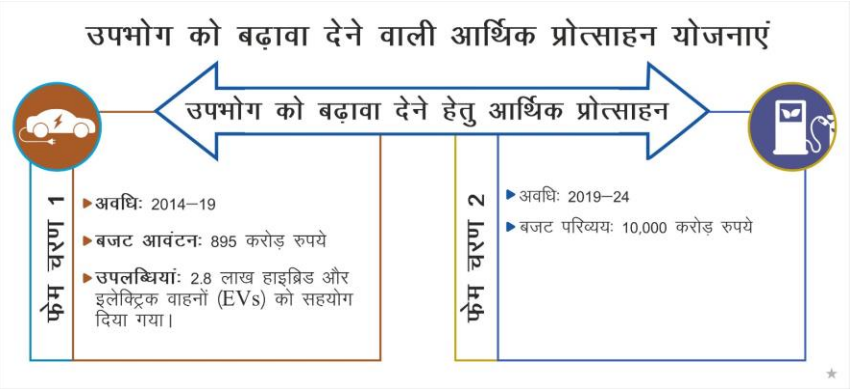

वैश्विक मूल्य श्रृंखला में एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में भारत की संभावनाएं

- आपूर्ति श्रृंखला के आघातों का जोखिम आज की तुलना में कभी भी इतना अधिक प्रबल नहीं रहा है। यह अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध, कोविड-19 महामारी और यूक्रेन में युद्ध के जटिल संकटों के बाद उत्पन्न हुआ है।
- भारत सरकार ने इस दशक में देश को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में आवश्यक कदम उठाए हैं।
  - **मेक इन इंडिया 2.0 और PLI योजना**
    - यह **27 क्षेत्रों पर केंद्रित** है। इसमें 15 विनिर्माण क्षेत्र से तथा 12 सेवा क्षेत्र से संबंधित हैं।

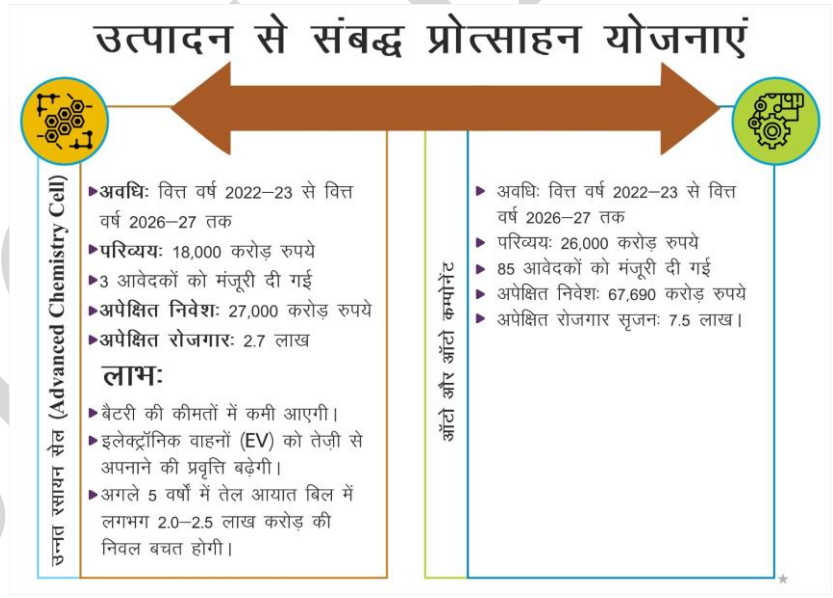

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- इनमें से **24 उप-क्षेत्रों** को **भारतीय उद्योगों की सामर्थ्य एवं प्रतिस्पर्धात्मकता संबंधी बढ़त** को ध्यान में रखते हुए चुना गया है।
- 14 क्षेत्रों में फैली PLI योजना वित्त वर्ष 23 से भारत के वार्षिक विनिर्माण पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) को 15 से 20 प्रतिशत तक बढ़ा सकती है।
- **PLI योजना में हालिया विकास**

- दूरसंचार निर्माण में संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को बढ़ावा देने और 5G के लिए एक मजबूत कारोबारी माहौल तैयार करने के लिए जून 2022 में **एक डिजाइन-आधारित PLI** का शुभारंभ किया गया है।
- हाल ही में, मंत्रिमंडल ने **'उच्च दक्षता वाले सौर फोटोवोल्टिक मॉड्यूल के राष्ट्रीय कार्यक्रम'** पर PLI योजना (ट्रांच II) को मंजूरी दी है।
  - **नवाचार को बढ़ावा देना:** सरकार ने अपने बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था या शासन को मजबूत किया है। यह बौद्धिक संपदा (IP) कार्यालय का आधुनिकीकरण करके एवं कानूनी अनुपालन को कम करके व स्टार्ट-अप, महिला उद्यमियों, छोटे उद्योगों और अन्य लोगों के लिए IP फाइलिंग की सुविधा देकर हासिल किया गया है।
  - इसके परिणामस्वरूप 2016-2021 में **पेटेंट की घरेलू फाइलिंग में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।** यह वृद्धि ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर भारत के बढ़ते कदम को दर्शाती है।
  - GII 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, **भारत** 2022 में पहली बार **शीर्ष 40 नवाचारी देशों में शामिल** हुआ है।

फ़्लिपिंग और रिवर्स फ़्लिपिंग: स्टार्ट-अप्स से जुड़े हालिया घटनाक्रम

भारत दुनिया के सबसे बड़े स्टार्ट-अप इकोसिस्टम वाले देशों में से एक है। लगभग 48 प्रतिशत भारतीय स्टार्टअप टियर II और III शहरों से संबंधित हैं, जो हमारे जनसामान्य की जबरदस्त क्षमता का एक प्रमाण है। हाल ही में, यह भी देखा गया है कि कई भारतीय कंपनियों के मुख्यालय विदेशों में बन रहे हैं।

- फ़्लिपिंग के तहत किसी भारतीय कंपनी के संपूर्ण स्वामित्व को किसी विदेशी संस्था को स्थानांतरित किया जाता है। इसके तहत भारतीय कंपनी द्वारा सभी IP एवं अपने स्वामित्व वाले सभी डेटा का हस्तांतरण किया जाता है।
- फ्लिपिंग वस्तुतः गतिशील, अनिश्चित भू-राजनीतिक दुनिया में अल्पकालिक लाभ के लिए स्टार्टअप्स को देश से बाहर ले जाने की प्रक्रिया को दर्शाता है।
- **फ्लिपिंग हेतु उत्तरदायी कारण**
  - वाणिज्यिक, कराधान और संस्थापकों तथा निवेशकों की व्यक्तिगत प्राथमिकताएं।
  - उत्पाद का मुख्य बाजार बाहर स्थित होना।
  - बेहतर मूल्यांकन और निवेश (Ticket Size) के लिए किसी दूसरे देश के पूंजी बाजार तक पहुंच प्राप्त करना।
- फ्लिपिंग को सरकार से संबंधित विनियामक निकायों एवं अन्य हितधारकों द्वारा सामूहिक कार्रवाई के साथ उलटा जा सकता है।

संरचनात्मक सुधार के माध्यम से ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ावा देना

- **'मेक इन इंडिया' पहल:** यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि देश में व्यापार परिवेश निवेशकों के लिए अनुकूल हो।
  - **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस**
  - कानूनों में संशोधन और अनुपालन बोझ को कम करने के लिए दिशा-निर्देशों तथा विनियमों का उदारीकरण किया जा रहा है।
  - विनिर्माण और निवेश को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमों में **कॉर्पोरेट टैक्स में कमी, सार्वजनिक खरीद तथा चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम शामिल हैं।**
- **DPIIT की बिजनेस रिफॉर्म एक्शन प्लान (BRAP) 2020 (पांचवां संस्करण) की शुरुआत** की गई है। यह राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा सुधारों के कार्यान्वयन पर आधारित है। इसे 30 जून, 2022 को जारी किया गया था।

भारत और उद्योग 4.0

- भारत ने **इंटरनेट की पहुंच** में उल्लेखनीय प्रगति की है जो उद्योग 4.0 की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक है।
- **सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन में आत्मनिर्भरता** की दिशा में किया जाने वाला प्रयास है। यह भारत को अति-कुशल प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी में एक और स्तंभ स्थापित करने में मदद करेगा।

- **उद्योग 4.0 के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम**
    - **'स्मार्ट एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग एंड रैपिड ट्रांसफॉर्मेशन हब' यानी समर्थ उद्योग भारत 4.0** शुरू किया गया है। यह भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय की एक पहल है। यह जागरूकता कार्यक्रमों और प्रदर्शनों के माध्यम से भारतीय विनिर्माण इकाइयों को तकनीकी समाधान प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
    - वर्ष 2018 में चौथी औद्योगिक क्रांति के लिए इसे शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य उभरती प्रौद्योगिकियों के लिए नीतिगत फ्रेमवर्क को विकसित करना है।

निष्कर्ष

आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में सुधार की क्षमता और अवधि, कई कारकों पर निर्भर करेगी। इसमें चीन की आर्थिक सुधार की गति तथा उत्तरी अमेरिका और यूरोप में विकास दृष्टिकोण जैसे कारक शामिल हैं। इस तरह के अनुत्तरित प्रश्नों के बावजूद, भारत में औद्योगिक उत्पादन लचीली घरेलू मांग के आधार पर लगातार बढ़ते रहना चाहिए।

अध्याय - एक नज़र में

- **औद्योगिक विकास के लिए मांग प्रोत्साहन**
    - **समग्र खुदरा मुद्रास्फीति** में कमी
    - मजबूत बाह्य मांग
    - केंद्र सरकार के पूंजीगत बजट (कैपेक्स) में वृद्धि के कारण निवेश की मांग में वृद्धि हुई है।
- मांग प्रोत्साहन के प्रति उद्योग की आपूर्ति प्रतिक्रिया मजबूत रही है, जैसा कि **उच्च-आवृत्ति वाले संकेतकों में देखा गया है।**
- **उद्योग के प्रति ऋण और FDI रुझान**
    - बड़े उद्योगों को बैंक ऋण का बड़ा हिस्सा।
    - **MSMEs को दिए जाने वाले ऋण** में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।
    - विनिर्माण क्षेत्र में **वार्षिक FDI इक्विटी अंतर्वाह में उछाल आया है।**
- **उद्योग समूह**
    - भारत विश्व स्तर पर **दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन निर्माता बन गया है।**
    - चालू वित्त वर्ष में **इस्पात क्षेत्रक का** प्रदर्शन सराहनीय रहा है।
    - वित्त वर्ष 2022 की तुलना में **वस्त्र उद्योग**, मंद निर्यात से जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा है।
    - ऐसी संभावना है कि **भारत का घरेलू औषध बाजार 2021 में** 41 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा। साथ ही, यह 2024 तक यह 65 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकता है।
    - दिसंबर 2022 में, **भारत तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार बन गया।**
- **भारत सरकार** ने इस दशक में देश को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने हेतु **मेक इन इंडिया 2.0 और PLI योजना** शुरू की है।
- **नवाचार को बढ़ावा:** सरकार ने अपने बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था या शासन को मजबूत किया है। यह बौद्धिक संपदा (IP) कार्यालय का आधुनिकीकरण करके एवं कानूनी अनुपालन को कम करके व स्टार्ट-अप, महिला उद्यमियों, छोटे उद्योगों और अन्य लोगों के लिए IP फाइलिंग की सुविधा देकर हासिल किया गया है।
- **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ावा देने वाले संरचनात्मक सुधार**
    - **'मेक इन इंडिया'**
    - **कानूनों में संशोधन और दिशा-निर्देशों का उदारीकरण**
    - **DPIIT की बिजनेस रिफॉर्म एक्शन प्लान (BRAP) 2020**
- भारत ने **इंटरनेट के विस्तार** में महत्वपूर्ण प्रगति की है जो उद्योग 4.0 की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक है।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

बजट में क्या कहा गया है?

प्रभावी पूंजीगत व्ययः इस पर सकल घरेलू उत्पाद के 4.5% का पूंजीगत व्यय तय किया गया है।

रेलवेः इसके लिए 2.40 लाख करोड़ रुपये के पूंजीगत परिव्यय का प्रावधान किया गया है। यह **अब तक का सर्वाधिक परिव्यय है।**

लॉजिस्टिकः बंदरगाहों, कोयला, इस्पात, उर्वरक और खाद्यान्न क्षेत्रकों के लिए शुरू से लेकर अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी (Last and first mile connectivity) हेतु **100 महत्वपूर्ण परिवहन अवसंरचना संबंधी परियोजनाओं** की पहचान की गई है।

क्षेत्रीय कनेक्टिविटी (Regional Connectivity): क्षेत्रीय हवाई कनेक्टिविटी में सुधार के लिए 50 अतिरिक्त हवाई अड्डों, हेलीपोर्ट्स, वाटर एयरोड्रोम और एडवांस लैंडिंग ग्राउंड्स का पुनरुद्धार किया जाएगा।

हरित मोबिलिटी (Green Mobility): GST का भुगतान की गई संपीड़ित बायोगैस पर **उत्पाद शुल्क में छूट** देने का प्रस्ताव किया गया है। इसका उद्देश्य **करों की कैस्केडिंग से बचना है।**

- इलेक्ट्रिक वाहनों में इस्तेमाल होने वाली बैटरियों के लिए लिथियम–आयन सेल्स के विनिर्माण हेतु जरूरी पूंजीगत सामग्री और मशीनरी के आयात पर सीमा शुल्क में छूट दी गयी है।

आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्सः मोबाइल फोन के विनिर्माण में घरेलू मूल्यवर्धन को बढ़ाने के लिए कैमरे के लेंस जैसे कुछ घटकों और इनपुट के आयात पर सीमा शुल्क में राहत दी गई है।

- टीवी पैनल के ओपन सेल के पुर्जों पर मूल सीमा शुल्क (Basic Custom Duty: BCD) को घटाकर 2.5% किया जाएगा
- बैटरियों के लिए लिथियम–आयन सेल्स पर रियायती शुल्क अगले एक साल तक जारी रहेगा।

प्रयोगशाला में निर्मित हीरेः हीरा उद्योग को सहयोग देने के लिए प्रयोगशाला में हीरों के विनिर्माण में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल पर BCD को मौजूदा 5% से घटाकर शून्य किया जाएगा।

अध्याय 9

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. भारत में FDI नीति सुधारों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोयले की बिक्री और कोयला खनन गतिविधियों के लिए स्वचालित मार्ग के तहत 100 प्रतिशत FDI की अनुमति दी गई है।
2. डिजिटल मीडिया के माध्यम से समाचार और समसामयिकी को अपलोड/ स्ट्रीम करने हेतु सरकारी मार्ग के तहत 100 प्रतिशत FDI की अनुमति दी गई है।
3. मध्यवर्तियों या बीमा मध्यवर्तियों में 100 प्रतिशत FDI की अनुमति दी गई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 1 और 3
(d) केवल 2 और 3

2. भारत में फार्मास्यूटिकल्स उद्योग के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मूल्य के हिसाब से फार्मा उत्पादों के उत्पादन के मामले में भारत का दुनिया में तीसरा स्थान है।
2. वैश्विक स्तर पर मात्रा के हिसाब से जेनेरिक दवाओं में भारत की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

3. भारत में स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के संदर्भ में, पिलपिंग शब्द संदर्भित करता है:

(a) कानूनी खामियों का उपयोग करके कर की चोरी करना।
(b) यह किसी भारतीय कंपनी के संपूर्ण स्वामित्व को किसी विदेशी कंपनी को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया है।
(c) शैल कंपनियों के माध्यम से राजस्व की रुटिंग करना।
(d) एक बिलियन डॉलर का बाजार पूंजीकरण प्राप्त करना।

4. 'MSMEs के प्रदर्शन को बढ़ाने और तीव्र करने की योजना' के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसका उद्देश्य बाजार, ऋण व प्रौद्योगिकी उन्नयन तक MSMEs की पहुंच में सुधार करना और विलंबित भुगतानों का समाधान करना है।
2. यह विश्व बैंक समर्थित योजना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

5. सिंगल-विंडो शिकायत निवारण पोर्टल 'चैंपियन्स' किसके द्वारा शुरू किया गया है:
   (a) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय
   (b) सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय
   (c) विद्युत मंत्रालय
   (d) रेल मंत्रालय

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. हाल के दिनों में, विपरीत वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद भारतीय औद्योगिक संवृद्धि मार्ग के लचीलेपन के लिए जिम्मेदार कारकों का विश्लेषण कीजिए।

Q2. वैश्विक मूल्य श्रृंखला के संदर्भ में भारत की आशाजनक भूमिका का पता सरकार द्वारा किए गए उपायों और पहलों की प्रचुरता से लगाया जा सकता है। चर्चा कीजिए।

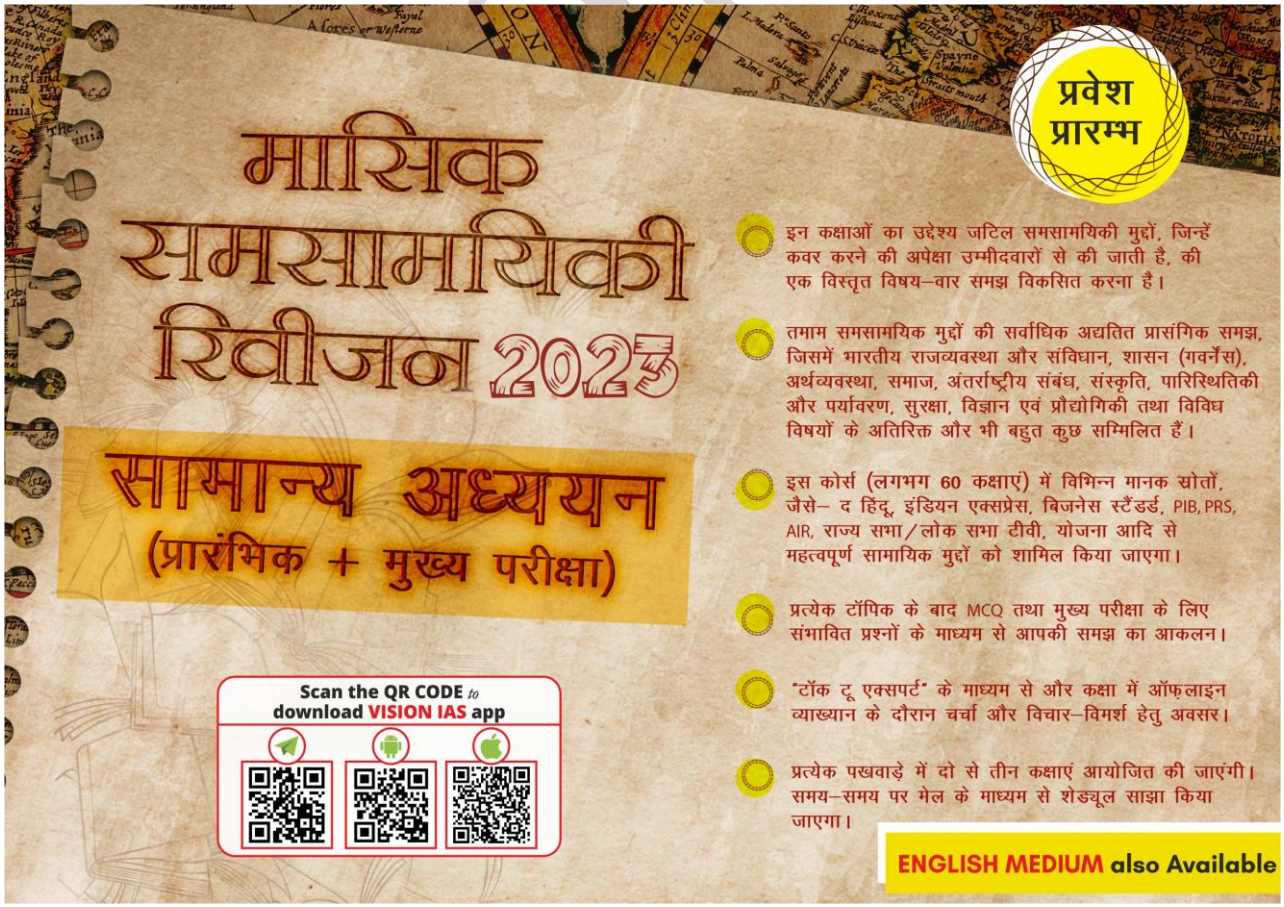

अध्याय 10: सेवाएं: शक्ति का स्रोत (Services: Source Of Strength)

परिचय

वित्त वर्ष 2022 में सेवा क्षेत्रक में तीव्र सुधार देखा गया है। यह सुधार मुख्यतः **मांग में वृद्धि, आवाजाही संबंधी प्रतिबंधों में ढिलाई, लगभग-सार्वभौमिक टीकाकरण कवरेज और संरक्षणवादी सरकारी हस्तक्षेपों** के कारण हुआ है।

भारत **2021 में शीर्ष दस सेवा निर्यातक देशों में से एक** रहा है। वैश्विक स्तर पर वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी **2015 के 3% से बढ़कर 2021 में 4%** हो गई थी।

वित्त वर्ष 2023 के पहले अग्रिम अनुमानों के अनुसार सेवा क्षेत्रक में सकल मूल्य वर्धित (Gross Value Added: GVA) वृद्धि **संपर्क-गहन सेवा क्षेत्रकों (पर्यटन, खुदरा व्यापार, होटल, मनोरंजन और मनोरंजन) द्वारा संचालित होगी।**

उप-क्षेत्रकों का प्रदर्शन

पर्यटन और होटल उद्योग

पर्यटन:

- **संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन** (नवंबर 2022) **के विश्व पर्यटन बैरोमीटर के अनुसार,** अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन ने जनवरी-सितंबर 2022 में बेहतर प्रदर्शन किया है।
  - मजबूत **मांग, विश्वास के स्तर में सुधार और प्रतिबंधों को हटाने से** पर्यटन को बढ़ावा मिला है।
- **चिकित्सा पर्यटन:**
  - **मेडिकल टूरिज्म एसोसिएशन द्वारा वित्त वर्ष 2021 के लिए जारी मेडिकल टूरिज्म इंडेक्स में** भारत शीर्ष **46** देशों में से 10 वें स्थान पर है।
- **होटल उद्योग:**
  - ऑक्यूपेंसी रेट (Occupancy Rate) में सुधार, **औसत कक्ष दर (Average Room Rate: ARR) में वृद्धि और प्रति उपलब्ध कक्ष राजस्व (Revenue per Available Room: RevPAR)** में वृद्धि के साथ होटल उद्योग फल-फूल रहा है।
  - ऑक्यूपेंसी रेट **पूर्ण रिकवरी के साथ 2019-20 के महामारी के पहले के औसत स्तर पर पहुंच गई है।**

रियल एस्टेट

- इस क्षेत्रक को कोविड-19 महामारी के कारण नुकसान उठाना पड़ा था।
- **रियल एस्टेट विनियमन अधिनियम (Real Estate Regulation Act: RERA) 2016** ने महामारी के बाद रियल एस्टेट क्षेत्रक में वापस तेज़ी (रिबाउंड) लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सेवा क्षेत्रक के उच्च आवृत्ति संकेतक

PMI सेवाएं

दिसंबर 2022 में इसमें तेजी आने के साथ – साथ यह बढ़कर 58.5 हो गई।

बैंक ऋण

नवंबर 2022 में सेवा क्षेत्रक ऋण में 21.3 प्रतिशत की वर्ष–दर–वर्ष वृद्धि देखी गई।

सेवाओं में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)

- अंकटाड की विश्व निवेश रिपोर्ट 2022 के अनुसार, वर्ष 2021 में भारत शीर्ष 20 FDI प्राप्तकर्ता देशों में सातवें स्थान पर था।
- वित्त वर्ष 2021–22 में भारत को अब **तक का सर्वाधिक 84.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI अंतर्वाह** प्राप्त हुआ।
- निवेश सुविधा के लिए सरकार ने कई उपाय किए हैं, जैसे कि राष्ट्रीय सिंगल विंडो प्रणाली। इसने सेवा क्षेत्रक में FDI को बढ़ावा देने में मदद की है।
- सभी सेवाओं और अवसंरचना प्रदाताओं सहित दूरसंचार सेवाओं में FDI की सीमा 100% है।
- बीमा कंपनियों में FDI की सीमा भी 49 प्रतिशत से बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दी गई है। LIC में FDI की सीमा 20% है।

सेवा व्यापार

- इसने वर्ष 2022 की दूसरी तिमाही में अपने **महामारी से पहले के उच्च स्तर** को पार कर लिया है।
- वित्तीय और ICT सेवाएं अब तक सबसे अधिक लचीली रही हैं जबकि निर्माण सेवाएं और कंटेनर शिपिंग में गिरावट आई है।
- सॉफ्टवेयर निर्यात अपेक्षाकृत लचीला रहा है जबकि सेवा निर्यात के दृष्टिकोण से परिवहन और यात्रा सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं।

पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए किए गए विभिन्न उपाय

- **आतिथ्य उद्योग का राष्ट्रीय एकीकृत डेटाबेस (NIDHI):** यह किसी देश में आवास इकाइयों का एक डेटाबेस है।
- **आतिथ्य उद्योग के लिए मूल्यांकन, जागरूकता और प्रशिक्षण प्रणाली (SAATHI):** इसका उद्देश्य उद्योग को कोविड-19 विनियमों के प्रति संवेदनशील बनाना था।
- **क्षेत्रीय संपर्क योजना-उड़े देश का आम नागरिक 3 (RCS UDAN3):** इसे क्षेत्रीय हवाई यात्राओं को वहनीय बनाकर उन्हें बढ़ावा देने हेतु शुरू किया गया था।

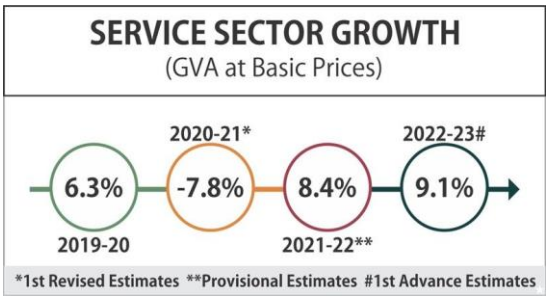

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **JLL के 2022 ग्लोबल रियल एस्टेट ट्रांसपेरेंसी इंडेक्स** के अनुसार, रियल एस्टेट बाजार पारदर्शिता के मामले में भारत **वैश्विक स्तर पर शीर्ष दस सबसे उन्नत बाजारों में से एक है।**

- **आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान: रूस-यूक्रेन संघर्ष** ने आपूर्ति श्रृंखला को और प्रभावित किया है।
  - इसके परिणामस्वरूप **इस्पात, सीमेंट, परिष्करण सामग्री, आयातित रसायनों और ईंधन की कीमतों में वृद्धि हुई है।**
  - **इससे समग्र निर्माण लागत में वृद्धि होने के साथ-साथ आवास की कीमतों में भी वृद्धि हुई है।**
- **निवेश: रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (REIT)** के साथ संस्थागत निवेश में वृद्धि हुई है।
- **रियल एस्टेट में औपचारिकता: मॉडल टेनेंसी ऐक्ट जैसी** विनियामक पहलें और **धरणी एवं महा रेरा प्लेटफॉर्म्स** के माध्यम से प्राप्त **बाजार डेटा एवं भूमि रजिस्ट्रियों का डिजिटलीकरण लाभदायक रहे हैं। इनसे** बाजार को व्यापक बनाने और इस **क्षेत्रक को अधिक औपचारिक बनाने** में मदद मिली है।

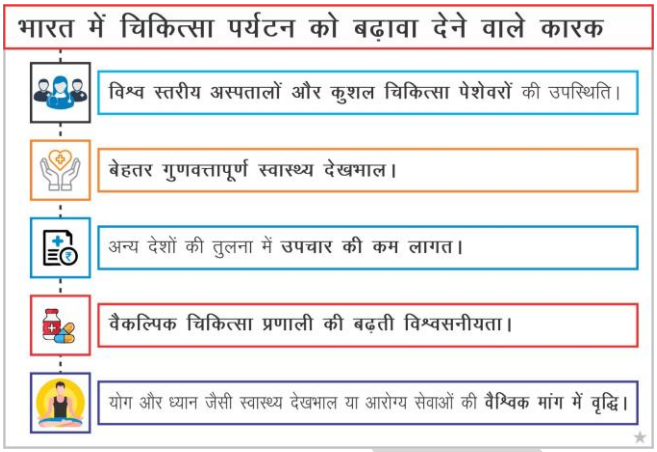

सूचना प्रौद्योगिकी और व्यवसाय प्रक्रिया प्रबंधन (Information Technology and Business Process Management: IT-BPM) उद्योग

- **कोविड के आघात के प्रति सहनशील बने रहना: नैसकॉम की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का IT-BPM उद्योग** महामारी के दौरान असाधारण रूप से लचीला रहा है।
  - **यह प्रौद्योगिकी संबंधी खर्च में वृद्धि, त्वरित प्रौद्योगिकी को अपनाने और डिजिटल परिवर्तन के कारण हुआ है।**
- **रोजगार सृजन: उद्योग ने वित्त वर्ष 2022 में प्रत्यक्ष कर्मचारी पूल में लगभग 10 प्रतिशत की अनुमानित वृद्धि दर्ज की थी।** यह इसके कर्मचारी आधार में अब तक की सर्वाधिक निवल वृद्धि है।
- **अनुसंधान और नवाचार:** भारत **इंजीनियरिंग अनुसंधान एवं विकास (ER&D) और नवाचार** के लिए एक वैश्विक पावरहाउस के रूप में उभरा है। साथ ही, यह **वैश्विक उद्यमों के लिए** भविष्य के विकास और **नवाचार** की शुरुआत हेतु दृढ़ता से प्रतिबद्ध है।
- **वैश्विक योग्यता केंद्र:** पिछले छह वर्षों में भारत में कई **वैश्विक योग्यता केंद्र (Global Competency Centres: GCCs)** शामिल किए गए हैं।
- **प्रमुख हिस्सेदारी: सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं** की **प्रमुख हिस्सेदारी (51 प्रतिशत से अधिक) रही है।**
- **प्रमुख स्तंभ:** ग्राहकोन्मुखी, डोमेन-विशिष्ट समाधान, एक डिजिटल-फर्स्ट

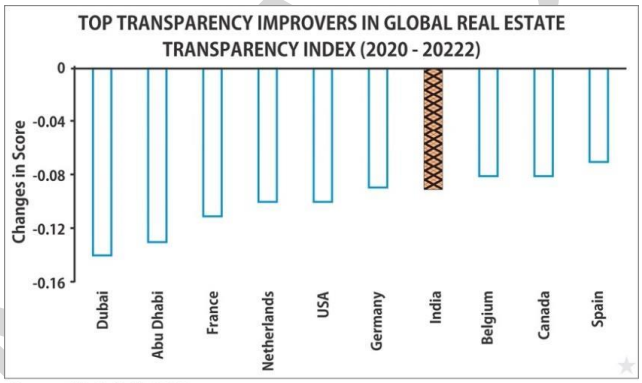

Source: JLL, LaSalle 2022

आवास क्षेत्रक को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग उपाय

- RBI ने ऋण देने वाले संस्थानों को अपने ग्राहकों को कुल 6 (3 + 3) महीने का स्थगन प्रदान करने की अनुमति दी थी।
  - स्थगन (Moratorium) का अर्थ होता है गतिविधियों पर अस्थायी रोक लगाना। जब भावी घटनाओं के आधार पर यह आवश्यक हो जाता है कि रोक को हटा लिया जाए या जब संबंधित मुद्दों को हल कर लिया जाता है तो स्थगन या मोरेटोरियम समाप्त हो जाता है।
- **प्रधानमंत्री आवास योजना-क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना शहरी {Pradhan Mantri Awas Yojana-Credit Linked Subsidy Scheme Urban) (PMAY-CLSS (U)}:** इसके तहत पात्र लाभार्थियों को होम लोन पर ब्याज सब्सिडी प्रदान की जाती है।
- **किफायती आवास निधि (Affordable Housing Fund: AHF): इसने** व्यवहार्य विकास के लिए इस क्षेत्र में पर्याप्त तरलता का सृजन किया है।
- **सह-ऋण मॉडल (Co-lending Model):** इसका उद्देश्य बैंकों के तरलता आधार का लाभ उठाना और ज़रूरतमंद लोगों तक औपचारिक आवास ऋण उपलब्ध कराने के लिए HFCs की पहुंच को बढ़ाना है।
- **कोविड प्रभावित पर्यटन सेवा क्षेत्रक के लिए ऋण गारंटी योजना (Loan Guarantee Scheme for Covid Affected Tourism Service Sector : LGSCATSS):** इसे **नेशनल क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी (NCGTC)** के माध्यम से प्रशासित किया गया है। कोविड प्रभावित पर्यटन सेवा क्षेत्रक के लिए ऋण गारंटी योजना (LGSCATSS) के तहत, **उन परिवारों को कार्यशील पूंजी/ व्यक्तिगत ऋण प्रदान किया जाता है** जो कोविड-19 महामारी के कारण प्रभावित हुए थे। यह ऋण उन्हें इसलिए दिया जाता है ताकि वे अपनी देनदारियों को पूरा कर सकें और अपने व्यवसायों को पुनः आरंभ कर सकें।

टैलेंट पूल और भविष्य उन्मुख समाधान विकसित करने पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित किया गया।

- उपर्युक्त कारकों ने महामारी के दौरान उभरती ग्राहक मांग के प्रति सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया देने में प्रौद्योगिकी फर्म्स को सक्षम बनाया है।

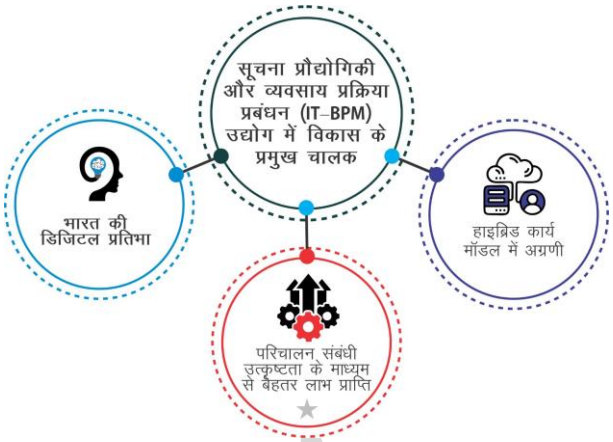

- **संवृद्धि के चालक:** भारत की विशाल **डिजिटल अवसंरचना ने प्रौद्योगिकी को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी**। इसमें **सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म भारत के डिजिटल लाभ** के आधार बन गए थे।

ई-कॉमर्स

महामारी के बाद ई-कॉमर्स क्षेत्र पर नए सिरे से बल दिया गया है। हालांकि इसके बाद निवेश में तीव्र वृद्धि आई है।

- **संवृद्धि: वर्ल्ड-पे एफ.आई.एस. (Worldpay FIS) द्वारा जारी वैश्विक भुगतान रिपोर्ट** के अनुसार, ऐसा अनुमान है कि भारत का ई-कॉमर्स बाजार प्रभावशाली लाभ दर्ज करेगा और **2025 तक सालाना 18 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा।**

- **उभरते क्षेत्रक: फैशन, किराना, सामान्य व्यापारिक क्षेत्रक** 2027 तक भारतीय ई-कॉमर्स बाजार के लगभग दो-तिहाई हिस्से पर अपना अधिकार कर लेंगे।
- **ई-कॉमर्स के क्षेत्रक में MSMEs द्वारा विभिन्न समाधानों को अपनाना:** MSMEs ने **राजस्व और मार्जिन में वृद्धि, बेहतर बाजार पहुंच, नए बाजारों तक पहुंच व ग्राहक अधिग्रहण की संभावनाओं को** महसूस करते हुए **ई-कॉमर्स तथा ई-प्रोक्योरमेंट** जैसी डिजिटल सेवाओं का उपयोग किया है।
- **सरकारी सहयोग: गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM)** की शुरुआत के बाद से **इसके संचयी सकल व्यापारिक मूल्य (Gross Merchandise Value:GMV)** में भी जबरदस्त वृद्धि आई है। यह अमेज़न जैसे ई-कॉमर्स दिग्गजों के साथ बराबरी कर रहा है।
  - GeM ने स्वयं सहायता समूहों (SHGs), जनजातीय समुदायों, कारीगरों, बुनकरों और MSMEs के उत्पादों को शामिल करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

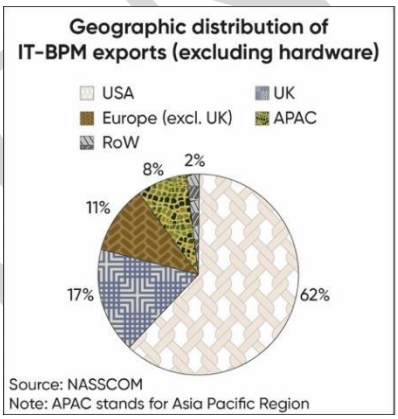

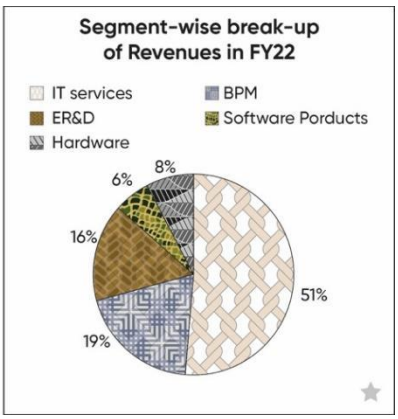

डिजिटल वित्तीय सेवाएं

- **समग्र प्रभाव: उभरती प्रौद्योगिकियों और नवीन समाधानों** द्वारा समर्थित **डिजिटल वित्तीय सेवाएं, वित्तीय समावेशन में तेजी ला रही हैं। साथ ही ये डिजिटल सेवाओं तक लोगों की पहुंच को बढ़ाने के साथ ही उत्पादों के निजीकरण को भी प्रेरित कर रही हैं।**
- **संवृद्धि के चालक: जन धन-आधार-मोबाइल (JAM) ट्रिनिटी, UPI,** अन्य विनियामक फ्रेमवर्क और महामारी ने डिजिटलीकरण की गति को तेज करने में मदद की है। **इसने बैंकों, NBFCs, बीमाकर्ताओं के साथ-साथ फिनटेक समर्थित डिजिटल वित्तीय सेवा समाधानों को बढ़ावा दिया है।**

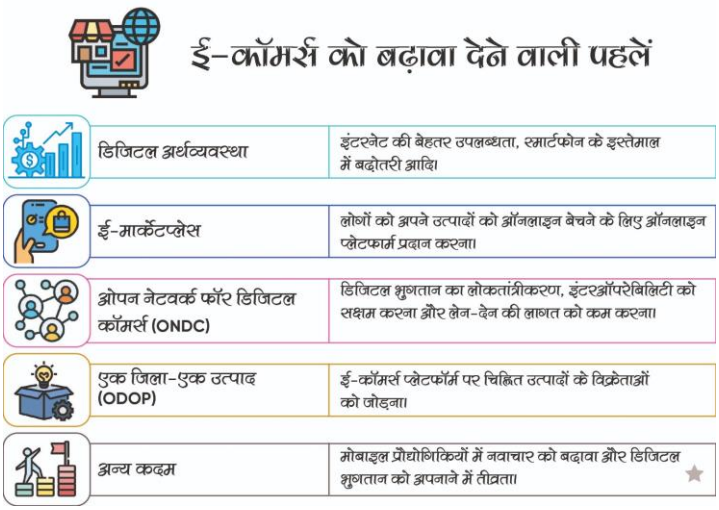

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- **फिनटेक: भारत में फिनटेक को अपनाने की दर 87 प्रतिशत रही है।** इस दर के साथ भारत ने शीर्ष स्थान हासिल किया है। नवीनतम **ग्लोबल फिनटेक एडॉप्शन इंडेक्स** के अनुसार भारत का प्रदर्शन **64 प्रतिशत के वैश्विक औसत से काफी अधिक है।**
- **नियो बैंक: नियो-बैंकिंग सेगमेंट** में भी लगातार वृद्धि हो रही है।
  - केंद्रीय बजट 2022-23 में 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयों (Digital Banking Units:DBUs) की घोषणा की गई है।

- **केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (Central Bank Digital Currency: CBDC):** CBDC के लागू किए जाने से डिजिटल वित्तीय सेवाओं को भी काफी बढ़ावा मिलेगा।
  - CBDC मुद्रा नोटों का एक डिजिटल रूप है। इसे केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किया जाता है।
  - डिजिटल रुपया 1 नवंबर, 2022 को शुरू किया गया था। इसे पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू किया गया है।
- **दस्तावेजों का डिजिटलीकरण:** इसने डिजिटल वित्तीय सेवाओं को और गति देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
  - दस्तावेजों का डिजिटलीकरण **सुरक्षा, ऑनलाइन सत्यापन, बेहतर पहुंच** और **धोखाधड़ी को कम करने में मदद करता है। साथ ही, यह एंड यूज़र्स** और **सेवा प्रदाता के लिए दस्तावेज़ के उपयोग को बेहतर बनाता है।**

अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क

- **अकाउंट एग्रीगेटर (AA) एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) है। इसका व्यवसाय** ग्राहक से संबंधित वित्तीय जानकारी प्राप्त करना या एकत्र करना होता है।
- इसने वित्तीय सेवाओं को प्रतिस्थापित कर दिया है।
- ग्राहक की स्पष्ट सहमति के बिना अकाउंट एग्रीगेटर द्वारा ग्राहक की कोई वित्तीय जानकारी पुनर्प्राप्त, साझा या स्थानांतरित नहीं की जा सकती है।
- संस्थाएं अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क पर स्वयं को नामांकित कर सकती हैं:
  - **वित्तीय सूचना प्रदाता (Financial Information Provider: FIP):** अर्थात् बैंकिंग कंपनी, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी आदि।
  - **वित्तीय सूचना उपयोगकर्ता (Financial Information User: FIU):** यह किसी भी वित्तीय क्षेत्रक के विनियामक के साथ पंजीकृत और विनियमित एक इकाई है।
- RBI द्वारा **अकाउंट एग्रीगेटर** को विनियमित करने के लिए **मास्टर निदेश- गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी- अकाउंट एग्रीगेटर (रिज़र्व बैंक) निदेश, 2016** जारी किए गए थे।

दस्तावेजों को कागज रहित बनाना: डिजिटलीकरण की अगली लहर

- **नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (NeSL):** इसकी मदद से 2020 में **डिजिटल दस्तावेज़ निष्पादन (Digital Document Execution: DDE) प्लेटफ़ॉर्म** को शुरू किया गया था।
  - **NeSL** एक सूचना संबंधी सेवा है जो IBC 2016 के तत्वावधान में भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड के साथ पंजीकृत तथा विनियमित है।
- **NeSL-DDE प्लेटफॉर्म का मुख्य सिद्धांत:** दस्तावेज़/ अनुबंध के निष्पादन के सभी चरणों को डिजिटाइज़ करना।

अध्याय - एक नजर में

- सेवा क्षेत्रक महामारी और वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी के दौर से उबर चुका है।

- सेवाओं के उप-क्षेत्रकों, जैसे- पर्यटन आदि में सुधार देखा गया है।
- भारत दुनिया में FDI का 7 वां सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता देश है।
- ई-कॉमर्स क्षेत्र में 2025 तक सालाना 18 प्रतिशत की दर से वृद्धि होने की संभावना है।
- देश में नियो-बैंकिंग, डिजिटल मुद्राओं जैसी डिजिटल वित्तीय सेवाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है।

बजट में क्या कहा गया है?

- वित्तीय सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए **GIFT-IFSC** से संबंधित सुधारों की घोषणा की गई है।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस** के लिए **सेंटर ऑफ एक्सीलेंस या उत्कृष्टता केंद्र** की स्थापना की जाएगी।
- इसने वर्तमान में चल रहे **'वन साइज फिट्स ऑल' के दृष्टिकोण के बजाय 'जोखिम–आधारित (Risk Based)'** दृष्टिकोण को अपनाकर KYC प्रक्रिया को सरल बनाने का प्रस्ताव किया है।

Emphasis on conceptual clarity to train the aspirants for developing an understanding to solve ethics case study from basic to advance level

Case studies covers all the exclusive topics from contemporary and current issues as well as previous Year UPSC Paper Case studies

To discuss on Various techniques on writing scoring answers.

One to one mentoring session

ETHICS

Case Studies Classes

ADMISSION OPEN

Focus on contemporary issues and interlinking case studies with topics of current interest.

Regular Doubts clearing session and personal guidance for the ethics paper throughout your preparation

Daily Class assignment and discussion

Comprehensive & updated ethics material

अध्याय 10

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. भारत में सेवा क्षेत्रक के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2021 में भारत शीर्ष दस सेवा निर्यातक देशों में से एक रहा था।
2. 2021 में वैश्विक वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी लगभग 10 प्रतिशत थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

2. भारत के वित्तीय क्षेत्रक के संदर्भ में, नियो-बैंक हैं:

(a) ऐसे बैंक जो पूरी तरह से ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म पर संचालन करते हैं।
(b) इनका संचालन पूरी तरह से ऑनलाइन होता है, जिसमें ऑफ़लाइन परिवेश में कार्यालय स्थल के अलावा इनकी कोई भौतिक उपस्थिति नहीं होती है।
(c) ऐसे बैंक जो केवल निर्यातकों और आयातकों की जरूरतों को पूरा करते हैं।
(d) ऐसे बैंक जो केवल शहरी क्षेत्रों में संचालन करते हैं।

3. भुगतान संग्राहक फ्रेमवर्क के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भुगतान संग्राहक (AA) गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (NBFC) हैं।
2. इन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

4. भारत में ई-गवर्नेंस के संदर्भ में, हाल ही में डिजिटल डॉक्यूमेंट एक्सेक्यूशन (DDE) को किसके द्वारा शुरू किया गया है?

(a) नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (NESL)
(b) नीति आयोग
(c) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
(d) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

5. 'वर्ल्ड टूरिज्म बैरोमीटर' निम्नलिखित में से किसकी पहल है?

(a) पर्यटन मंत्रालय
(b) संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन
(c) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(d) विश्व बैंक समूह

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. उन कारकों पर चर्चा कीजिए जिनके कारण भारत में डिजिटल वित्तीय सेवाओं के अंगीकरण में वृद्धि हुई है। साथ ही, इस संदर्भ में सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी की भूमिका का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Q2. भारत में रियल एस्टेट क्षेत्रक का अवलोकन कीजिए और चर्चा कीजिए कि हाल के दिनों में इस क्षेत्रक में आपूर्ति श्रृंखला संबंधी व्यवधान क्यों देखा गया है?

अध्याय 11: वैदेशिक क्षेत्र: सतर्क और आशावान (External Sector: Watchful and Hopeful)

परिचय

नई सहस्राब्दी में वैश्विक अर्थव्यवस्था को दो वैश्विक आघातों- **आर्थिक** और **स्वास्थ्य** आघात का सामना करना पड़ा है। हालांकि, भारत मजबूत मैक्रोइकॉनॉमिक फंडामेंटल और बफ़र्स के कारण विपरीत परिस्थितियों (चुनौतियों) का सामना करने में सक्षम रहा है।

इस अध्याय में भारतीय अर्थव्यवस्था के **वैदेशिक क्षेत्र** या **बाह्य क्षेत्रक** के विकास पर चर्चा की गई है। बाह्य क्षेत्रक के अंतर्गत भारत के **निर्यात, आयात, अंतर्राष्ट्रीय निवेश, विदेशी मुद्रा भंडार, अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा की स्थिति, बाह्य ऋण** और **भुगतान संतुलन स्थिति** आदि को शामिल किया जाता है।

वैश्वीकृत विश्व के लाभ उठाने में भारत की मदद करने वाला व्यापार

- **खुलापन:** दुनिया भर के देशों के **व्यापार में खुलापन** बढ़ रहा है।
  - यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के अनुपात में व्यापार कितना है, इसके मापन द्वारा जाना जाता है।
- **भारत का हिस्सा:** वैश्विक स्तर पर, विश्व GDP के प्रतिशत के रूप में व्यापार का हिस्सा 2003 से 50-60 प्रतिशत के बीच रहा है। भारत की GDP में व्यापार का हिस्सा वर्ष 2005 के बाद से 40 प्रतिशत से ऊपर रहा है (2020 महामारी वर्ष को छोड़कर)।
  - यह अनुपात 2021 में 46 प्रतिशत और 2022 की प्रथम छमाही के दौरान 50 प्रतिशत रहा है।

वैश्विक परिदृश्य

- **व्यापार की संभावनाएं:** कोविड-19-जनित व्यवधान के बाद वित्त वर्ष 2022 में वैश्विक व्यापार संभावनाओं में सुधार हुआ है।
- **ग्लोबल आउटलुक:** संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD/ अंकटाड) ने दिसंबर 2022 की अपनी विश्व व्यापार रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया है कि वर्तमान व्यापार मंदी 2023 तक और बदतर हो सकती है।

भारत के व्यापार में महत्वपूर्ण आयाम

	2019	2020	2021
निर्यात प्रदर्शन (प्रतिशत में)			
वैश्विक वस्तु/पण्य निर्यात में हिस्सेदारी	1.7	1.6	1.8
वैश्विक वाणिज्यिक सेवा निर्यात में हिस्सेदारी	3.5	4.0	4.0
वैश्विक वस्तु एवं सेवा निर्यात में हिस्सेदारी	2.1	2.1	2.2
आयात प्रदर्शन (प्रतिशत में)			
वैश्विक वस्तु आयात में हिस्सेदारी	2.5	2.1	2.5
वैश्विक वाणिज्यिक सेवा आयात में हिस्सेदारी	3.0	3.2	3.5
वैश्विक वस्तु एवं सेवा आयात में हिस्सेदारी	2.6	2.3	2.7

भारत के व्यापार परिदृश्य में बेहतर प्रदर्शन वाले क्षेत्र

- **प्रमुख क्षेत्रक:** वित्त वर्ष 2022 में ड्रग्स और फार्मास्युटिकल, इलेक्ट्रॉनिक सामान, इंजीनियरिंग सामान और जैविक एवं अकार्बनिक रसायन क्षेत्रकों के निर्यात में महत्वपूर्ण प्रगति दर्ज की गई है।
  - भारत से **इलेक्ट्रॉनिक सामानों के निर्यात में भी लगातार वृद्धि** देखी जा रही है।

पण्य व्यापार में रुझान

- **संवृद्धि:** भारत ने **वित्त वर्ष 2022 में 422.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का सर्वकालिक उच्च वार्षिक पण्य निर्यात हासिल किया है।

सेवाओं में व्यापार

- **सेवा क्षेत्रक की संवृद्धि:** वित्त **वर्ष 2022 में भारत का सेवा निर्यात 254.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर** रहा है, जो **वित्त वर्ष 2021 की तुलना में 23.5 प्रतिशत की वृद्धि** को दर्शाता है।
  - भारत **दुनिया का 7वां सबसे बड़ा सेवा निर्यातक** है।

VISION

- **प्रमुख सेवाएं:** भारत के कुल सेवा निर्यात में सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक सेवाओं की संयुक्त रूप से 60 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी है।

विदेश व्यापार नीति (FTP)

- **फोकस क्षेत्र:** FTP का उद्देश्य **निर्यात और आयात के लिए नियमों और प्रक्रियाओं का ढांचा प्रदान करना** है। साथ ही, निर्यात को बढ़ावा देने के लिए **प्रोत्साहन योजनाओं का एक समुच्चय प्रदान करना** भी इसका उद्देश्य रहा है।
- **FTP की समय सीमा:** महामारी की अवधि के दौरान, पांच वर्षीय FTP 2015-20 को 2020 से 2022 तक बढ़ा दिया गया था। हाल ही में, FTP की अवधि को मार्च 2023 तक और बढ़ा दिया गया है।
- **क्षमता निर्माण:** राज्यों की निर्यात संभावनाओं और क्षमताओं का मूल्यांकन करने के लिए नीति आयोग ने **'निर्यात तत्परता सूचकांक'** भी प्रस्तुत किया है।

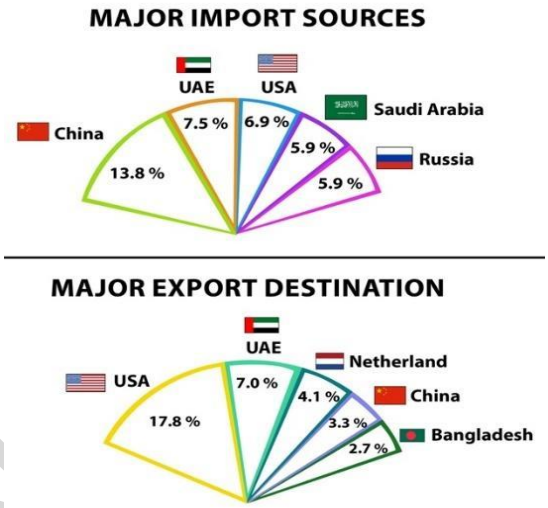

भारतीय रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता

- **रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण:** 2022 में, **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने** भारतीय रुपये (INR) में इनवॉइस, भुगतान और **निर्यात/ आयात** के निपटान के लिए एक अतिरिक्त व्यवस्था की अनुमति देते हुए एक सर्कुलर जारी किया है।
  - INR को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में बढ़ावा देने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है।
  - यह चालू खाते से संबंधित व्यापार प्रवाह के निपटान के लिए विदेशी मुद्रा, **विशेष रूप से अमेरिकी डॉलर की निवल मांग को काफी हद तक कम सकता है।**
- **प्रमुख मुद्रा: बी.आई.एस. त्रैवार्षिक सेंट्रल बैंक सर्वेक्षण 2022** के अनुसार, **अमेरिकी डॉलर** डॉमिनेंट व्हीकल करेंसी है, जिसमें **88 प्रतिशत वैश्विक विदेशी मुद्रा व्यापार** होता है। वैश्विक विदेशी मुद्रा व्यापार में **INR की हिस्सेदारी केवल 1.6 प्रतिशत है।**

व्यापार को बढ़ाने के लिए की गई पहलें

पहल	विवरण
कृषि उत्पादों पर फोकस	• निर्यात निरीक्षण परिषद (EIC), बागवानी बोर्ड एवं कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) सहित निर्यात संवर्धन एजेंसियों के सक्रिय समर्थन ने कृषि निर्यात के विकास में सहायता प्रदान की है। • निर्यात के लिए आवश्यक प्रमाण पत्रों को ऑनलाइन जारी करने जैसे निर्यात सुविधा उपायों ने कृषि निर्यात के विकास में सहायता की है।
ब्याज समानीकरण योजना	• यह योजना बैंकों द्वारा निर्यातकों को उनके प्री और पोस्ट-शिपमेंट निर्यात ऋण पर ब्याज दरों में लाभ प्रदान करने के लिए बनाई गई थी।
निर्यातित उत्पादों पर शुल्कों और करों की छूट (RoDTEP) योजना	• यह योजना केंद्र, राज्य और स्थानीय स्तर पर विभिन्न चरणों में केंद्रीय, राज्य और स्थानीय शुल्कों/ करों /लेवी पर छूट देती है।

निर्यात ऋण गारंटी	• निर्यात ऋण गारंटी निगम (ECGC) निर्यात ऋण बीमा सेवाएं प्रदान करके भारतीय निर्यातकों और बैंकों को सहायता प्रदान करता है।
कृषि उड़ान योजना	• इसे कृषि उत्पादों के परिवहन में किसानों की सहायता के लिए अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय वायुमार्गों पर अगस्त 2020 में शुरू किया गया था ताकि उनके मूल्य की प्राप्ति में सुधार हो सके।
निर्यात हेतु व्यापार अवसंरचना योजना	• योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार निर्यात अवसंरचना की स्थापना या उन्नयन के लिए केंद्र/ राज्य सरकार की स्वामित्व वाली एजेंसियों को सहायता अनुदान के रूप में यह योजना वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
निर्यात हब के रूप में जिले	• 'निर्यात हब ODOP के रूप में जिला' पहल का उद्देश्य जमीनी स्तर पर निर्यात प्रोत्साहन, विनिर्माण और रोजगार सृजन को लक्षित करना है।

भारत के वैश्विक व्यापार संबंध

- **वर्तमान स्थिति:** भारत ने अब तक 13 मुक्त व्यापार समझौते (FTA) और 6 अधिमान्य व्यापार समझौते (Preferential Trade Agreements: PTAs) किए हैं।
  - वर्ष 2022 में, भारत ने ऑस्ट्रेलिया के साथ **'आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (Economic Cooperation and Trade Agreement: ECTA)' तथा संयुक्त अरब अमीरात के साथ 'व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (Comprehensive Economic Cooperation Agreement: CECA)' पर हस्ताक्षर किए।**
  - भारत अपने निर्यात बाजारों में विविधता ला रहा है। भारत अब **ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और सऊदी अरब** के साथ अपना निर्यात बढ़ा रहा है।

मुक्त व्यापार समझौते

- विश्व व्यापार संगठन के नियमों के अनुसार **मुक्त व्यापार समझौते (FTA) या क्षेत्रीय व्यापार समझौते (Regional Trade Agreements: RTAs),** व्यापार और निवेश में **किसी देश के लिए उसकी दक्षताओं का लाभ उठाने हेतु उपलब्ध आर्थिक साधन होते हैं।**

मुक्त व्यापार समझौते या क्षेत्रीय व्यापार समझौते अनुकूल क्यों हैं?

- **विश्व व्यापार संगठन में बहुपक्षीय व्यापार वार्ताओं में सीमित प्रगति** FTA में वृद्धि के लिए जिम्मेदार कारणों में से एक है।
- FTA को व्यापारिक देश स्वयं के लिए अनुकूल मानते हैं क्योंकि इन पर **बातचीत करने में सरलता होती है।** साथ ही, ये भू-राजनीतिक विचारों को अन्तर्निहित कर एक प्रकार का **लचीलापन प्रदान** करते हैं।
- RTAs के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:
  - **वस्तुओं और सेवाओं पर शुल्क कम करना और**
  - **व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से व्यापार भागीदारों के बीच सहयोग बढ़ाना तथा**
  - उपभोक्ताओं के लिए कम कीमत और उत्पादकों के लिए निर्यात के बेहतर अवसर प्रदान करना है।

चुनौतीपूर्ण समय में भुगतान संतुलन

- **चालू खाता शेष:** अप्रैल-सितंबर 2022 (वित्त वर्ष 2023 की पहली छमाही) की अवधि के दौरान, भारत ने सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के **3.3 प्रतिशत का चालू खाता घाटा (Current Account Deficit: CAD)** दर्ज किया है।
  - यह वित्त वर्ष 2022 की पहली छमाही में 0.2 प्रतिशत की तुलना में अधिक है और इसकी वजह है- वस्तु व्यापार घाटे में वृद्धि।
  - भारत का चालू खाता घाटा कम और **प्रबंधकीय सीमा** के भीतर है।

Current account balance as percentage of GDP: India vs Select Countries

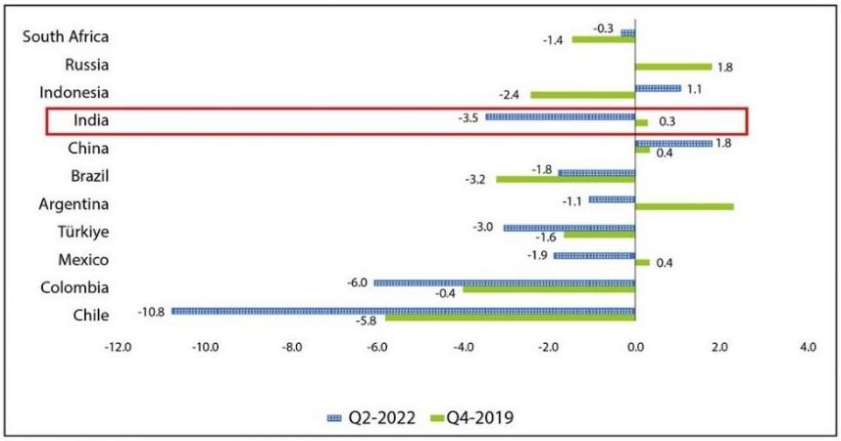

Source: OECD Economic Outlook 112 Database

- **अदृश्य मदें: शुद्ध सेवा प्राप्तियों** में मुख्य रूप से कंप्यूटर और व्यावसायिक सेवाओं में अत्यधिक प्राप्तियों के कारण वृद्धि हुई है।
  - **निवल सेवा निर्यात** और **धन-प्रेषण ने** अदृश्य मद व्यापार खाते के अधिशेष में योगदान दिया है, जिसके फलस्वरूप वस्तु व्यापार घाटा कम हुआ है।
- **पूंजी खाता शेष:** FDI और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (Foreign Portfolio Investment: FPI) पूंजी खाते के सबसे बड़े घटक हैं।
  - वित्त वर्ष 2023 की पहली छमाही में भारत ने **बाह्य वाणिज्यिक उधारी (External commercial borrowings: ECBs)** में निवल निकासी दर्ज की, जबकि एक वर्ष पहले समान अवधि में निवल अन्तर्वाह (इनफ्लो) हुआ था।
- **भुगतान संतुलन और विदेशी मुद्रा भंडार:** दिसंबर 2022 तक विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर **562.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया है, जिसमें **9.3 महीने का आयात** भी शामिल था।
- IMF के अनुसार, नवंबर 2022 तक भारत दुनिया में **छठा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार** धारक देश था।

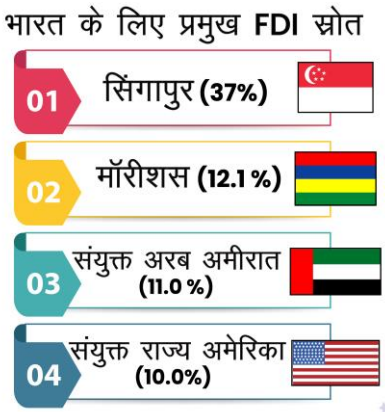

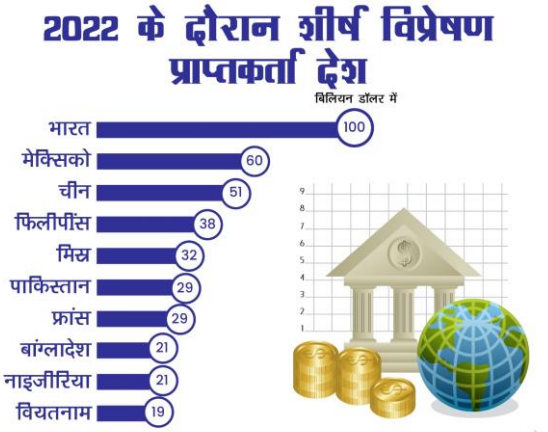

विदेशी मुद्रा भंडार की पर्याप्तता

- **पारंपरिक दृष्टिकोण:** यह निम्नलिखित तीन मापों का उपयोग करता है- **मुद्रा भंडार और आयात का अनुपात, मुद्रा भंडार और मौद्रिक समुच्चय (Monetary Aggregates) का अनुपात** और **मुद्रा भंडार तथा बाह्य ऋण का अनुपात।**
- **पारंपरिक दृष्टिकोण:** मूल नियम यह है कि मुद्रा भंडार **तीन महीने के आयात या अल्पकालिक ऋण को कवर करने के लिए पर्याप्त हो।**
- **गाइडोटी-ग्रीनस्पैन IMF का नियम:** इसके अनुसार किसी देश के भंडार को **अल्पकालिक बाह्य ऋण (एक वर्ष या उससे कम परिपक्वता) के बराबर होना चाहिए। इसके अनुसार** अल्पकालिक ऋण और मुद्रा भंडार के अनुपात का मान 1 होना चाहिए।

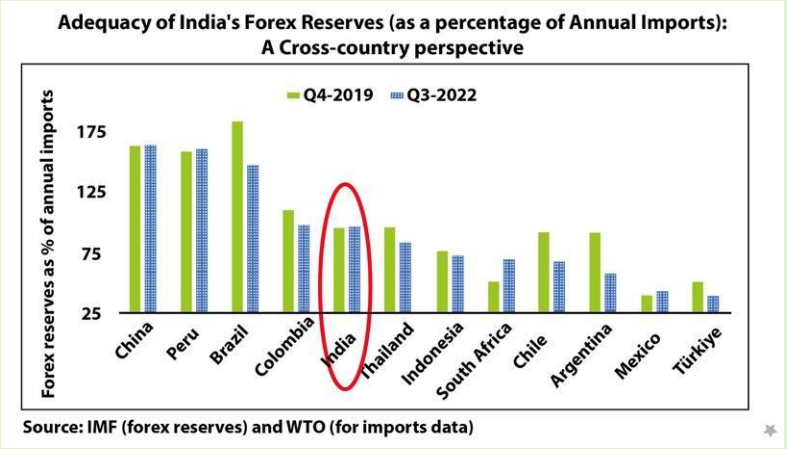

विनिमय दर

- **भारतीय रिजर्व बैंक की सक्रिय भूमिका:** भारतीय रुपये की विनिमय दर बाजार-निर्धारित है क्योंकि विदेशी विनिमय बाजार में **RBI का हस्तक्षेप** मुख्य रूप से **अत्यधिक अस्थिरता की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए होता है।**
- **मूल्यह्रास:** 2022 में, रुपये में 10.8 प्रतिशत की गिरावट आई है जबकि अमेरिकी डॉलर में 6.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
  - भारत की **नॉमिनल इफेक्टिव एक्सचेंज रेट (NEER)** में 2022 में 4.8 प्रतिशत की गिरावट आई है।

अंतर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति (International Investment Position: IIP)

- **उद्देश्य:** यह एक **सांख्यिकीय विवरण** है जो किसी समय पर निम्नलिखित की संरचना और मूल्य को दर्शाता है:

India's net International Investment Position in (September 2022)

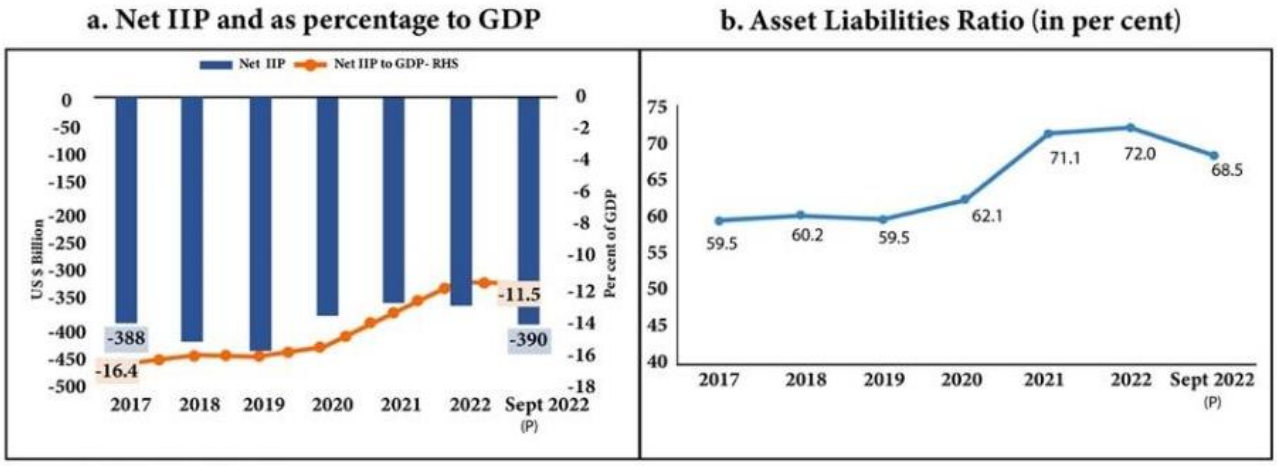

Source: RBI: P: Provisional

- किसी अर्थव्यवस्था के निवासियों की उन वित्तीय परिसंपत्तियों का मूल्य जो अनिवासियों पर दावे के रूप में होते हैं। अर्थात् यह उन परिसम्पत्तियों का मूल्य है जिन्हें अनिवासी वापस चुकाएंगे या चुकाना पड़ेगा। साथ ही, इस विवरण में आरक्षित परिसंपत्ति के रूप में रखे गोल्ड बुलियन को भी शामिल किया जाता है; और
- साथ ही, इस विवरण में उन देनदारियों को भी शामिल किया जाता है जो देश के निवासियों की अनिवासियों के प्रति हैं।

Debt ratios: Cross-country comparison 2021

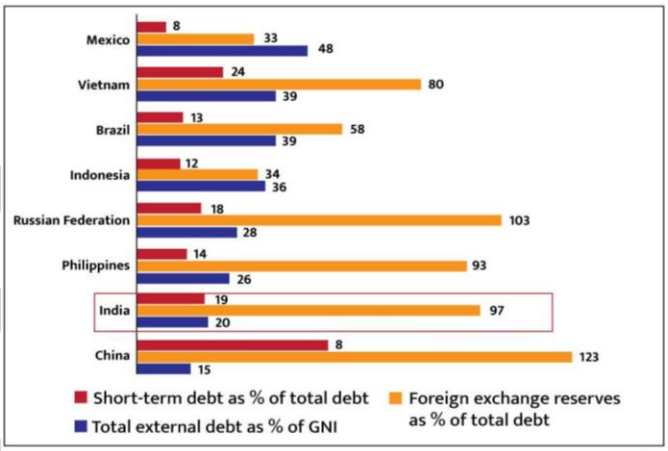

Source: International Debt Report, 2022, World Bank

बाह्य ऋण की स्थिति

- **GDP के अनुपात के लिए ऋण:** GDP के अनुपात के रूप में बाह्य ऋण **एक वर्ष पहले के 20.3 प्रतिशत** से गिरकर **सितंबर 2022 के अंत तक 19.2 प्रतिशत** हो गया है।
- **अल्पकालिक ऋण:** अल्पकालिक ऋण का लगभग **97 प्रतिशत आयात के वित्तपोषण के लिए व्यापार ऋण** के रूप में है। इसी कारण से **अल्पकालिक ऋण** में वृद्धि **स्थिरता के अनुकूल है।**
- **संरचना:** भारत के बाह्य ऋण की **प्रमुख हिस्सेदारी अमेरिकी डॉलर (55.5%) में है।** इसके बाद भारतीय रुपये (30.2%) का स्थान है।

शब्दावली को जानें

सॉवरेन ऋण (राष्ट्रीय ऋण): यह किसी देश पर विदेशी और घरेलू ऋणदाताओं को देय ऋण को संदर्भित करता है।

- **संप्रभु विदेशी ऋण (Sovereign External Debt: SED):** यह 124.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो एक वर्ष पहले के स्तर से 5.7 प्रतिशत कम है।

अध्याय - एक नजर में

- बाह्य क्षेत्रक प्रमुख चुनौतियों (चुनौतियों) का सामना कर रहा है; हालांकि, मजबूत मैक्रोइकॉनॉमिक्स फंडामेंटल्स इसे संभालने में सक्षम हैं।
- भारत का वस्तु निर्यात सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है।
- भारत विश्व का 7 वां सबसे बड़ा सेवा निर्यातक देश है।
- सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में विदेशी ऋण में गिरावट आई है।
- भारतीय रिजर्व बैंक भारतीय रुपये को एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में बढ़ावा दे रहा है।

बजट में क्या कहा गया है?

प्रमुख निर्यात–बढ़ाने वाली योजनाओं के लिए आवंटन बढ़ा दिया गया है जैसे कि **निर्यात उत्पादों पर शुल्क और करों की छूट (RoDTEP)**, राज्य एवं केंद्रीय करों और शुल्कों की छूट **(RoSCTL)**, ब्याज समानता योजना, बाजार पहुंच पहल **(MAI)** आदि।

न्यूज़ टुडे

- 4 पृष्ठों में कवर किया जाने वाला दैनिक समसामयिकी समाचार बुलेटिन।
- सुर्खियों के प्राथमिक स्रोत: द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस और पीआईबी (PIB)। अन्य स्रोतों में शामिल हैं. न्यूज ऑन एयर, द मिंट, इकोनॉमिक टाइम्स आदि।
- इसका उद्देश्य प्रचलित विभिन्न घटनाओं के बारे में जानने के लिए प्राथमिक स्तर की जानकारी प्रदान करना है।
- इसमें दो प्रकार के दृष्टिकोणों को शामिल किया गया है यथा:
  - दिवसीय प्राथमिक सुर्खियां – 180 से कम शब्दों में दिन की मुख्य सुर्खियों को शामिल किया गया है।
  - अन्य सुर्खियाँ– ये मूल रूप से समाचारों में आने वाली एक पंक्ति की जानकारियाँ हैं। यहां शब्द सीमा 80 शब्द है।
- यह अंग्रेजी और हिंदी दोनों माध्यमों में उपलब्ध है। हिंदी ऑडियो, विजन आईएएस हिंदी यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध है।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

अध्याय 11

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. निम्नलिखित देशों को भारत के लिए उच्चतम से निम्नतम FDI स्रोतों के क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
   1. मॉरीशस
   2. संयुक्त अरब अमीरात
   3. सिंगापुर
   4. संयुक्त राज्य अमेरिका

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 1-2-3-4
(b) 4-3-2-1
(c) 3-1-2-4
(d) 3-2-4-1

2. निम्नलिखित में से कौन-सा देश भारत का प्रमुख निर्यात गंतव्य है?

(a) चीन
(b) बांग्लादेश
(c) श्रीलंका
(d) संयुक्त राज्य अमेरिका

Q3. भारत के बाह्य ऋण के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. अमेरिकी डॉलर-मूल्यवर्गित ऋण 50 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़ा घटक है।
   2. पिछले एक वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में बाह्य ऋण 19.2 प्रतिशत से बढ़कर 20.3 प्रतिशत हो गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. संप्रभु ऋण वह ऋण है, जिसे किसी देश ने अपने विदेशी और घरेलू दोनों ऋणदाताओं से लिया होता है।
   2. पिछले एक वर्ष में भारत का संप्रभु बाह्य ऋण घटकर 10% के स्तर पर आ गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

5. मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. ये व्यापार और निवेश में अपनी क्षमताओं का लाभ उठाने हेतु किसी देश के लिए उपलब्ध आर्थिक साधन हैं।
   2. भारत ने अब तक 20 से अधिक देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

6. भारत के भुगतान संतुलन की स्थिति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. भारत ने अप्रैल-सितंबर 2022 की अवधि के लिए सकल घरेलू उत्पाद के 5% से अधिक का चालू खाता घाटा (CAD) दर्ज किया।
   2. मुख्य रूप से निम्न स्तरीय कंप्यूटर और व्यवसाय सेवाओं की प्राप्तियों के कारण निवल सेवा प्राप्तियों में कमी आई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. हालांकि, भारत सरकार द्वारा की गई पहलों के परिणामस्वरूप वित्तीय वर्ष 2022 में भारत का निर्यात सराहनीय रहा है, लेकिन कुछ ऐसे उभरते कारक भी मौजूद हैं, जिन्होंने भविष्य के आउटलुक को विकट बना दिया है। टिप्पणी कीजिए।

Q2. भारतीय रुपये में व्यापार के अंतर्राष्ट्रीय निपटान के तंत्र की व्याख्या करते हुए भारत के वैश्विक व्यापार के लिए इसके महत्त्व की विवेचना कीजिए।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

अध्याय 12: भौतिक और डिजिटल आधारभूत संरचना: संभावित विकास को प्रोत्साहन (Physical and Digital Infrastructure: Lifting Potential Growth)

परिचय

आजादी के बाद से पिछले 75 वर्षों में, भारत में अवसंरचना का विकास एक सतत विकास वक्र पर चल रहा है। इसके अंतर्गत परिवहन, आवास, वाणिज्यिक विकास, दूरसंचार और हाल के वर्षों में स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में राष्ट्र द्वारा आवश्यक संपत्ति का निर्माण किया जा रहा है। आर्थिक विकास में तेजी लाने और उसे लंबे समय तक बनाए रखने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली अवसंरचना में निवेश करना महत्वपूर्ण है।

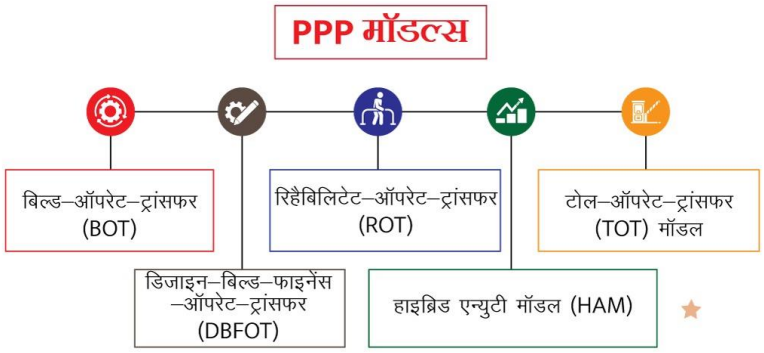

भारत में अवसंरचना के विकास के लिए सरकार का विज़न और दृष्टिकोण

सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP)

- **उद्देश्य:** अवसंरचना के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निजी क्षेत्रक की क्षमताओं का उपयोग करने के लिए PPP मॉडल सरकारों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी मूल्यांकन समिति (PPPAC):** यह केंद्रीय क्षेत्रक की PPP परियोजनाओं के मूल्यांकन के लिए शीर्ष निकाय है।
  - इसने परियोजनाओं का त्वरित और मानकीकृत मूल्यांकन करने के लिए मूल्यांकन तंत्र को सुव्यवस्थित किया है।
- **वायबिलिटी गैप फंडिंग (VGF):** इसे 2006 में आर्थिक मामलों के विभाग (DEA) द्वारा शुरू किया गया था।
  - इस योजना के तहत आर्थिक क्षेत्र की परियोजनाओं को VGF अनुदान के रूप में पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) का 40% तक प्रदान किया जा सकता है। इस योजना में सामाजिक क्षेत्रों की परियोजनाओं के लिए उच्च VGF अनुदान प्रदान करना भी शामिल हैं।
- **इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट डेवलपमेंट फंड स्कीम (IIPDF (2022):** इसका उद्देश्य परियोजना-प्रायोजक प्राधिकरणों को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करके गुणवत्तापूर्ण PPP परियोजनाओं को विकसित करना है। इसे वित्त वर्ष 2023 से 2025 तक लागू किया जाएगा।

राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP)

- **उद्देश्य:** NIP के तहत वित्त वर्ष 2020-2025 के दौरान इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में लगभग 111 लाख करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश का दूरदर्शी लक्ष्य रखा गया है। इसका उद्देश्य देश भर में उच्च गुणवत्ता वाली अवसंरचना का निर्माण करना है।
  - इसमें ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड अवसंरचना परियोजनाएं भी शामिल हैं।
- **इन्वेस्ट इंडिया ग्रिड (IIG):** NIP को इन्वेस्ट इंडिया ग्रिड (IIG) प्लेटफॉर्म के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। यह राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों और विभिन्न मंत्रालयों की इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं को एक साथ लाने का अवसर प्रदान करता है।
- **परियोजना निगरानी समूह:** यह 500 करोड़ रुपये और उससे अधिक के अनुमानित निवेश वाली परियोजनाओं के लिए अनुमोदन/ मंजूरी की फास्ट-ट्रैकिंग सुनिश्चित करता है।

राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन, 2021

- **उद्देश्य:** यह तुलन-पत्र (Balance sheet) को बनाए रखते हुए नई इंफ्रास्ट्रक्चर संपत्तियों में निवेश के लिए राजकोषीय सहायता सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करता है।
  - NMP के तहत, वित्त वर्ष 2020 से 2025 तक की चार वर्ष की अवधि में केंद्र सरकार की प्रमुख संपत्तियों के माध्यम से अनुमानित कुल मुद्रीकरण क्षमता 6.0 लाख करोड़ रुपये है।
- **प्रक्रिया:** मुद्रीकरण की प्रक्रिया में सरकार या सार्वजनिक प्राधिकरण के स्वामित्व वाली कोई संपत्ति सीमित अवधि के लिए लाइसेंस/ पट्टे पर किसी निजी क्षेत्र की इकाई को अग्रिम या निर्धारित अवधि के लिए दी जाती है।

- संपत्ति के ऐसे लाइसेंस/ पट्टे में अनुबंध अवधि के समाप्त होने पर संपत्ति को पुनः प्राधिकरण को हस्तांतरित किये जाने के प्रावधान शामिल होते हैं।

राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति, 2022

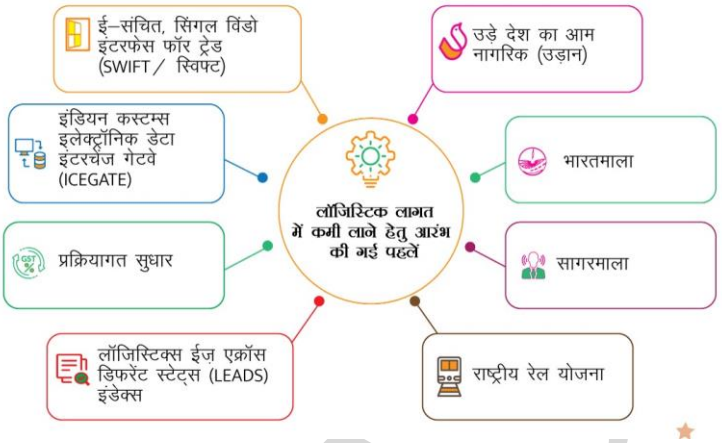

- **समग्र लागत:** भारत में लॉजिस्टिक्स लागत 8% के वैश्विक मानक की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद के 14-18 % के बीच रही है।
- **फोकस क्षेत्र:** NLP त्वरित और समावेशी विकास के लिए देश में **तकनीकी रूप से सक्षम, एकीकृत, लागत प्रभावी, लचीला, संधारणीय और विश्वसनीय लॉजिस्टिक्स परिवेश** विकसित करने पर केंद्रित है।
  - यह नीति **भारतीय वस्तुओं की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार, आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने** का एक प्रयास है।
  - इसका उद्देश्य भण्डारण क्षमता में सुधार करना, मल्टी मॉडल डिजिटल एकीकरण, लॉजिस्टिक्स सेवाओं में सरलता, मानव संसाधन और कौशल वृद्धि के लिए वैश्विक मानकों को लागू करना है।
- **कार्यान्वयन:** इस नीति को एक व्यापक लॉजिस्टिक कार्य योजना (CLAP) के माध्यम से लागू किया जाएगा।

विभिन्न राज्यों में लॉजिस्टिक्स सुगमता (Logistics Ease Across Different States: LEADS) इंडेक्स 2022

- यह विश्व बैंक के **लॉजिस्टिक प्रदर्शन सूचकांक (LPI)** पद्धति पर आधारित है। इसे **वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी** किया जाता है।
- इसमें वर्गीकरण-आधारित ग्रेडिंग प्रणाली को अपनाया गया है।
- **वर्गीकरण: तटीय** राज्य, **भीतरी/ स्थलरुद्ध** राज्य, **उत्तर-पूर्वी** राज्य और केंद्र शासित प्रदेश।

प्रदर्शन

श्रेणी	मानदंड	राज्य
अचीवर्स	90% या उससे अधिक प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राज्य/ केंद्रशासित प्रदेश	उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना, पंजाब और उत्तराखंड।
फास्ट मूवर्स	80 से 90% के बीच प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राज्य/ केंद्रशासित प्रदेश	केरल, सिक्किम, मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, पुडुचेरी और राजस्थान।
एस्पायर	80% से कम प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राज्य/ केंद्रशासित प्रदेश	नागालैंड, गोवा, बिहार, छत्तीसगढ़, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, मिजोरम, जम्मू और कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख और लक्षद्वीप।

PM गतिशक्ति

- **उद्देश्य: PM गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (2021)** के तहत एक साझा समावेशी मंच का निर्माण किया गया है। इसमें **विभिन्न मंत्रालयों/ विभागों से संबंधित सभी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के रियल टाईम आधारित कुशल नियोजन और कार्यान्वयन** के लिए एक व्यापक डेटाबेस तैयार किया गया है।
  - NIP में **सात इंजनों (सड़क, रेलवे, हवाईअड्डे, बंदरगाह, जन परिवहन, जलमार्ग और लॉजिस्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर)** से संबंधित परियोजनाओं को PM गतिशक्ति फ्रेमवर्क के साथ जोड़ा जाएगा।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

- इसमें प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग के साथ-साथ मंत्रालयों/ विभागों में **एकीकृत नियोजन और सतत कार्यान्वयन** पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

- **तकनीकी सहायता:** इसके लिए **PM गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान** नामक एक GIS आधारित और डेटा-संचालित निर्णय समर्थन मंच स्थापित किया गया है।

शब्दावली को जानें

हाइपरलूप: यह अत्यधिक उच्च गति वाली एक सार्वजनिक परिवहन प्रणाली है। इसमें यात्री ऑटोनॉमस इलेक्ट्रिक पॉड्स में 600 मील प्रति घंटा से अधिक की गति से यात्रा कर सकते हैं।

भौतिक अवसंरचना क्षेत्रक का विकास

- **सड़क परिवहन:** यह देश में उपभोक्ताओं और व्यवसायों की विविध आबादी के लिए परिवहन तथा कनेक्टिविटी का एक प्रमुख साधन है।
  - **वित्त वर्ष 2022 में 10,457 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग (NH)/ सड़कों का निर्माण किया गया है। वित्त वर्ष 2016 में 6,061 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया था।**
- **रेलवे:** इसे भारत की जीवन रेखा कहा जाता है। राष्ट्रीय एकीकरण और क्षेत्रीय विकास में इसकी बहुत बड़ी भूमिका है।
  - यह एकल प्रबंधन के तहत दुनिया में चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क (68,031 कि.मी. से अधिक रेल लाइन की लंबाई) है।

नागर विमानन क्षेत्रक में व्यापक संभावनाओं के लिए उत्तरदायी कारक

- मध्यम वर्ग की ओर से मांग में निरंतर वृद्धि
- जनसंख्या और पर्यटन में वृद्धि
- लोगों के पास व्यय करने योग्य आय (Disposable Income) में वृद्धि
- अनुकूल जनसांख्यिकी/जनांकिकीय लाभांश की स्थिति
- विमानन क्षेत्रक से संबंधित अवसंरचना की बेहतर पैठ

- **नागरिक उड्डयन:** वित्त वर्ष 2022 में मुख्य रूप से घरेलू क्षेत्रक के नेतृत्व में विमानन क्षेत्रक में सुधार देखा गया है।
- **नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा की गई पहल:**
  - **UDAN (उड़े देश का आम नागरिक)** योजना को देश में टियर-2 और टियर-3 शहरों के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए लॉन्च किया गया था।
  - यह योजना उपयोग न किए जाने वाले या कम उपयोग किए जाने वाले हवाई अड्डों के लिए कनेक्टिविटी सुविधा को बढ़ावा देती है।
  - सरकार ने देश भर में 21 ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों की स्थापना के लिए 'सैद्धांतिक' अनुमोदन भी प्रदान किया है।

बंदरगाहों की क्षमता बढ़ाने हेतु आरंभ की गई पहलें

- पोर्ट कम्युनिटी सिस्टम (PCS 1x) द्वारा इलेक्ट्रॉनिक चालान (e-Invoice), इलेक्ट्रॉनिक भुगतान (e-Payment) और इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी ऑर्डर (e-DO) जैसी प्रक्रियाओं को डिजिटलीकृत किया गया है।
- पोर्ट गेट्स पर यातायात की निर्बाध आवाजाही को सुनिश्चित करने हेतु 'रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन डिवाइस (RFID) का सभी प्रमुख बंदरगाहों पर उपयोग किया गया है।
- राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स पोर्टल (समुद्री) (NLP-Marine) का अनावरण किया गया है।

- **बंदरगाह:** अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बंदरगाहों के माध्यम से संचालित किया जाता है। यह मात्रा के हिसाब से कुल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कार्गो का लगभग 90% और मूल्य के हिसाब से 79.9% है।
- **क्षमता:** प्रमुख बंदरगाहों की कुल क्षमता, मार्च 2014 के अंत तक 871.5 मिलियन टन प्रति वर्ष (MTPA) थी, जो मार्च 2022 में बढ़कर 1534.9 MTPA हो गई है।

अंतर्देशीय जल परिवहन:

- **नौवहन योग्य लंबाई:** भारत में जलमार्गों की कुल नौगम्य लंबाई **लगभग 14,850 किलोमीटर** है।

- **कार्गो आवाजाही:** वित्त वर्ष 2022 के दौरान कार्गो आवाजाही ने **108.8 मिलियन टन का सर्वकालिक उच्च स्तर** हासिल किया है। यह वित्त वर्ष 2021 की तुलना में **30.1% की वृद्धि** को दर्शाता है।
- **राष्ट्रीय जलमार्ग: राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम 2016** के तहत, **106** नए जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग (NW) घोषित किया गया है। इससे देश में NWs की कुल संख्या **111** हो गई है।
- **अंतर्देशीय पोत विधेयक, 2021:** इसने अंतर्देशीय पोत अधिनियम, 1917 का स्थान लिया है।
  - इसका उद्देश्य देश के भीतर अंतर्देशीय जलमार्गों और नौवहन से संबंधित कानूनों के अनुप्रयोग में एकरूपता लाना है।

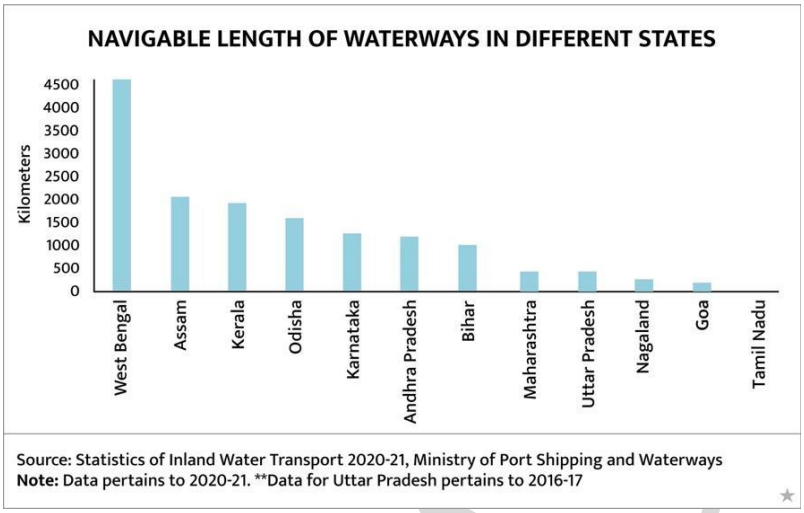

विद्युत:

- **कुल स्थापित क्षमता:** उपभोग के लिए और कैप्टिव विद्युत संयंत्रों (1 मेगावाट और उससे अधिक की मांग वाले उद्योग) की कुल स्थापित विद्युत क्षमता **मार्च 2022 में 482.2 GW** थी, जो **2021 की तुलना में 4.7% अधिक** है।
  - उपभोग के लिए कुल स्थापित विद्युत क्षमता 31 मार्च 2022 को 399.5 GW थी, जो 2021 की तुलना में 4.5 प्रतिशत अधिक है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन:**
  - वित्त वर्ष 2022 और वित्त वर्ष 2021 के बीच, उपभोग और कैप्टिव संयंत्रों के लिए **नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों** से **विद्युत उत्पादन में अधिकतम वृद्धि दर्ज की गई** थी।
  - **नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों को बढ़ावा देने के लिए की गई पहलें**
  - **प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (PM-कुसुम):**
    - इसका उद्देश्य ऊर्जा और जल सुरक्षा प्रदान करना, कृषि क्षेत्रक को डीजल मुक्त करना और सौर ऊर्जा का उत्पादन करके किसानों के लिए अतिरिक्त आय का सृजन करना है।

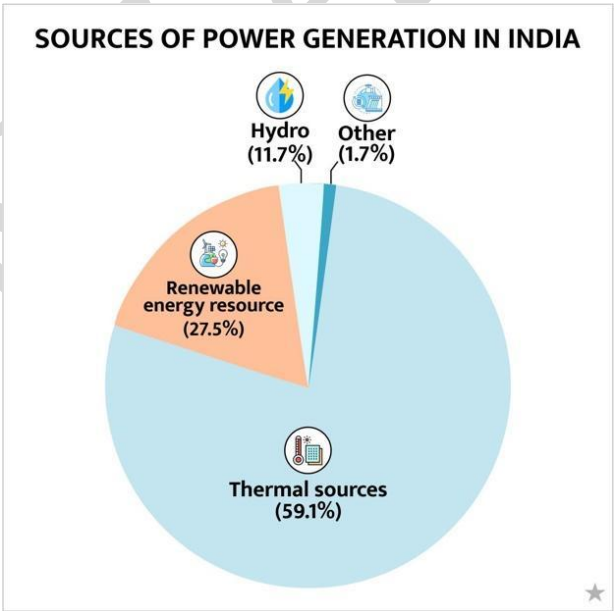

- **सोलर पार्क योजना:** यह योजना सभी वैधानिक मंजूरियों के साथ-साथ भूमि, विद्युत निष्कर्षण सुविधा, सड़क संपर्क, पानी की सुविधा आदि आवश्यक बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने के लिए शुरू की गई है।
- गैर-सौर नवीकरणीय खरीद दायित्व (RPO) के भीतर **जलविद्युत खरीद दायित्व (HPO)** की शुरुआत की गई है।

डिजिटल अवसंरचना में विकास:

दूरसंचार

- **टेलीफोन उपभोक्ता:** नवंबर 2022 तक, भारत में टेलीफोन उपभोक्ताओं की संख्या 117 करोड़ थी।
- **इंटरनेट कनेक्शन:** जून 2022 तक कुल उपभोक्ताओं में से 97% से अधिक वायरलेस तरीके से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, देश में 83.7 करोड़ उपभोक्ताओं के पास इंटरनेट कनेक्शन है।
- **टेली-घनत्व:** भारत में कुल टेली-घनत्व 84.8% है।
  - यह बिहार में 55.4% से लेकर दिल्ली में 270.6% तक है।
- **5G रोल आउट: इंडियन टेलीग्राफ राइट ऑफ वे (संशोधन) नियम, 2022**, 5G रोलआउट को सक्षम करने के लिए टेलीग्राफ इंफ्रास्ट्रक्चर की तेज और आसान तैनाती की सुविधा प्रदान करेगा।

ग्रामीण-शहरी डिजिटल विभाजन को कम करना

- डिजिटल भुगतान, ई-गवर्नेंस, ई-कॉमर्स, ई-स्वास्थ्य और ई-शिक्षा जैसी विभिन्न नई सेवाओं तथा अनुप्रयोगों के साथ डिजिटल इंडिया पहल (2015) ने ग्रामीण-शहरी डिजिटल विभाजन को पाटने में मदद की है।
- शहरी क्षेत्रों की तुलना में पिछले 3 वर्षों (2019-21) में ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक इंटरनेट उपभोक्ता जुड़े हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 95.76 मिलियन जबकि शहरी क्षेत्रों में 92.81 मिलियन उपभोक्ता जुड़े हैं।
- 2015 और 2021 के बीच शहरी क्षेत्र के 158% की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या में 200% की वृद्धि हुई है।

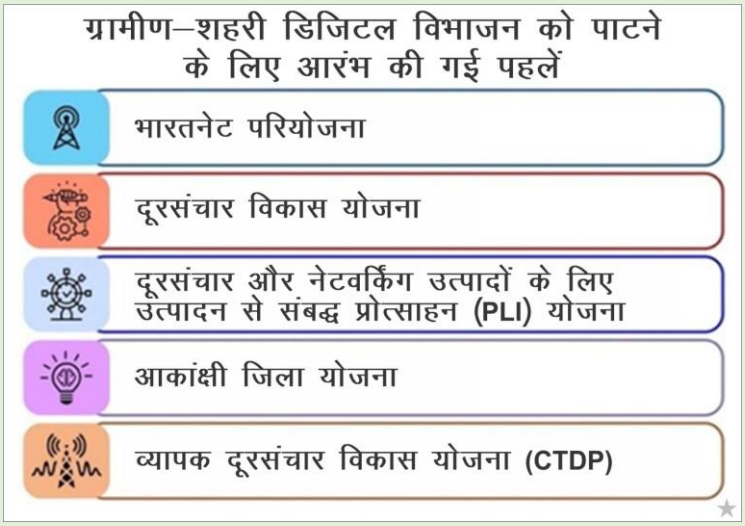

रेडियो

- यह भारत में जनसंचार का सबसे सस्ता और लोकप्रिय माध्यम है। यह एक ऐसा साधन रहा है जिसने हमारे देश के लोगों के सशक्तिकरण और सामाजिक विकास में निरंतर सहायता की है।
- प्रसार भारती देश भर के 479 स्टेशनों से 23 भाषाओं, 179 बोलियों में प्रसारण करता है, जो देश के लगभग 92% क्षेत्र और कुल आबादी के लगभग 99.2% तक पहुंचता है।

डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की कहानी

- **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI):** इसका उद्देश्य वित्तीय साक्षरता, नवाचार, उद्यमशीलता, रोजगार सृजन और लाभार्थियों को सशक्त बनाना है, जिसने अर्थव्यवस्था के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
  - DPI की यात्रा **2009 में आधार के शुभारम्भ के साथ** शुरू हुई है।
- **विकास के चालक:** अनुकूल जनसांख्यिकी, मध्यम वर्ग का व्यापक विस्तार और डिजिटल व्यवहार पैटर्न।

पहल	विवरण
माई स्कीम	• यह विभिन्न योजनाओं के लिए एक ई-मार्केटप्लेस है जहाँ उपयोगकर्ता अपनी पात्रता के अनुसार उपयुक्त योजनाओं की तलाश कर सकते हैं।
यूनिफाड मोबाइल एप्लिकेशन फॉर न्यू एज़ गवर्नेंस (UMANG)	• इसने नागरिकों को विभिन्न क्षेत्रों में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली ई-गवर्नेंस सेवाओं का उपयोग करने में सक्षम बनाया है। उदाहरण के लिए- कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास तथा कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और छात्रों के कल्याण।

	• डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर जैसी योजनाओं को भी सितंबर 2022 तक UMANG पर लाइव कर दिया गया है।
ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC)	• यह एक नेटवर्क-आधारित ओपन प्रोटोकॉल है जो सभी खरीदारों और विक्रेताओं को एक नेटवर्क से जोड़ेगा। इस प्रकार यह बिजनेस-टू-कंज्यूमर (B2C) और बिजनेस-टू-बिजनेस (B2B) परिदृश्य में बेहतर तालमेल लाएगा।
ओपन फोर्ज	• यह ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग और ई-गवर्नेंस से संबंधित मूल कोड (Source Code) के साझाकरण तथा उसके पुन: उपयोग को बढ़ावा देता है।
राष्ट्रीय AI पोर्टल	• इसे केंद्र और राज्य सरकारों, उद्योग, शिक्षा, गैर-सरकारी संगठनों और नागरिक समाजों में हो रहे नवीनतम विकास को उजागर करने तथा देश में AI परिवेश को मजबूत करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है।
भाषिनी	• यह एक राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन है। इसका उद्देश्य भारतीय भाषा प्रौद्योगिकियों और समाधानों को सार्वजनिक हित में विकसित करना है। इसे जुलाई 2022 में लॉन्च किया गया था।
ओपन क्रेडिट इनेबलमेंट नेटवर्क (OCEN)	• इसे ऋण देने और ऋण लेने के तरीके में एक प्रमुख बदलाव के रूप में सराहा जा रहा है। यह छोटे ऋणदाताओं को सर्वोत्तम शर्तों के साथ उपलब्ध ऋण का लाभ उठाने में सक्षम बनाता है।
एकीकृत भुगतान इंटरफेस (UPI), 2016	• यह एक ऐसी प्रणाली है जो कई बैंक खातों को एक ही मोबाइल एप्लिकेशन में जोड़ती है। यह एकीकृत रूप से कई बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराती है, जैसे- निर्बाध फंड ट्रांसफर और मर्चेंट पेमेंट्स। • 2019-22 के बीच UPI-आधारित लेन-देन के मूल्य में 121% और मात्रा में 115% की वृद्धि हुई है। इस कारण इसे अंतर्राष्ट्रीय रूप से भी अपनाए जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।
मिशन 'ड्रोन शक्ति'	• इसके तहत ड्रोन स्टार्ट-अप और ड्रोन-एज़-ए-सर्विस (DrAAS) को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही, ड्रोन और ड्रोन आयात नीति के लिए प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव (PLI) योजना भी शुरू की गई है। • DrAAS एक ऐसी अवधारणा है जिसकी तुलना सॉफ्टवेयर-एज़-ए-सर्विस (SaaS) से की जा सकती है। यह सरकारी विभागों की ड्रोन खरीदने की आवश्यकता को समाप्त करने में मदद करेगी। इसके बजाय विभाग ड्रोन किराए पर ले सकते हैं। इससे वे एसेट-लाइट (Asset-Light) बन सकते हैं और बाजार में उपलब्ध सर्वोत्तम क्षमता एवं नवीनतम तकनीक का लाभ उठा सकते हैं।गौरतलब है कि एसेट-लाइट बिज़नेस मॉडल वह मॉडल है जिसमें कंपनी का ध्यान परिसंपत्तियों में होने वाले निवेश को न्यूनतम रखने पर होता है। उदाहरणार्थ-ऊबर (Uber)।
एकाउंट एग्रीगेटर (AA)	• यह एक वैश्विक तकनीकी-सह-कानूनी ढांचा है जो व्यक्तियों को उनकी सहमति से उनकी पसंद के किसी भी विनियमित तृतीय-पक्ष वित्तीय संस्थान के साथ अपने वित्तीय डेटा को शीघ्र और सुरक्षित रूप से साझा करने में सक्षम बनाता है। • AA ढांचा वर्तमान में 110 करोड़ से अधिक बैंक खातों में कार्यरत है।

अध्याय - एक नज़र में

- सरकारी पहलों के कारण समय के साथ-साथ भौतिक और डिजिटल अवसंरचना दोनों में सुधार हुआ है।
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP), राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP) आदि भौतिक अवसंरचना, जैसे- सड़क, रेलवे आदि के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहलें हैं।
- इंटरनेट कनेक्शन और टेली डेंसिटी में भी सुधार हुआ है।

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

बजट में क्या कहा गया है?

- अवसंरचना के लिए बजट आवंटन **सकल घरेलू उत्पाद का 3.3% अर्थात् 10 लाख करोड़ रुपये है।**
- **रेलवे को 2.4 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं,** जो 2013–14 के बाद से अब तक का सबसे अधिक आवंटन है।
- लॉजिस्टिक दक्षता को बढ़ावा देने के लिए **100 महत्वपूर्ण परिवहन अवसंरचना परियोजनाओं की घोषणा** की गई है।
- सहायक नीतियों को अपनाने और अवसंरचना में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए **राज्य सरकारों को 50 वर्षीय ब्याज मुक्त ऋण को एक और वर्ष के लिए बढ़ाया गया है**

अध्याय 12

प्रश्नोत्तरी: अपने याद रखने के कौशल और समझने के कौशल का परीक्षण कीजिए

1. इन्वेस्ट इंडिया ब्रिड के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भारत की अवसंरचनात्मक परियोजनाओं में अनिवासी भारतीयों द्वारा वित्त-पोषण की सुविधा के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है।
2. इसका संचालन नीति आयोग द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

2. लॉजिस्टिक्स ईज अक्रॉस डिफरेंट स्टेट्स (LEADS) इंडेक्स के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स के तहत कार्यप्रणाली पर आधारित है।
2. इसे विश्व बैंक द्वारा जारी किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

3. राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन के निम्नलिखित क्षेत्रकों में से किनसे संबंधित परियोजनाओं को गतिशक्ति फ्रेमवर्क के साथ संरेखित किया जाएगा?

1. सड़क
2. रेलवे
3. सार्वजनिक परिवहन
4. जलमार्ग
5. लॉजिस्टिक अवसंरचना

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3, 4 और 5
(c) केवल 5
(d) 1, 2, 3, 4 और 5

4. ऊर्जा के निम्नलिखित स्रोतों को भारत में कुल ऊर्जा उत्पादन में उनकी हिस्सेदारी के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए।

1. तापीय ऊर्जा
2. नवीकरणीय ऊर्जा
3. पनबिजली ऊर्जा

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW | CHANDIGARH | GUWAHATI | RANCHI | ALLAHABAD | BHOPAL 8468022022, 9019066066

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 2-3-1
(b) 1-2-3
(c) 2-1-3
(d) 1-3-2

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. विश्व का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क भारत में है।
2. मात्रा के हिसाब से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कार्गो का केवल 20 प्रतिशत हिस्सा ही बंदरगाहों के माध्यम से संचालित होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

स्व-मूल्यांकन: उत्तर लेखन कौशल के लिए अभ्यास प्रश्न

Q1. अवसंरचना और विकास के बीच संबंध को देखते हुए, सरकार ने हाल के दिनों में भौतिक, डिजिटल और विनियामक बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में सुधारों पर ध्यान केंद्रित किया है। भारत के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

Q2. भारतीय अर्थव्यवस्था में लॉजिस्टिक्स क्षेत्रक में सुधार के कई प्रयासों के बावजूद, यह चुनौतियों से रहित नहीं है। इस संदर्भ में, भारत में लॉजिस्टिक क्षेत्रक में मौजूद कमियों को दूर करने में 'राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति, 2022' की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

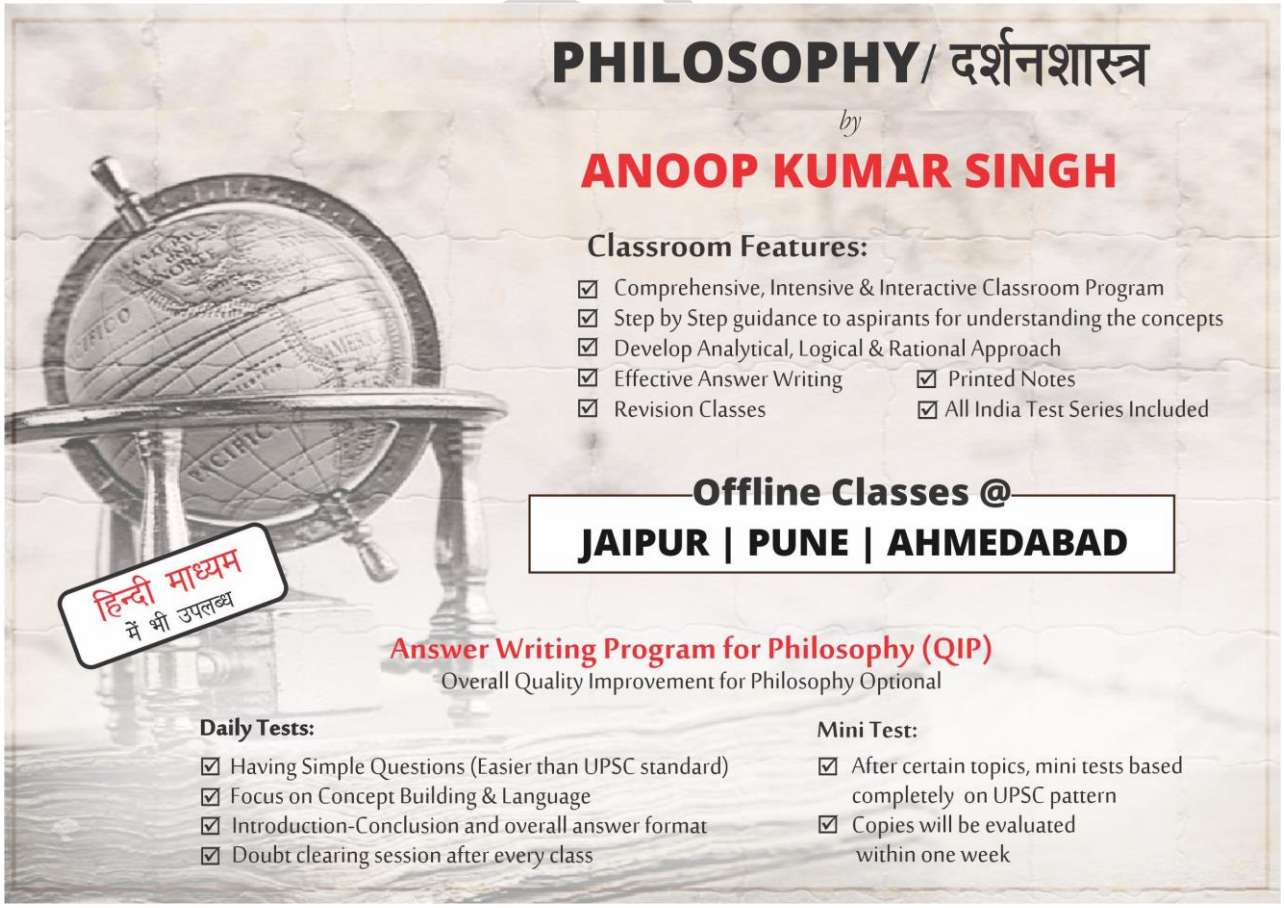

उत्तर

अध्याय 1

1	2	3	4	5
C	D	A	B	D

अध्याय 2

1	2	3	4	5
C	C	D	D	B

अध्याय 3

1	2	3	4	5
D	C	D	C	D

अध्याय 4

1	2	3	4	5
D	A	B	C	B

अध्याय 5

1	2	3	4	5
C	D	D	A	B

अध्याय 6

1	2	3	4	5
D	C	A	B	B

अध्याय 7

1	2	3	4	5
B	A	B	A	B

अध्याय 8

1	2	3	4	5
A	D	A	D	D

अध्याय 9

1	2	3	4	5
C	B	B	C	B

अध्याय 10

1	2	3	4	5
A	B	C	A	B

अध्याय 11

1	2	3	4	5	6
C	D	A	A	A	D

अध्याय 12

1	2	3	4	5
D	A	D	B	D

Copyright © by Vision IAS
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

8 IN TOP 10 SELECTIONS IN CSE 2021

FROM VARIOUS PROGRAMS OF VISION IAS

CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

1 AIR

SHUBHAM KUMAR

2 AIR

ANKITA AGARWAL

3 AIR

GAMINI SINGLA

4 AIR

AISHWARYA VERMA

5 AIR

UTKARSH DWIVEDI

6 AIR

YAKSH CHAUDHARY

7 AIR

SAMYAK S JAIN

8 AIR

ISHITA RATHI

9 AIR

PREETAM KUMAR

YOU CAN BE NEXT

DELHI

HEAD OFFICE Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate 6, Karol Bagh Metro Station

+91 8468022022, +91 9019066066

Mukherjee Nagar Centre

635, Opp. Signature View Apartments, Banda Bahadur Marg, Mukherjee Nagar

JAIPUR HYDERABAD BHOPAL GUWAHATI RANCHI LUCKNOW PUNE AHMEDABAD CHANDIGARH PRAYAGRAJ

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC